CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

10.3

जंबू - सामि - चरिउ

4877

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री गणेश वर्णी दि० जैन (शोध) संस्थान ग्रन्थालय
के लिये सादर भेंट. राजाराम जैन
चकिया

प्रो० डॉ० राजाराम जैन को।
सविनय, सादर, सप्रेम भेंट

डॉ. त्रिलोकचंद कोठारी
मुख्य ट्रस्टीः ओम कोठारी फाउण्डेशन

4877

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अन्तिम-केवली-जम्बू-स्वामी के 2500वें परिनिर्वाण-समारोह के शुभावसर पर,
सिद्धान्तचक्रवर्ती आचार्यश्री विद्यानन्द जी मुनिराज की सम्प्रेरणा से सम्पादित एवं प्रकाशित–

महाकवि रइधू कृत–

# जंबू-सामि-चरिउ

## (जम्बू-स्वामी-चरित)

(तिसट्ठि-महापुराण-पुरिस-आयार-गुणालंकारु–अद्यावधि अप्रकाशित एकमात्र
उपलब्ध दुर्लभ अपभ्रंश पाण्डुलिपि से सर्वप्रथम संकलित, सम्पादित एवं अनुदित)

सम्पादन एवं अनुवाद

प्रो. (डॉ.) राजाराम जैन, डी. लिट्.

*(राष्ट्रपति सम्मान-पुरस्कार (2000 ई.) द्वारा सम्मानित)*

4877

*प्रकाशक–*

**ओम कोठारी फाउण्डेशन**

कोठारी भवन, बी-79, W-3/3, वैस्टर्न एवेन्यू,
सैनिक फार्म, खानपुर, नई दिल्ली-110 062

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सम्प्रेरणा : सिद्धान्तचक्रवर्ती परमपूज्य आचार्यश्री विद्यानन्द जी मुनिराज

प्रकाशक : ओम कोठारी फाउण्डेशन
कोठारी भवन, W-3/3, वैस्टर्न एवेन्यू,
सैनिक फार्म, खानपुर, नई दिल्ली-110 062

विषय : महापुरुष का जीवन चरित

आवृत्तिः प्रथम संस्करण, फरवरी 2008

मूल्य : दो सौ रुपया

प्राप्ति-स्थान : कुन्दकुन्द भारती
18-बी, स्पेशल इंस्टीट्यूशनल एरिया,
नई दिल्ली-110067
दूरभाष : 26564510

ओम कोठारी फाउण्डेशन
कोठारी भवन, B-79, W-3/3, वैस्टर्न एवेन्यू,
सैनिक फार्म, खानपुर, नई दिल्ली-110 062

मुद्रक : पृथा ऑफसैट प्रा. लि.,
B62/11, नारायणा इण्डस्ट्रियल एरिया, फेस-II
नई दिल्ली-110028

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

With the blessings and kind inspiration of Siddhant Chakravarty Acharya Shri Vidyanand Ji Mujiraj
Published on the auspicious occasion of 2500th Parinirvan Smrity Samaroha of the last kevalin Sri Jambu Swami—

great Poet RAIDHU's

# JAMBU-SAMI-CARIU

## [JAMBU-SWAMI-CARITA]

**[Adopted from-Hitherto unpublished the only old rare paper ms-TISATTHI-MAHAPURANA-PURISAYARA-GUNALAMKARU, edited, translated and published for the first time with introduction, word-index etc.]**

---

*Edited and Translated*

*by*

**Prof. (Dr.) RAJA RAM JAIN,** D. Lit.

*(Receipient of President's certificate of Honour, 2000A.D.)*

*Published by*

**Om Kothari Foundation**

Kothari Bhawan, B-79, W-3/3, Western Avenue,
Sainik Farm, Khanpur, New Delhi-110 062

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

# समर्पण

– जिनका एकमात्र लक्ष्य है– जिन-शासन की अभिवृद्धि,

– श्रमण-संस्कृति के स्मारक-स्वरूप प्राचीन जैन तीर्थों की सुरक्षा एवं विकास हेतु सत्प्रेरणा,

– सर्वोदय की प्रतीक – जिनवाणी के स्वाध्याय में रत तथा उसके प्रचार-प्रसार के लिये अहर्निश प्रयत्नशील,

– युग-प्रधान आचार्य कुन्दकुन्द के पदानुगामी तथा

– शीत एवं ग्रीष्म ऋतुओं की उग्रता में भी समवृत्ति के धारक, अपने गुरुतुल्य उन धन्य मुनि-दशा वाले

पूज्य एलाचार्यश्री श्रुतसागर जी मुनिराज

एवं

पूज्य उपाध्यायश्री निर्णयसागर जी महाराज की

पुनीत सेवा में–

प्रथम बार प्रकाशित– 'जंबू-सामि-चरिउ' की यह ऐतिहासिक कृति

सविनय, सादर समर्पित है।

विनम्र

**राजाराम जैन**

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अन्तिम केवली भगवान जम्बू स्वामी, चौरासी, मथुरा
(प्रतिष्ठा-28 फरवरी 2008)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

# आद्य मिताक्षर

जम्बू-स्वामी का व्यक्तित्व उस भारतीय स्वस्तिक के सदृश है, जिसके शीर्ष पर चन्द्रबिन्दु सुशोभित है। स्वस्तिक की चारों भुजाएँ, जहाँ चतुर्गति की प्रतीक हैं, वहीं शीर्षस्थ चन्द्रबिन्दु परम लक्ष्य प्राप्ति–मोक्ष का प्रतीक। मानव अपने-अपने कर्मानुसार गति प्राप्त कर भव-भ्रमण के दुःख-भोग भी करता रह सकता है अथवा तपश्चर्या के माध्यम से आत्मगुणों को जागृत कर स्वस्तिक के शीर्षस्थ चन्द्रबिन्दु के समान परम पद-निर्वाण को भी प्राप्त कर सकता है।

जम्बू स्वामी के जीवन में उक्त समस्त परिस्थितियों की झाँकी दृष्टिगोचर होती है। उनके जीवन के प्रथम चरण में उनका मानवोपयोगी कला-विज्ञान, शास्त्र एवं शस्त्रास्त्र-विद्या में नैपुण्य, शौर्य-वीर्य पराक्रम, अन्याय पर न्याय की विजय हेतु शत्रु-सैन्य संहार, वैराग्योन्मुखी होने पर भी माता-पिता की प्रसन्नता के लिये विवाह और उसके तत्काल बाद भगवान् महावीर के पाँचवें गणधर — सुधर्मा स्वामी से मुनि-दीक्षा ग्रहण कर कठोर तपश्चर्या और निर्वाण पद-प्राप्ति।

प्राच्य भारतीय भाषाओं पर असाधारण अधिकार रखने वाले भक्त कवि रइधू की सन्धिकालीन अपभ्रंश में लिखित प्रस्तुत रचना— **"जंबू-सामि-चरिउ"** जम्बू-स्वामी के बहुआयामी चरित्र के प्रति उनकी एक भक्ति-भरित विनयांजलि है, जो जम्बू-स्वामी के समग्र चरित्र को तो प्रकाशित करती ही है, साथ ही वह अपनी भाषा-शैली एवं लोकोपयोगी विविध तथ्यों का उद्घाटन कर शोधार्थियों के लिये शोधानुकूल विचारोत्तेजक सामग्री भी प्रदान करती है। संस्कृत हस्तप्रतियों का खोजपूर्ण प्रस्तुतीकरण प्रो. ए.एन. उपाध्ये तथा प्रो. हीरालाल जी जैन के बाद इस कृति में परिलक्षित होता है।

जम्बू-स्वामी का चरित ऐसे विविध कथा-कथान्तरों से जटित है, जिनमें आत्म-जागरण के नैतिक-सन्देश निहित हैं। यही नहीं, ऐसे ही अन्य मौलिक जैन कथाओं के भण्डार से आश्चर्यचकित होकर पाश्चात्य समीक्षकों – डॉ. जॉन हर्टेल, डॉ. मोनिरस विंटरनिट्ज आदि ने उसकी मुक्तकण्ठ से प्रशंसा करते हुए विश्वकथा-साहित्य पर उसके प्रभाव को सिद्ध किया है। पद्मविभषूण पं. बलदेव उपाध्याय जी ने 'संस्कृत साहित्य का इतिहास' में तो यहाँ तक लिखा है कि– "कहानी लिखने में जैनियों को शायद ही कोई पराजित कर सके। उनके यहाँ इसका एक विशाल भव्य साहित्य है। पंचतंत्र स्वयं विस्मयावह कहानियों का एक सामान्य संग्रहमात्र न होकर साहित्य की दृष्टि से एक नितान्त उपादेय ग्रंथ है, जिसका प्रभाव भारत के ही कथा-साहित्य के ऊपर न पड़कर पश्चिमी जगत् के साहित्य पर विशेष रूप से पड़ा है।"

चूँकि जम्बूस्वामी का घना सम्बन्ध मथुरा के साथ रहा है। अतः चौरासी मथुरा में फरवरी 2008 में आयोजित होने जा रहे जम्बू स्वामी के 2500वें परिनिर्वाण समारोह के मांगलिक अवसर पर प्रस्तुत अप्रकाशित हस्तलिपि का प्रकाशन एक रचनात्मक सत्कार्य है, जिसका श्रेय उसके उदार हृदय प्रकाशक डॉ. त्रिलोकचन्द्र कोठारी की जिनवाणी के प्रति भक्ति को मिलने जा रहा है। इस प्रकार के कार्यों में आगे भी उनकी प्रवृत्ति बनी रहे।

प्रो. राजाराम जैन अपने अन्वेषण एवं उच्चस्तरीय संशोधन कार्यों में पिछले लगभग पाँच दशकों से संलग्न हैं। उन्होंने जिस प्रकार भगवान महावीर के 2500वें निर्वाण समारोह में सक्रिय सहयोग किया था, प्रस्तुत कृति के माध्यम से जम्बू स्वामी के 2500वें निर्वाण समारोह में भी उनका सारस्वत-सहयोग सराहनीय है। हमारा उनके लिये मंगल आशीर्वाद है कि उनकी यह साधना आगे भी इसी प्रकार चलती रहे।

**—आचार्य विद्यानन्द मुनि**



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

# प्रकाशकीय

चरम केवली जम्बूस्वामी का जीवन-चरित मानव-जीवन के लिये एक ऐसा प्रकाश स्तम्भ है, जिसमें वह अपने जीवन की अच्छाइयों एवं बुराइयों को भली-भाँति देख-परख सकता है और वह उसे एक ऐसे निर्णायक मोड़ पर ला खड़ा करता है, जहाँ से चल कर वह अपने जीवन के लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। प्रस्तुत ग्रन्थ का यही हार्द है।

प्रस्तुत ग्रन्थ के लेखक महाकवि रइधू अपभ्रंश के महाकवि हैं, साथ ही, वे जन-जन के लोकप्रिय कवि भी रहे हैं। उनकी संगीतात्मक दशलक्षण एवं सोलहकारण जयमालाओं ने शताब्दियों से देश-विदेश की श्रमण-समाज को एक सूत्र में पिरोए रखा है। अपने बहुआयामी विशाल साहित्य के प्रणयन से उन्होंने त्रस्त मानवता को त्राण देने का प्रयत्न किया है। प्रस्तुत जम्बू स्वामी-चरित भी उसी का एक प्रभावक अंग है।

कथानायक जम्बूस्वामी ने गृहस्थावस्था में करणीय कार्य करके जहाँ एक अनुकरणीय आदर्श उपस्थित किया, वहीं उन्होने विपुल समृद्धि एवं अगणित सुख-भोगों का त्रियोग पूर्वक त्याग कर कठोर तपस्या की और अपनी साधना के बल पर उन्होंने शाश्वत-पद प्राप्त कर वे सभी के आराध्य देवता भी बन गये। ऐसा महनीय चरित किसे प्रभावित नहीं करेगा?

यह संयोग की ही बात है कि परमपूज्य आचार्यश्री विद्यानन्द जी मुनिराज की प्रेरणा एवं उनके ही मार्गदर्शन में आयोजित फरवरी 2008 में अन्तिम केवली जम्बूस्वामी के 2500वें परिनिर्वाण समारोह के अवसर पर जम्बूस्वामी के जीवन चरित से सम्बन्धित किसी अप्रकाशित दुर्लभ पाण्डुलिपि का प्रकाशन हो। क्योंकि आचार्यश्री की दीर्घकालीन साधना और अनुभवों के निष्कर्ष स्वरूप अप्रकाशित पाण्डुलिपि का प्रकाशन ही उक्त आयोजन का स्थायी स्मारक का स्वरूप धारण कर सकता है। प्रस्तुत कृति का यही महत्त्व है। अतः उनकी प्रेरणा तथा उसे साकार करते हुए मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है और मुझे विश्वास है कि उनकी कृपा से आगे भी यह रचनात्मक परम्परा जारी रहेगी।

उक्त ग्रन्थ अद्यावधि अप्रकाशित था। चूँकि उसका सम्पादन-प्रकाशन जम्बूस्वामी के 2500वें परिनिर्वाण महोत्सव के पावन अवसर पर हो रहा है, अतः पूर्ण विश्वास है कि उक्त समारोह की शानदार सफलता में प्रस्तुत ग्रन्थ भी सक्रिय सहभागी बनकर जम्बूस्वामी के आदर्श अट्टालिकाओं से लेकर झोपड़ों-झुग्गियों तक को भी रोशन करेंगे। पाण्डुलिपि का सम्पादन सचमुच ही बड़ा जटिल एवं दुरूह कार्य है। फिर भी प्रो. (डॉ.) राजाराम जी जैन ने अल्प समय में भी अधुनातम पद्धति से उसे सम्पन्न कर दिया। यह केवल डॉ. जैन जैसे अनुभवी श्रुताराधक के लिये ही सम्भव था। जीर्ण-शीर्ण पाण्डुलिपि के उद्धार एवं जैन-विद्या के विकाश में समर्पित भाव से सक्रिय योगदान के लिये प्रोफेसर साहब के प्रति जितना भी आभार प्रदर्शित किया जाय, कम ही होगा। उनके प्रति अनन्त मंगल-कामनाएँ।

श्री भाई सतीश जी (आकाशवाणी) तो हमारे इतने अपने हैं कि उन्हें धन्यवाद देना तो स्वयं मुझे अपने को ही धन्यवाद देना है। वस्तुतः प्रस्तुत ग्रन्थ की प्रेस कॉपी को नयनाभिराम बनवाकर उसके मुद्रण की व्यवस्था के लिये उन्होंने अथक परिश्रम किया है। उनके इस सत्श्रम की मैं हार्दिक प्रशंसा करता हूँ।

पृथा ऑफसैट प्रेस के संचालकों ने अल्पावधि में ही इस ग्रन्थ का मनोनुकूल सुन्दर मुद्रण किया है। अतः उनकी जम्बूस्वामी के प्रति भक्ति सराहनीय है।

**डॉ. त्रिलोकचन्द कोठारी**
अध्यक्ष
अन्तिम केवली भगवान श्री जम्बूस्वामी 2500वाँ निर्वाण
महोत्सव समिति
एवं
त्रिलोक उच्चस्तरीय अध्ययन अनुसंधान संस्थान

01.02.2008

B-79/W-3, सैनिक फार्म,
नई दिल्ली-110062



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

# प्रस्तावना

## पृष्ठभूमि–

जंबू-सामि-चरिउ (जम्बू-स्वामी-चरित) प्रथमानुयोग-साहित्य का एक ऐसा भक्ति-भरित सरस चरित-काव्य है, जिसमें नायक-नायिकाओं के प्रासंगिक रोचक कथा-कथान्तरों के तान-वितान के माध्यम से परिवार, समाज एवं राष्ट्र के ज्ञान-विज्ञान एवं मनोविज्ञान तथा उनके नैतिक आदर्शों के उद्घाटन का प्रयत्न किया गया है, साथ ही, समकालीन संस्कृति, राजनीति, अर्थनीति तथा भूगोल आदि के सूत्र भी अपभ्रंश-भाषा में रेखांकित किये गये हैं, जो उसके प्रणेता महाकवि रइधू की बहुज्ञता को द्योतित करते हैं।

प्राकृत, अपभ्रंश एवं हिन्दी में विविध विषयक लगभग 23 से भी अधिक रचनाओं के प्रणेता उक्त महाकवि रइधू का काल सन् 1414-1479 ई. के लगभग निर्धारित किया गया है। हिन्दी-साहित्य के इतिहासकारों के अनुसार यही काल हिन्दी-भाषा का विकास-काल भी माना गया है। इस दृष्टि से हिन्दी-भाषा एवं उसके भक्ति-साहित्य पर रइधू-साहित्य के प्रभाव की खोज के लिये पर्याप्त सामग्री प्रस्तुत करने में वह सहायक सिद्ध हो सकता है।

उक्त जं.सा.च. ग्रन्थ की भाषा उत्तर मध्यकालीन अथवा डॉ. ए.एन. उपाध्ये के अनुसार सन्धिकालीन-अपभ्रंश है। अतः भाषा-वैज्ञानिकों के अनुसन्धानों के अनुसार उससे विकसित हिन्दी तथा अन्य आधुनिक भारतीय भाषाओं के भाषा-वैज्ञानिक अध्ययन की दृष्टि से भी वह एक महत्त्वपूर्ण रचना है।

## विशेषताएँ–

प्रस्तुत रचना की प्रश्नोत्तरी-शैली की कथाओं का ताना-बाना देखकर ऐसा भी प्रतीत होता है क जैसे जंबू-सामि-चरिउ के माध्यम से जिज्ञासुओं के लिए कवि ने समाज एवं परिवार की विभिन्न विचार धाराओं का परिज्ञान कराने की दृष्टि से श्रावक-कवि निर्मलदास (सन् 1697 ई. के पूर्ववर्ती) कृत भाषा-पंचाख्यान ("प्राकृत पंचक्खाण" का रूपान्तर, जिसे कि डॉ. जॉन हर्टेल ने संस्कृत-पंचतन्त्र का पूर्ववर्त्ती ग्रन्थ घेषित किया था) के समान मानों एक नये जैन-पंचतंत्र की ही रचना कर दी हो।

उक्त रचना की एक अन्य विशेषता यह है कि इसमें पूर्व प्रचलित रूढ़िबद्ध परम्परा से हटकर इसके नायक एवं नायिकाओं को वणिक्-श्रेणी से लिया गया है। ऋग्वेद-कालीन पणियों अर्थात् बनियों या वणिकों (व्यापारियों या सार्थवाहों) का वैदेशिक व्यापार तथा आयात (Import)- निर्यात (Export) के माध्यम से राष्ट्र को युगों-युगों से समृद्ध बनाने में कितना महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है, यह किसी से छिपा नहीं है। अतः कवि ने भी परम्परा-प्राप्त उसी जाति को अपनी उक्त रचना के माध्यम से सम्मानित कर अपनी सुधारवादी एवं क्रान्तिकारी भावना का परिचय दिया है, इसमें सन्देह नहीं। आज की दृष्टि से इस जाति को पिछड़े-वर्ग में कब और कैसे रख दिया गया, यह पता नहीं चलता। फिर भी, कवि ने इस वर्ग के नायक एवं नायिकाओं का निर्वाचन कर उस जाति के प्रति भी निर्भीकता पूर्वक अपना सम्मान व्यक्त किया है, जो ऐतिहासिक है।

## काव्य-नायक जम्बू एवं उनके चरित्र का वैविध्य–

उक्त जंबू-सामि-चरिउ के महानायक वणिक्-श्रेष्ठी-पुत्र जम्बूस्वामी का व्यक्तित्व देहली-दीपक-न्याय से बड़ा ही रोचक किन्तु विरोधाभाषी है क्योंकि एक ओर तो वे भगवान महावीर की साक्षात् गणधर-परम्परा के पाँचवें गणधर (दे. 19/14) आचार्य सुधर्म के साक्षात् शिष्य रहे, तो दूसरी ओर दीक्षा-पूर्व के जीवन में अपने माता-पिता के आज्ञाकारी पुत्र होने के कारण वैराग्योन्मुखी होते हुए भी उनकी आज्ञा से उन्हें राजगृही के सुप्रसिद्ध चार वणिक्- श्रेष्ठों की चार



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुन्दरी कन्याओं के साथ वैवाहिक-सूत्र में बँध जाना पड़ा और उन परिणीता नवोढ़ा सुन्दरी पत्नियों के मोहक-जाल के घेरे में आ जाना पड़ा।

उन पत्नियों ने उन्हें सांसारिक बन्धनों में ही सुखानुभूति कराने के अनेक प्रयत्न कर दीक्षा-ग्रहण करने सम्बन्धी संकल्प को विस्मृत कराने के अथक प्रयत्न किये किन्तु कुमार जम्बू के चरित्र की यह एक असाधारण विशेषता रही कि वे अपनी विवेक-बुद्धि से "जल में भिन्न कमल है" की उक्ति को ही चरितार्थ करते रहे। ऐसा विस्मयकारी जीवन रहा उनका। साधनविहीन परिस्थितियों में दीक्षा लेना और अतुलनीय वैभव-सम्पदा तथा मनचाहे समृद्ध सुख- भोगों की सहज उपलब्धता को भी त्रियोग पूर्वक त्याग करके दीक्षा ले लेने में जो अन्तर होता है, उसे जम्बू-स्वामी के जीवन-चरित से स्पष्ट समझा जा सकता है।

## "जंबू-सामी-चरिउ" नामकरण एवं लोकप्रियता–

जंबू-सामी-चरिउ के अनुसार जम्बू-स्वामी की माता ने जम्बू-स्वामी के जन्म के पूर्व जिन स्वप्नों को देखा था, उनमें से एक स्वप्न में जम्बू अर्थात् जामुन के फलों से लदा हुआ एक जम्बू (जामुन) का वृक्ष भी था।

अतः उस शुभकारी वृक्ष के नाम पर नवोत्पन्न शिशु का नामकरण भी "जम्बू" किया गया। यह भी यथार्थ है कि वह वृक्ष अत्यन्त शकुनकारी होने के साथ-साथ उसका फल अनेक औषधीय गुणों से समन्वित होता है। "मधुमेह' (Diabities) की तो वह प्रभावकारी औषधि ही मानी गई है, साथ ही उसे पाचन-शक्तिवर्धक, बुद्धिवर्धक, हृदयरोग-शामक, रक्तशोधक, रक्तवर्धक आदि की दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण माना गया है। यही कारण है कि इस वृक्ष एवं उसके उत्पादक-तत्त्वों के नाम पर हमारे देश में नर-नारियों, नगरों, नदियों, द्वीपों, सैद्धान्तिक ग्रन्थों आदि के नामकरण युगों-युगों से किये जाते रहे हैं। ऐसे कुछ नामों में जम्बू-स्वामी, जम्बूद्वीप, जम्बूप्रसाद, जम्मू (काश्मीर), जम्मूसर (गुजरात), जामनेर (मध्यप्रदेश) नदी, जामतारा (झारखण्ड), जमुई (बिहार), जामनगर (गुजरात) आदि उसी प्रकार उसकी पवित्र स्मृति के सूचक हैं, जिस प्रकार वाराणसी (वरुणा नदी+अस्सी गंगा घाट), कारीसाथ (रामायणकालीन करुष–देश), बक्सर (महाभारत कालीन बकासुर), जबलपुर (जाबालि-ऋषि का नगर), आरा (आरामनगर- महाभारतकालीन आरामों अर्थात् वाटिकाओं का नगर), पंजाब (पाँच नदियों का प्रदेश) आदि-आदि। भाषा-विज्ञान के मुख-सौकर्य के नियमानुसार उनके नामोच्चारणों में कुछ परिवर्तन भले ही हो गये हैं, (जैसे— वाराणसी का नाम बनारस, गिरिनगर का गिरनार, पुण्यपत्तन का पूना या पुणें, अजयमेरु का अजमेर, बीकानगर का बीकानेर आदि) फिर भी, भले ही उनका इतिहास भी प्रच्छन्न हो गया हो तो भी वह सर्वथा लुप्त नहीं होता और किसी व्यक्ति-विशेष के असाधारण वैशिष्ट्य के कारण उनकी स्मृति को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए विशिष्ट व्यक्तियों, नदियों, नगरों के नामकरण उनके नाम के आधार पर कर दिये जाते हैं। जम्बू स्वामी के नाम की भी वही स्थिति रही। भौगोलिक शोध की दृष्टि से यह विषय वस्तुतः अभी तक उपेक्षित रहा है।

अतः नाम-साम्य के आधार पर व्यक्तिवाची संज्ञाओं का भौगोलिक अध्ययन कर यदि उनके इतिहास की खोज की जाय तो इससे बड़े ही ऐतिहासिक रोचक तथ्य उभर कर सम्मुख आ सकेंगे।

## जम्बू-स्वामी से सम्बन्धित साहित्य–

जम्बू स्वामी से सम्बन्धित लिखित साहित्य का अभी तक सन्तोष-जनक सर्वेक्षण नहीं हो सका है। अद्यावधि जो कुछ भी हुआ है, वह सीमित है। उनके अतिरिक्त भी देश-विदेश में अभी ऐसी सुरक्षित या असुरक्षित सहस्रों पाण्डुलिपियाँ हैं, जिनका सूचीकरण भी नहीं हुआ है। उनमें भी जम्बू स्वामी से सम्बन्धित अनेक रचनाओं के होने की सम्भावना है। अभी तक विविध स्रोतों से मुझे जो जानकारी मिल सकी है, उसके आधार पर दिगम्बर एवं श्वेताम्बर



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परम्परा के विविध भाषाओं एवं शैलियों में लिखित कुछ प्रमुख ग्रन्थ निम्न प्रकार हैं–

(1) यतिवृषभ—तिलोयपण्णत्ती (प्राकृत), दूसरी सदी के आसपास
(2) अंतगडदसाओ (में बीजांकुर के रूप में उपलब्ध) (प्राकृत)
(3) महाकवि संघदास गणी—वसुदेव-हिण्डी के अन्तर्गत प्रथम कथोत्पत्ति के रूप में वर्णित जंबूसामिचरियं (प्राकृत) चौथी सदी
(4) गुणभद्र—उत्तरपुराणान्तर्गत जंबूचरित (संस्कृत) 9वीं सदी
(5) मुनि-गुणपाल—16 उद्देश्यों में लिखित जंबूचरियं (प्राकृत) 9वीं सदी के लगभग
(6) महाकवि वीर—जंबूसामिचरिउ (अपभ्रंश), 11वीं सदी
(7) प्रभदेव—धम्मविहि-पयरण के अन्तर्गत जंबूचरियं (प्राकृत), 12वीं सदी
(8) जिनभद्र—जम्बूस्वामी सत्कवस्तु (21 वस्तु छन्दों में लिखित), 13वीं सदी
(9) धर्मसूरि—(महेन्द्र सूरि के शिष्य), जम्बू-स्वामी-रासा (डिंगल), 13वीं सदी
(10) जिनप्रभसूरि—विविध-तीर्थ-कल्प के अन्तर्गत जंबू स्वामी चरित (संस्कृत), 14वीं सदी
(11) ब्रह्मचारी जिनदास—जम्बू-स्वामी-चरित्र (हिन्दी), 15वीं सदी
(12) भ. सकलकीर्त्ति—जम्बू-स्वामी-चरित्र (संस्कृत), 15वीं सदी
(13) महाकवि रइधू—जंबू-सामी-चरिउ (अपभ्रंश), 15वीं सदी
(14) पद्मसुन्दर मुनि—(सम्राट अकबर कालीन)-जंबू-चरित-(संस्कृत), 17वीं सदी
(15) कवि राजमल्ल, जम्बू-स्वामी-चरित (संस्कृत), 17वीं सदी
(16) पांडे जिनदास, जम्बू-चरित्र (हिन्दी), 17वीं सदी
(17) जिन विजय (विजयदया सूरीश्वर के शिष्य)-जंबू-सामि-चरित्त (गुजराती-हिन्दी), 18वीं-19वीं सदी
(18) नथमल बिल्लाला, जम्बू-स्वामी-चरित्र (हिन्दी), वि.सं. 1835 के लगभग
(19) पन्नालाल चौधरी, जम्बू-स्वामी-चरित्र (वचनिका गद्यानुवाद) हिन्दी, वि.सं. 1905
(20) कवि प्रागदास, जम्बू-स्वामी की पूजा (पंचायती जैन मन्दिर, दिल्ली में सुरक्षित पाण्डुलिपि) (हिन्दी), 20वीं सदी का प्रारम्भ।

## ग्रन्थ-स्त्रोत, परिचय, उसकी भाषा एवं वैशिष्ट्य–

जंबू-सामि-चरिउ महाकवि रइधू कृत बृहत्काय– "तिसट्ठि-महापुराण-पुरिस-आयार-गुणालंकारु" नामक ग्रन्थ के उत्तरार्ध का एक अंश है। 50 सन्धि एवं लगभग 1357 कडवक प्रमाण उक्त ग्रन्थ की सन्धि संख्या 47—50 में उक्त जम्बू स्वामी चरित वर्णित है। उसमें से कुछ अवान्तर कथाओं एवं प्रसंगों को छोड़कर 59 कडवक प्रमाण इस रचना का प्रथम बार संकलन, सम्पादन, अनुवाद एवं संक्षिप्त समीक्षा के साथ उसका प्रकाशन किया जा रहा है। यह रचना उत्तर-मध्य-कालीन अपभ्रंश-भाषा में लिखित है। जैसा कि पूर्व में कहा जा चुका है, प्रो. डॉ. ए.एन. उपाध्ये ने उसे सन्धिकालीन-अपभ्रंश कहा है अर्थात् एक ओर जहाँ यह प्राकृतों के अन्तिम-युग की भाषा है, वहीं वह आधुनिक हिन्दी का आदिकालीन रूप है।

## ग्रन्थकार महाकवि रइधू और उनका प्रतिभा-वैशिष्ट्य–

जैसा कि पूर्व में लिखा जा चुका है, महाकवि रइधू प्रतिभा-सम्पन्न बहुज्ञ थे। वैसा होना आवश्यक भी है क्योंकि कवि तब तक शाश्वत-कोटि का साहित्य प्रणयन नहीं कर सकता, जब तक वह इतिहास, संस्कृति, दर्शन, मनोविज्ञान,



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अध्यात्म एवं आचार-शास्त्र का मर्मज्ञ नहीं होगा, साथ ही लाक्षणिक सिद्धान्तों, समकालीन राजनीति, अर्थनीति, समाज-विज्ञान, लोकरूढ़ियो, लोकजीवन, समानान्तर भाषाओं या बोलियों का ज्ञाता नहीं होगा, तब तक वह श्रेण्य-कवियों में स्थान प्राप्त नहीं कर सकता। ऐसा नहीं है कि महाकवि रइधू के पूर्व पिछली सहस्राब्दी में या रइधू-काल में ही अन्य कवि नहीं हुए होंगे। अवश्य ही अनेक कवि भी हुए होंगे किन्तु कितने कवि इतिहास में स्थान प्राप्त कर सके? तात्पर्य यह कि जो कवि प्रतिभा-सम्पन्न बहुज्ञ होता है, दर्शन एवं धर्म के मर्म एवं लोकरुचि को समझता है, समय एवं समाज की आवश्यकताओं को समझकर ग्रन्थ-प्रणयन करता है, वही लोकप्रिय बनकर इतिहास में स्थान प्राप्त करता है। इस दृष्टि से महाकवि रइधू भी महाकवि स्वयम्भू, पुष्पदन्त, महाकवि वीर आदि के समान ही इतिहास-प्रसिद्ध कवि बन सके।

पुरातात्विक दृष्टि से, यदि गोपाचल (ग्वालियर) – दुर्ग की मूर्त्तिकला के वैशिष्ट्य एवं उसके इतिहास को जानना हो, गोपाचल-शाखा के तोमर-वंशी राजाओं की क्रमबद्ध नामावली एवं उस वंश के महाकवि रइधू के स्नेह पात्र बनें राजा डूँगरसिंह एवं उनके उत्तराधिकारी राजा कीर्त्तिसिंह के पराक्रम का परिचय एवं कला एवं साहित्य के विकास में उनके योगदान की जानकारी प्राप्त करना हो तथा पूर्ववर्त्ती एवं समकालीन दर्जनों भट्टारकों के जैन- विद्या के विकास में योगदान, पाण्डुलिपियों के प्रतिलिपि कार्य तथा त्रुटित अथवा जीर्ण-शीर्ण हस्त-प्रतियों के उद्धार, गोपाचल राज्य के सर्वांगीण विकास में जैनियों का योगदान, नारी-समाज की समकालीन स्थिति तथा चन्द्रवाड-पट्टन के चौहान-वंशी पराक्रमी राजाओं की जानकारी प्राप्त करना हो, चन्द्रवाडपट्टन के जैन-तीर्थ होने की महिमामयी जानकारी प्राप्त करना हो, तो रइधू-साहित्य और उसमें उपलब्ध विस्तृत प्रशस्तियों एवं पुष्पिकाओं का अध्ययन नितान्त आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य भी है क्योंकि भारतीय इतिहास के आधुनिक ग्रन्थ इस विषय में प्रायः मौन हैं।

महाकवि रइधू ने युग की माँग को देखते हुए चतुर्विध अनुयोगों पर साहित्य प्रणयन किया, जो विषय, भाषा एवं शैली आदि की दृष्टि से विशेष महत्त्वपूर्ण है और उसकी प्रशस्तियों एवं पुष्पिकाओं के माध्यम से समकालीन विविध पक्षीय इतिहास को सुरक्षित किया। इन सभी की विस्तृत जानकारी मैंने अपने शोध-ग्रन्थ "रइधू साहित्य का आलोचनात्मक परिशीलन" तथा "रइधू-ग्रन्थावली" की प्रस्तावनाओं में प्रस्तुत किया है। अतः विस्तार भय से यहाँ उसे प्रस्तुत नहीं किया जा रहा है।

## महाकवि रइधू एवं उनका बहुमुखी साहित्य–

रइधू-साहित्य का विस्तृत परिचय मैं अन्यत्र प्रकाशित करा चुका हूँ। अतः उसकी भी पुनरावृत्ति यहाँ आवश्यक नहीं किन्तु उनकी उपलब्ध रचनाओं के नामोल्लेख आवश्यक समझकर यहाँ प्रस्तुत कर रहा हूँ, जो निम्न प्रकार हैं–

| | चरित साहित्य | | सन्धियाँ | | कडवक सं. |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. | हरिवंसचरिउ अपरनाम रिट्ठणेमिचरिउ | — | -14 | — | 302 |
| 2. | बलहद्दचरिउ अपरनाम पउमचरिउ | — | -11 | — | 204 |
| 3. | मेहेसर-चरिउ-अपरनाम जयकुमार-सुलोचना चरित | — | -13 | — | 304 |
| 4. | जसहरचरिउ (सचित्र) | — | -4 | — | 104 |
| 5. | सम्मइजिणचरिउ (प्रकाशित) | — | -10 | — | 246 |
| 6. | तिसट्ठिमहापुराणपुरिसायारगुणालंकारु | — | -50 | — | 1357 |
| 7. | सिरिसिरिवालचरिउ | — | -10 | — | 202 |
| 8. | संतिणाहचरिउ (अपूर्ण, सचित्र) | — | -8 | — | 134 से अधिक |
| 9. | पासणाहचरिउ (प्रकाशित) | — | -7 | — | 137 |



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 10. | जिमंधरचरिउ | — | -13 | — | 301 |
| 11. | सुकोसलचरिउ (प्रकाशित) | — | -4 | — | 74 |
| 12. | धण्णकुमारचरिउ (प्रकाशित) | — | -4 | — | 74 |

**श्रावकाचार-साहित्य–**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 13. | सावयचरिउ | — | -6 | — | 125 |
| 14. | सम्मतगुणणिहाणकव्व | — | -4 | — | 104 |
| 15. | पुण्णासवकहा (प्रकाशित) | — | -13 | — | 250 |
| 16. | अप्पसंबोहकव्व | — | -03 | — | 58 |

**शौरसेनी-प्राकृत (गाथा-बद्ध) साहित्य–**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 17. | सिद्धंतत्थसारो | — | -13 अंक | — | 1850 गाथाएँ |
| 18. | वित्तसारो (अपरनाम चारित्रसार) (प्रकाशित) | — | -7 अंक | — | 850 गाथाएँ |
| 19. | अणथमिउ कहा (प्रकाशित) | — | - | — | 17 गाथाएँ |

**पूजा-जयमाला आदि**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 20. | दहलक्खणजयमाला (अपभ्रंश) | — | - | — | 11 कडवक |
| 21. | सोलहकारण जयमाला (अपभ्रंश) | — | - | — | 27 कडवक |
| 22. | बारा भावना (आदिकालीन हिन्दी) | — | - | — | 37पद्य |

(इनमें से क्रमांक 7 का ग्रन्थ पेरिस (फ्रांस) के प्राच्य शास्त्र-भण्डार में सुरक्षित है।)

**काल-निर्णय–**

जैसा कि पूर्व में कहा जा चुका है, महाकवि रइधू की ग्रन्थ-प्रशस्तियों के आधार पर उसका काल सन् 1414 से 1479 के मध्य निर्धारित किया गया है (विस्तृत जानकारी के लिये देखिये– रइधू-साहित्य का आलोचनात्मक परिशीलन (लेखक– डॉ. राजाराम जैन) वैशाली, 1974 )।

**जं. सा. च. की कथावस्तु**

प्रस्तुत ग्रन्थ में कथानायक होने के कारण जम्बूस्वामी के जीवन का पूर्वार्ध एवं उत्तरार्ध सर्वत्र व्याप्त है। ग्रन्थ का कथानक तथा उसके समस्त पात्र उसके चतुर्दिक भ्रमण करते हुए दिखाई देते हैं। उसकी कथा सर्वोपयोगी बनाने की दृष्टि से लाक्षणिकताओं से बचाने का भी यथासम्भव प्रयत्न किया गया है और जैसा कि पूर्व में कहा जा चुका है, लौकिक कथा-वृत्तान्तों के माध्यम से मानव-मन को उन्नत बनाने का प्रयत्न किया गया है। पृथक् रूप से उसका सारांश पुनरावृत्ति के भय से यहाँ प्रस्तुत नहीं किया जा रहा है। क्योंकि विषयानुक्रमणिका में उसका क्रमबद्ध समस्त कथानक रेखांकित कर ही दिया गया है। उससे वह पूर्णतया स्पष्ट है।

**जं. सा. च. में कथाओं का तान-वितान एवं उनके सन्देश–**

प्रस्तुत रचना में विविध प्रसंगों में लगभग एक दर्जन लौकिक कथाओं के द्वारा मानव के नैतिक उत्थान तथा आत्म-जागरण हेतु नैतिक-सन्देश प्रस्तुत किये गये हैं, जो बड़े ही मार्मिक एवं रोचक हैं। उनकी झाँकी एक मानचित्र के माध्यम से यहाँ प्रस्तुत है–



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

| | कथा-वक्ता | श्रोता | कथा के पात्र | कथा-कथन का उद्देश्य | सन्दर्भ कडवक सं. |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. | पद्मश्री (या कमलश्री), जम्बू की प्रथम पत्नी | कुमार जम्बू | हालिक धनदत्त - कृषक। | प्राप्त को छोड़कर अप्राप्त को प्राप्त करना सन्देह पूर्ण। | 31-33 |
| | जम्बू का प्रत्युत्तर | पद्मश्री एवं अन्य पत्नियाँ | माँस-लोलुपी कौआ। | इन्द्रिय-विषयों की लोलुपता का दुष्फल सुनिश्चित। | 34 |
| 2. | कनकश्री,, जम्बू की दूसरी पत्नी | जम्बू | –साधु के उपदेश से प्रतिबद्ध बन्दर ने पहाड़ से गिर कर आत्महत्या कर स्वर्ग की प्राप्ति की। इसकी देखादेखी एक मूर्ख विषयान्ध-विद्याधर ने भी पर्वत से गिरकर स्वर्ग-प्राप्ति की कामना से आत्म-हत्या की किन्तु इसके विपरीत वह मरकर ललमुहा-बन्दर की योनि में जन्मा। | इन्द्रिय-विषयों की लोलुपता एवं कलुषित-हृदय से दुर्गति निश्चित तथा प्राप्त को छोड़कर अप्राप्त को प्राप्त कर पाना सन्दिग्ध। | 35 |
| | जम्बू - का प्रत्युत्तर | कनकश्री एवं अन्य पत्नियाँ | हत्यारा यूथाधिपति बन्दर अपने बन्दर-पुत्रों की हत्या कर अपनी बन्दरी – पत्नी एवं समाज से बहिष्कृत होकर दुर्गति को प्राप्त होता है। | कामान्धता क्षणिक् है। अतः शाश्वत सुख-प्राप्ति हेतु तपस्या ही आवश्यक है। | 36 |
| 3. | नागश्री -, जम्बू की तीसरी पत्नी | जम्बू | संखिणी नाम का कव्वाडिक लकडहारा | वचत का एक रुपया कलश में रखकर जमीन में गाड़ देता है। उसका साथी भी अपना सोना- चाँदी उसी में रखकर गाड़ देता है। किन्तु सब गायब हो जाता है। तात्पर्य यह कि प्राप्त का सदुपयोग न कर अप्राप्त को प्राप्त करने का विचार सन्देह-पूर्ण रहता है। | 37-38 |
| | जम्बू का प्रत्युत्तर | नागश्री एवं अन्य पत्नियाँ | विषय-लोलुपी-भ्रमर | इन्द्रिय-सुखानुभव में भविष्य का ध्यान रखे बिना दुर्गति की प्राप्ति अवश्यम्भावी। | 39 |
| 4. | रूपश्री -, जम्बू की चतुर्थ पत्नी | जम्बू | छछूंदर एवं अहि-नकुल की कथा | प्राप्त को छोड़कर अप्राप्त को प्राप्त करने का प्रयत्न दुर्गति-दायक। | 39-40 |
| | जम्बू का प्रत्युत्तर | रूपश्री एवं अन्य पत्नियाँ | इन्द्रिय-लोलुपी मायावी श्रृगाल की दुखद मृत्यु क्यों हुई? | इन्द्रिय लोलुपी होना दुर्गति का कारण | 41 |



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उक्त कथा-कथान्तरों के अतिरिक्त भी जम्बू का मायावी मामा-विद्याचर-तस्कर एवं जम्बू के बीच परस्पर में प्रासंगिक कथा-कथन हुए हैं, जिनमें (1) लुटे-पिटे एवं प्यासे वणिक् की कथा (47)। (2) तरुणी स्वैरिणी भार्या की कथा (48-49)। (3) विदेशों के लिये आयातक (Importer) तथा निर्यातक (Exporter) का कार्य करने वाले व्यापारी की कथा (51)। (4) दरिद्र लकड़हारे की कथा (52)। (5) वृद्ध वोडु नट की कथा (53)। (6) वाराणसी के राजा लोकपाल एवं उसकी कामान्ध स्वैरिणी महारानी की कथा (53-54), आदि बड़ी रोचक एवं मार्ग-निर्देशक बन पड़ी है।

उक्त सभी कथाओं का एक ही उद्देश्य है कि सांसारिक सुखों को क्षणिक् बतलाना, विविध तर्कों एवं लौकिक उदाहरणों द्वारा मानव के आत्म-गुणों को जागृत करना तथा परभव सुधारने के लिये योग्य मार्ग-दर्शन करना।

प्रस्तुत ग्रन्थ का कलेवर यद्यपि लघु है, फिर भी, जैसा कि पूर्व में कहा जा चुका है, कवि ने उसके पात्रों में विविध-विचार-धाराओं वाले नर-नारी एवं पशु-पक्षियों को पात्र के रूप में प्रस्तुत कर सूत्र-शैली में श्रावक निर्मलदास के "पंचाख्यान" के सदृश ही समकालीन जैन-पंचतंत्र का रूप प्रदान करने का प्रयत्न कर अपने बुद्धि-कौशल का परिचय दिया है।

## जम्बू-स्वामी के जीवन का शौर्य-वीर्य युक्त पूर्वार्ध-काल–

शस्त्रास्त्र-विद्या के धनी, शौर्य-वीर्य-गुण में अनुपम तथा अतुलित बलशाली जम्बू-स्वामी जब बाल्यावस्था में थे तभी मगध सम्राट श्रेणिक का एक प्रमुख हाथी बिगड़ खड़ा हुआ। उसकी विनाशकारी करतूतों से सारा नगर भयत्रस्त हो गया। उसे बाँध लेने में जब कोई भी समर्थ न हो सका, तभी बालक जम्बू ने अपने बुद्धि-कौशल से उसे वश में कर लिया और वही हाथी, उन्हें स्नेहवश अपने गण्डस्थल पर बैठाकर राजा श्रेणिक के प्रांगण में उपस्थित हो गया। यह कृत्य देखकर राजा श्रेणिक भी बालक जम्बू की इस निर्भीकता एवं बुद्धि-कौशल से अत्यन्त प्रभावित हो गये (5)।

इसी प्रकार राजा श्रेणिक के एक मित्र दक्षिण-देश स्थित केरलपुर-राज्य के नरेश मृगांक ने अपने शत्रु-राजा रयणचूल द्वारा युद्ध ठान देने के कारण, उससे लोहा लेने के लिए उनसे (श्रेणिक से) सहायता माँगी। तब श्रेणिक ने बड़े ही विश्वास के साथ तेरह वर्षीय कुमार जम्बू को उस (राजा मृगांक) की सहायता करने हेतु दक्षिण में भेज दिया। वहाँ उसने पराक्रमी शत्रु राजा हंसद्वीप (सिंहल) नरेश रयणचूल के आठ सहस्र सैनिकों को मारकर उसे बुरी तरह पराजित किया और राजा मृगांक को निश्चिन्त होकर अपने राज्य की सुरक्षा एवं प्रजा पालन के लिये प्रेरित किया। (15-17)

## जम्बू स्वामी : श्रमण संस्कृति एवं भारतीय इतिहास के पूर्वापर प्रकाशक

जम्बू स्वामी के परिनिर्वाण के बाद नन्दों एवं मौर्यों का युग आया। उसमें जैनधर्म, जैन-साधकों एवं द्वादशांग-वाणी की जैसी स्थिति रही, सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक कैसी-कैसी परिस्थितियाँ रहीं, उन पर आधुनिक इतिहासकारों ने पर्याप्त प्रकाश डालने का प्रयत्न किया है और उसे प्रकाशित-इतिहास-ग्रन्थों से जाना जा सकता है। तात्पर्य यह कि महान् ऐतिहासिक युग-पुरुष-जम्बू स्वामी, जैसा कि पूर्व में कहा जा चुका है, देहली पर रखे हुए ऐसे दीपक के प्रकाश-स्तम्भ के समान हैं, जिनके महनीय जीवन-चरित से पूर्वापर-काल की समस्त ऐतिहासिक घटनाओं/परिस्थितियों का अच्छा अध्ययन किया जा सकता है।

ऐसे युग-पुरुष के जीवन से प्रभावित होकर युगों-युगों से लेखकाचार्यों की लेखनी चलती रही है। उन्होंने समकालीन लोकप्रिय प्रचलित भाषा में विभिन्न शैलियों में दर्जनों ग्रन्थों का प्रणयन किया है जिनकी चर्चा पीछे की ही जा चुकी है और उनमें प्रासंगिक एवं आनुषंगिक रूपो में विविध ऐतिहासिक तथ्यों का उद्घाटन भी किया गया है, जिनके तुलनात्मक एवं समीक्षात्मक अध्ययन की नितान्त आवश्यकता है।



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

## जम्बू-स्वामी का कैवल्य-काल और तीर्थंकर-महावीर के परवर्त्ती केवलियों की परम्परा–

तिलोयपण्णत्ती (गाथा 1482-84) के अनुसार भगवान महावीर के परिनिर्वाण (ई.पू. 527) के बाद तीन केवली हुए। उनमें से जम्बूस्वामी अन्तिम तीसरे केवलज्ञानी थे। इनके पूर्व इन्द्रभूति गौतम गणधर और उनके बाद आचार्य सुधर्मा स्वामी हुए। इन तीनों का कैवल्य-काल, आचार्य इन्द्रनन्दि कृत श्रुतावतार के अनुसार क्रमशः 12, 12 एवं 38 वर्ष (कुल योग 12+12+38=62 वर्ष) माना गया है। तात्पर्य यह है कि जम्बू स्वामी को कैवल्य-प्राप्ति, भ. महावीर के परिनिर्वाण के 62 वर्ष पश्चात् अर्थात् (ई.पू. 527-62=) ई.पू. 465 में हुई।

## द्वादशांग-वाणी का क्रमिक ह्रास एवं सम्राट खारवेल–

जम्बू स्वामी के काल तक महावीर-वाणी अथवा द्वादशांग-वाणी की अविच्छिन्न परम्परा, कण्ठ-परम्परा (अर्थात् गुरु-शिष्य-परम्परा) के माध्यम से चलती रही किन्तु काल-क्रम से विषम परिस्थितियों में उसका क्रमिक ह्रास होता गया।

जम्बू स्वामी के परिनिर्वाण के लगभग 300 वर्षों के बाद श्रमण-संस्कृति के सजग प्रहरी और कलिंगाधिपति जैन चक्रवर्ती सम्राट खारवेल (ई.पू. दूसरी सदी) को अपनी दिग्विजयों के बाद जब चोयठी (चो=चउ अर्थात् 4+अठी अर्थात् 8=12) द्वादशांग-वाणी के क्रमिक ह्रास की जानकारी मिली तो वह बड़ा चिन्तित हो उठा और उसने दिग-दिगन्त से ज्ञानी मुनियों, आचार्यों आदि को आमन्त्रित कर एक विराट सम्मेलन (संगीति) का आयोजन किया और द्वादशांग-वाणी की वाचना कराई (दे. खारवेल शिलालेख-पंक्ति सं. 15-16) किन्तु पूर्ववर्त्ती वाचना के समान ही किन्हीं अदृश्य कारणों से वह विस्मृत हो गई।

## कथा-विकास में सहायक अन्य प्रमुख पात्र

## आचार्य सुधर्मा मुनिराज

जैन इतिहास के अनुसार सुधर्म-स्वामी, वर्धमान महावीर के परिनिर्वाण (ई.पू. 527) के बाद तीन केवलियों में से द्वितीय अनुबद्ध-केवली थे। चूँकि भगवान् महावीर के परिनिर्वाण के बाद गौतम गणधर, सुधर्मा स्वामी एवं जम्बू स्वामी क्रमशः 12, 12 एवं 38 वर्ष बाद एक के परिनिर्वाण के प्राप्त होते ही दूसरे को कैवल्य-प्राप्ति तथा दूसरे के परिनिर्वाण के दिन ही तीसरे को कैवल्य-प्राप्ति होती रही, अतः उन तीनों को अनुबद्ध-केवली की संज्ञा प्राप्त हुई। इस दृष्टि से सधर्म-स्वामी द्वितीय अनुबद्ध-केवली थे। उनका काल ई. पू. 503 (अर्थात् वीरनिर्वाण ई.पू. 527-12-12=503) सिद्ध होता है।

## मगध सम्राट श्रेणिक

वैशाली के महान् सपूत वर्धमान महावीर (ई.पू. 599-527) के समकालीन तथा शिशुनागवंशी मगध सम्राट श्रेणिक मगध-साम्राज्य के निर्माता एवं विजेता होने पर भी धार्मिक एवं नैतिक आदर्शों के प्रतिपालक थे। भगवान महावीर की द्वादशांग-वाणी सम्राट श्रेणिक एवं गौतम गणधर की प्रश्नोत्तरी का सुफल माना गया है।

श्रेणिक एक राष्ट्रवादी सम्राट थे। भारतीय इतिहासवेत्ताओं के अनुसार भारत की पश्चिमोत्तर सीमा पर अधिकार जमाए हुए ईरानियों को श्रेणिक ने बुरी तरह खदेड़ दिया था (Modern Review अक्टूबर 1930, पृष्ठ 438) जैनेतिहास के अनुसार सम्राट श्रेणिक ने ईरान तथा उसके समीपवर्त्ती देशों में जिन-मूर्त्तियाँ प्रतिष्ठित कराई थीं। (सं.जै.इ. 2/1)

सम्राट श्रेणिक का पुत्र तथा राजमन्त्र एवं तन्त्र में प्रवीण राजकुमार अभय ईरान के राजकुमार आर्द्रक का मित्र था। उसके लिये अभय ने एक जिनमूर्ति भी भेंट स्वरूप प्रेषित की थी। उससे प्रभावित होकर वह भगवान महावीर



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

के समोशरण में आया था और उनके प्रवचनों से प्रभावित होकर उसने मुनि-दीक्षा धारण की थी। कहा जाता है कि ईरान में कलन्दर (अहिंसक) सम्प्रदाय उसी ने प्रचलित किया था।

श्रेणिक के समय में मगध की राजधानी राजगृही थी। जम्बू-स्वामी वहीं के नगर-सेठ अर्हद्दास के पुत्र थे और अपने तेजस्वी व्यक्तित्व, बुद्धि-कौशल, शस्त्रास्त्र-विद्या में प्रवीण तथा शौर्य-वीर्य के कारण वे सम्राट श्रेणिक के परम विश्वस्त तथा स्नेही पात्र बन गये थे तथा उनकी ओर से केरलपुर नरेश राजा मृगांक की सहायता हेतु वे हंसद्वीप के विद्याधर राजा रयणचूल से युद्ध में जा भिड़े थे और बुरी तरह उसे पराजित कर राजा मृगांक की रक्षा की थी।

## सेठ अर्हद्दास, सेठानी जिनमती एवं उनकी नवोढा चार पुत्रवधुएँ–

जम्बू-स्वामी के पिता एवं माता अर्हद्दास एवं जिनमती राजगृह नगर के प्रमुख सेठ एवं सेठानी थे। उन्होंने बालक जम्बू कुमार को बाल्यावस्था में ही ज्ञान-विज्ञान, शस्त्र एवं शास्त्र तथा अन्य लौकिक कलाओं में प्रवीण बना दिया था। कुमार जम्बू के वैराग्योन्मुखी होने पर भी उन्होंने नगर की श्रेष्ठ चार कन्याओं के साथ इसलिये परिणय करा दिया था, कि वे संसारोन्मुखी हो जावे। इसके लिये उन्होंने अथक प्रयत्न किये किन्तु सफलता नहीं मिली। अन्ततः जम्बू के दीक्षा-ग्रहण के साथ ही साथ वे दोनों और उनकी चारों नवोढा पत्नियाँ (राजगृही के वणिक् श्रेष्ठ सागरदत्त की पुत्री-) पद्मश्री अपरनाम कमलश्री, (कड 26, 30, 33), (कुबेरदत्त की पुत्री-) कनकश्री (35), (सेठ वैश्रवण की पुत्री-) विनयश्री अथवा नागश्री (37-38) एवं (सेठ धनदत्त की पुत्री-) रूपलक्ष्मी अथवा रूपश्री (39-40) ने भी जम्बू के साथ दीक्षा लेकर तपस्या की और सद्गति प्राप्त की।

## विद्याचर-चोर–

प्रस्तुत ग्रन्थ के कथा-विकास में विद्याचर-चोर का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है। वह यद्यपि एक राजपुत्र (56) था तथा उसे अंजन-विद्या नाम की एक चमत्कारी-विद्या भी सिद्ध थी। फिर भी वित्त-लोभ के कारण उसने तस्करी प्रारम्भ कर दी। इस कार्य के प्रसंग में एक रात्रि के समय वह कमार जम्बू के घर राजगृही भी पहुँच गया। कुमार जम्बू जब विवाहोपरान्त प्रथम रात्रि की मिलन-वेला में अपनी चारों नवोढा पत्नियों से वार्त्तालाप कर रहे थे, उसे वह चोर भी जिज्ञासावश छिपकर सुनता रहा।

संयोग से उसी समय जम्बू की माता जिनमती भी वहाँ आ पहुँची। विद्याचर ने उसे अपना यथार्थ परिचय दे दिया। तब वह उससे घबराई नहीं बल्कि उसे अपने वैराग्योन्मुखी पुत्र की मानसिकता का वृत्तान्त बतलाकर उससे कहा कि "जम्बू के विवाह में जितना भी धन उसे ससुराल से मिला है, उसे तुम पूरा का पूरा ले जा सकते हो किन्तु उसके बदले में तुम उसका मन संसारोन्मुखी अवश्य बना दो (42-45)।

एक माता के पुत्र-वात्सल्य से भावाभिभूत होकर उसे वैसा ही करने का वचन देकर वह तस्कर जम्बू की माता के साथ उनका (जम्बू का) बनावटी मामा बनकर जम्बू के रतिगृह में प्रवेश कर उसे समझाता है कि "प्राप्त को छोड़कर अप्राप्त को प्राप्त करने का प्रयास करना बुद्धिमत्ता नहीं।" (45 एवं 46/5-6)। विविध प्रकार से समझाये जाने पर भी जम्बू पर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा बल्कि उसका स्वयं का ही मन परिवर्तित हो जाता है और वह अपने 500 साथियों के साथ दीक्षा लेकर घोर तपस्या करता है और ग्यारह अंगधारी आचार्य के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त करता है (59)।

## विद्याधर राजा मृगांक–

मृगांक दक्षिण भारत के मलयगिरि के समीपवर्त्ती-देश केरलपुर का विद्याधर-राजा था। उसने अपनी पुत्री विलासवती का विवाह मगधेश्वर श्रेणिक के साथ करने का निर्णय लिया किन्तु हंसद्वीप (6) के विद्याधर राजा रयणचूल



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(रत्नचूल) ने मृगांक से अपने लिये उस कन्या का हाथ माँगा, जिसे उसने अस्वीकार कर दिया। इससे क्रुद्ध होकर रयणचूल ने उस पर आक्रमण करने की तैयारी प्रारम्भ कर दी (6)। मृगांक का बहनोई विद्याधर गगनगति इससे चिंतित होकर सम्राट श्रेणिक से सहायता माँगने हेतु राजगृही आता है। उसका कथन सुनते ही श्रेणिक जम्बू कुमार को मृगांक की सहायता करने हेतु भेजते है (7)। जम्बू पहले तो रयणचूल को विवेक पूर्वक सोचने की सलाह देते हैं किन्तु जब वह नहीं मानता तब उसे बुरी तरह पराजित कर देते हैं इससे मृगांक जम्बू के प्रति आभार व्यक्त कर उसे सम्मानित करता है (17) और उसके साथ वह राजगृही आकर अपनी कन्या विलासवती का श्रेणिक के साथ विवाह कर देता है (18)।

## राजा रयणचूल–

इसका खलनायकत्व कथा-विकास तथा प्रस्तुत-काव्य में रौद्र एवं वीर-रस के उद्रेक में सहायक सिद्ध हुआ है। जम्बू कुमार में शौर्य-वीर्य को उत्तेजित करने तथा उसे प्रदर्शित कराने में वह सहायक सिद्ध हुआ है।

रयणचूल हंसद्वीप (वर्तमान श्रीलंका) के विद्याधरों का राजा था (6)। वह बड़ा अहंकारी एवं विषयान्ध राजा था। केरलपुर के राजा मृगांक की सुन्दरी कन्या विलासवती से वह विवाह करना चाहता था किन्तु मृगांक ने उसके प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया। इस कारण सम्राट श्रेणिक के अतिविश्वस्त पात्र-जम्बू ने जाकर उसे बुरी तरह परास्त किया था (6-18)।

## कुछ मार्मिक स्थल

महाकवि रइधू ने सामाजिक एवं पारिवारिक प्रसंगों का अंकन बड़ी ही मार्मिक एवं सरस-शैली में किया है। उसने जं. सा. च. के वर्णन-प्रसंगों में अनेक स्थलों पर अंगूठी में रत्न जड़कर उसे बहुमूल्य बनाने के समान ही कथा-कथन को मार्मिक बनाने के लिये हृदयावर्जक अनेक सूक्तों के भी प्रयोग किये हैं। ऐसे मार्मिक स्थलों में से कुछ निम्न प्रकार हैं–

अपने जीवन के पूर्वार्ध में शौर्य-वीर्य समन्वित पराक्रमी जम्बू राजा श्रेणिक के संकेत से जिस विद्याधर राजा रयणचूल की सेना के आठ हजार सैनिकों को मार देते हैं और रयणचूल को करारी हार देते हैं, वे ही जम्बू जीवन भर उसके प्रति द्वेष-भाव नहीं रखते। उद्देश्य पूर्ति के बाद देखिये जम्बू का धीरोदत्त नायकत्व। वे रयणचूल को समझाते हुए कहते हैं–

भो खयरराय ..... (18/3-5) अर्थात् हे विद्याधर-नरेश रयणचूल, अब इसमें गर्व करने की क्या बात है? क्योंकि यह धन, धान्य, तन, परिजन, पुरजन, बल सभी तो चंचल (क्षणिक) हैं। उनके आने या नष्ट होने में हर्ष अथवा विषाद नहीं करना चाहिये। क्योंकि ये सब तो दूसरों के सुभटों के मण्डन के समान ही हैं, जिन्हें छोड़कर रणभूमि से भागकर घर नहीं जाया जा सकता। अतः अब अपना रथ लो और घर वापिस जाकर अपना राज्य करो।

एक दूसरा मार्मिक स्थल वह है, जब रणविजय करके जम्बू आचार्य सुधर्म मुनिराज के पास जाकर दीक्षा प्रदान करने हेतु उनसे प्रार्थना करते हैं। मुनिराज उन्हें आदेश देते हैं कि सर्वप्रथम अपने माता-पिता, परिजन एवं पुरजनों से स्वीकृति लेकर आओ, तभी दीक्षा प्रदान की जायगी, अन्यथा नहीं। चूँकि जम्बू जानते थे कि वे लोग कभी भी स्वीकृति प्रदान नहीं करेंगे, अतः वे मुनिराज से बार-बार सादर प्रार्थना करते हुए कहते हैं– "किस प्रयोजन से आप मुझे मेरे घर भेज रहे हैं? मैं अपने माता-पिता से क्यों और कितने समय तक पूछता रहूँगा? मैं तो तत्काल ही दुर्धर तप करना चाह रहा हूँ। अब तो केवल आप ही मेरे माता-पिता हैं और आप ही मुझे प्यार करने वाले महारथी। आप ही मेरे बन्धु हैं और आप ही मेरे स्वजन, सत्पण्डित और स्वामी और भव से तारने वाले सद्गुरु। अतः हे देव, मुझे



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तत्काल ही दिगम्बरी-दीक्षा प्रदान कीजिये। मुझे निराश्रित मत छोड़िये" (22)।

इसी प्रकार सुधर्मा और जम्बू (23), जम्बू और सुधर्मा (23), जबू और उनकी माता जिनमती (23-24) सेठ अर्हद्दास एवं सेठ सागरदत्त के सन्देशवाहक (25-28) आदि के वार्त्तालापों में आये प्रसंग भी अत्यन्त मार्मिक बन पड़े हैं।

**भाषा-वैशिष्ट्य–**

जैसा कि पूर्व में कहा जा चुका है, जं. सा.च. की भाषा अपभ्रंश है किन्तु उसमें कुछ ऐसी शब्दावलियाँ भी प्रयुक्त हैं, जो आधुनिक भारतीय भाषाओं की शब्दावलियों से समकक्षता रखती हैं और कहीं-कहीं तो ऐसा प्रतीत होता है कि यदि आज की भाषा-शैली में, कहें तो वे मानों पाठक से Table talk ही कर रहे हों (दे. 17)। आ.भा.भा. (MIL) की कुछ रोचक शब्दावली देखिये–

ओढिवि = ओढकर (52/6)
गड्डी = गाड़ी (38/8), (पंजाबी एवं हरयाणवी)
चइत = चैत्रमास (भोजपुरी) (2/10)
चुक्क = चूकना (50/3)
ठेल्ल = ठेलना (31/11)
पेल्ल = पेलना, ठेलना (45/1)
चलण = चरण (पैशाची प्राकृत प्रयोग) (21/11, 53/9)
आयउ = आया (9/10)
धिट्ठ = ढीठ=धृष्ट (15/6)
अप्पुणु = आपुन (भोज.) अपना (19/9)
चहुट्टिउ = चौंट लेना (चिकोटी काटना) काट लेना (28/7)
हलि = संबोधन, अरे (अंग्रेजी का हलो) (30/2)
रित्तउ = रीता, खाली (38/12)
रोउ = रोना (39/11)
भित्ति = भींट (दीवाल) (42/3)
चक्ख = चखना (पंजावी-चाखा) (47/1)
भत्तार = भतार = पति (भोजपुरी) (48/5)
गाम-तलार = तलवर (पंजावी) कोतवाल, गाँव का सरपंच (48/13)
तलवर = तलवर (पंजावी-गोत्र) (49/2)
फुट्ट = फूटा, फूटना, (52/7)

कवाड = कपाट (45/1)
घिउ = घी (बुन्देली) (5/5)
चक्खा = चक्खा (पंजाबी, हरयाणवी) (4/1)
चुक्कुउ = उचक्का (16/8)
पाखंड = पाखंड (48/7)
फुट्ट = फूटना (52/7)
वीडइ = बीड़ा (पान का बीड़ा) (7/4)
हेरि = हेरो = देखो (बुन्देली) (13/15)
मोड = मोड़ना (मरोड़ना) (17/5)
अम्मी = माँ (24/1)
भूल = भूल (33/9)
भुक्ख = भूख (39/6)
लग्ग = लगना (42/3)
पेल्ल = पेलना, धकेलना (44/1)
चुक्क = चूकना (47/7, 50/3)
मढि = मढिया, मठिया (48/14)
देवल = देवालय (49/7)
टालिज्ज = टालना, टिरकाना (53/10)
गोठ = गायों के रखने का स्थान (53/12)

**ध्वन्यात्मक-शब्द**

खडहडिउ = खड़खडाना (14/8)
चच्चर = टिमटिमाना (23/6)
चडफणंतु = फडफड़ाना (53/12)
चिक्कार = चीत्कार (5/13)
तडयडइ तडक्कइ = तड़कना, तडतड़ करना (39/6)
झुलुक्की = झलकना (54/2)



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

## लोकोक्तियाँ एवं मुहावरे–

महाकवि रइधू की यह विशेषता है कि शब्दाडम्बर के घटाटोपों, रसों एवं अलंकारों की ज़बरदस्त ठूँस-ठाँस एवं रहस्यवाद जैसे नीरस वादों से अपनी रचनाओं को दुरूह नहीं बनाते। जनकवि होने के कारण उन्होंने गहन विषय को लेकर भी उसे लोकानुकूल सर्वोपयोगी बनाकर अत्यन्त सरस और सरल भाषा-शैली में प्रस्तुत किया है। वर्ण्य-विषय को और भी अधिक स्पष्ट करने के लिए उन्होंने लोकोक्तियों एवं मुहावरों का भी प्रयोग किया है। जम्बू स्वामी चरित्र में कवि द्वारा प्रयुक्त लोकोतियों एवं मुहावरों के कुछ मार्मिक उदाहरण यहाँ द्रष्टव्य हैं–

10/3 –दप्पुब्भड बुज्झहि सहिउ कज्जु?
दर्पोद्धत होने से कहीं प्रयोजन की सिद्धि हो सकती है?

10/9 –परतिय दोसें के – के ण णट्ठ?
परस्त्री को चाहने के दोष के कारण कौन-कौन अपने नाश को प्राप्त नहीं हुए?

23/6 –च च्चर – दीवोवमु चवलु जीउ
यह जीवन टिमटिमाते हुए दीपक के समान ही है।

23/7 –गि रि – णइ पूरुव लच्छी-णिवासु
लक्ष्मी का निवास पहाड़ी नदी के पूर (प्रवाह) के समान क्षणिक् है।

23/7 –परिय णु जिह णहि विज्जुल पयासु
परिजनों का स्नेह मेघ में बिजली की चमक के समान क्षणिक् है।

26/11 –वरकुल उप्पण्ण गुणालियाह
श्रेष्ठ कुलोत्पन्ना, सद्गुण-सम्पन्ना बालिका का तो आजीवन एक ही पति होता है।

26/12 –अण्णाण विलासिणी गहइ कंत
जो विलासिनी (कामुक) नारी होती है, उसके तो अन्य-अन्य अनेक कान्त भी होते हैं।

28/1 –को कणय ायलु थाणहु चालइ?
कनकाचल (सुमेरु पर्वत) को क्या कोई अपने स्थान से हटा सकता है?

48/1 –ओसजलें तिसं किं ओहट्टइ
ओस-कणों के जल से क्या कभी प्यास बुझ सकती है?

25/1 –अघडिय उ घडावइ एम विहि, सुघडु जि विहडावइ होउ दिहि।
विधि का विधान ही ऐसा है कि वह अघटित को घटित और सुगठित को विघटित कर देता है।

## रस योजना–

महाकवि रइधू ने प्रस्तुत काव्य में प्रसंगवश आलम्बन एवं आश्रय में होने वाले व्यापारों का सुन्दर अंकन किया है, जिससे रसोद्रेक में किसी प्रकार की न्यूनता नहीं आने पाई है। वीणा के घर्षण में जिस प्रकार तारों में झंकृति उत्पन्न होती है, उसी प्रकार हृदयग्राही राग-भावनाएँ काव्य के आवेष्टन में आवेष्टित होकर रस का संचार करती हैं। यों तो इस काव्य का अंगीरस शान्त है, पर श्रृंगार, वीर और रौद्र रसों का भी सुन्दर परिपाक हुआ है। यहाँ वीर-



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रस का एक उदाहरण प्रस्तुत किया जाता है। कवि ने सुसज्जित रथों एवं अश्वों पर सवारों का युद्ध के लिए प्रस्थान, संग्राम में चमकती हुई तलवारें, लड़ते हुए वीरों की हुँकारें एवं योद्धाओं के शौर्य-पराक्रम, आरोप-प्रत्यारोप, सुयोग्य सलाहें, धमकियों एवं चुनौतियों का कैसा सुन्दर जीता-जागता चित्र उपस्थित किया है, इसका वर्णन कडवक सं. 8 से 17 तक देखा जा सकता है।

इसी प्रकार वीर-रस का सहायक – रौद्ररस (कडवक 12, 16, 17 एवं 34) तथा करुणरस (कड. 24-26), श्रृंगार-रस (कड. 30 एवं 54, 55) एवं भय (कडवक 39) आदि रसों के भी प्रासंगिक सुन्दर चित्रण मिलते हैं।

शान्त-रस तो प्रस्तुत काव्य में सर्वत्र अनुस्यूत है। जम्बू विरक्त होकर तप करने चले जाते है और वन में जाकर केशलुंचन आदि करते हैं। उक्त सन्दर्भ में शान्त-रस का सुन्दर रस-परिपाक हुआ है। इसकी छटा कडवक सं. 57 एवं 58 में देखी जा सकती है।

**संस्कृति–**

ऐतिहासिक दृष्टि से यह रचना जितनी महत्त्वपूर्ण है, उतनी ही सांस्कृतिक दृष्टि से भी। उसके कुछ रोचक स्थल निम्न प्रकार हैं– दौत्य-कर्म (कडवक 10-11), मनुष्य-जन्म की दुर्लभता (कडवक 30), सांसारिक सुख-भोगों की क्षणिकता (कडवक 18, 47), व्यर्थ में निर्दोष व्यक्तियों का संहार रोकने की दृष्टि से बाहुयुद्ध एवं इस दृष्टि से निर्णायक अहिंसक-युद्ध (कडवक 16-17), परिणय-संस्कार-वर्णन-(कड. 24-26), संसारोन्मुखी एवं वैराग्योन्मुखी कथा कथान्तरों की रोचक-योजना (कडवक 23-55) आदि प्रसंग भी बड़े रोचक बन पड़े हैं।

वस्तुतः रइधू की यह कृति लघु होने पर भी सारगर्भित है। उसकी सरसता, सरलता एवं मार्मिकता किसी भी विचारशील जिज्ञासु को आकर्षित किये बिना नहीं रह सकती। इसका प्रमुख उद्देश्य, जैसा कि पूर्व में लिखा जा चुका है, जन-सामान्य के स्वात्म-गुणों को जागृत कर कर्त्तव्याकर्त्तव्य का बोध कराना है और मेरी दृष्टि से कवि उसमें सफल हुआ है।

**कृतज्ञता-ज्ञापन–**

13/11/07 के वे क्षण कभी भुलाये नहीं जा सकेंगे जब मैं परमपूज्य आचार्यश्री विद्यानन्द जी मुनिराज के सम्मुख बैठा था। उन्होंने चौरासी-मथुरा में फरवरी 2008 में आयोजित होने जा रहे जम्बू स्वामी के 2500वें परिनिर्वाण समारोह की चर्चा करते हुए उनके जीवन की कुछ रोचक घटनाएँ सुनाई और मुझे आदेश दिया कि इस समारोह की स्मृति को जागृत रखने के लिए जम्बू-स्वामी से सम्बन्धित किसी अप्रकाशित पाण्डुलिपि का सम्पादन-प्रकाशन होना चाहिये। प्रसंगवश उन्होंने दुर्लभ पाण्डुलिपियों की सुरक्षा तथा उनके सम्पादन-प्रकाशन को ही मौलिक शोध-कार्य तथा आज की विशिष्ट माँग बतलाते हुए इस कार्य के प्रति लोगों के उपेक्षा-भाव के प्रति भी अपनी गहरी चिन्ता व्यक्त की। उनकी चिन्ता निस्सन्देह ही यथार्थ, रचनात्मक और विचारोत्तेजक थी।

संयोग से मेरे पास तद्विषयक एक लघु पाण्डुलिपि सुरक्षित थी– जंबू-सामि-चरिउ (रइधू कृत)। जब उन्हें उसकी जानकारी दी, तो वे प्रमुदित हो उठे और आदेश दिया कि उसका शीघ्रातिशीघ्र सम्पादन-अनुवाद करो, जिससे कि उसके प्रकाशन की व्यवस्था कराई जा सके।

आचार्यश्री के आदेशोपदेश से मुझे गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर के उस कवितांश का स्मरण हो आया, जिसका भाव है– *"गुरुदेव जहाँ-जहाँ विराजते हैं, वहाँ-वहाँ ऐसा दिव्यालोक फैल जाता है, मानों किसी ने एक ही मुस्कान में सहस्रों दीप आलोकित कर दिये हों।"* मैंने भी उस समय यही सुखद अनुभव किया।

धुंधली एवं जीर्ण-शीर्ण पाण्डुलिपि का प्रतिलेखन, फिर उसका सम्पादन, अनुवाद एवं समीक्षा जैसा जटिल कार्य और समय केवल लगभग एक माह का ? अत्यल्पावधि में कैसे सम्पन्न होगा यह गुरुतर कार्य ? फिर भी, आचार्यश्री



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

के आशीर्वाद का साया मेरे ऊपर था ही, अतः एकान्तवास कर समग्र शक्ति लगाकर समयानुसार कार्य समाप्त कर दिया। अतः मन प्रफुल्लित है और उन्हें सविनय प्रणाम करता हूँ।

स्नेही भाई श्री सतीश जी जैन (आकाशवाणी) अथ से इति तक मेरी खोज खबर लेते रहे तथा प्रस्तुत ग्रन्थ का सम्पादन-कार्य शीघ्र ही समाप्त करने हेतु प्रेरित करते रहे। अतः उनके प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ।

इस कार्य में डॉ. विद्यावती जैन ने शब्दानुक्रमणिका तैयार कर ग्रन्थ की समग्रता में पूर्ण योगदान देकर मेरी सहायता की है। अतः उनके प्रति आभारी हूँ। श्री पी. एल. मीणा एवं सुरेश राजपूत ने मनोयोग पूर्वक टंकण कार्य कर सक्रिय सहयोग किया, अतः उनके प्रति भी आभारी हूँ।

प्रस्तुत पाण्डुलिपि के सम्पादन-कार्य में यद्यपि विशेष सावधानी रखी गई है, फिर भी कुछ त्रुटियों का रह जाना सम्भावित है। अतः जिज्ञासु पाठक गण उनकी ओर मेरा ध्यान आकर्षित करने की अवश्य कृपा करेंगे, जिससे कि अगले संस्करण में सुधार किया जा सके। इस समय तो मुझे Don Carlos के इस कथन का स्मरण आ रहा है– Nothing would ever be written if a man waited till he could write it so well that no reviewer could find fault with it.

विनम्र

–(राजाराम जैन)

20.01.2008

बी-5/40 सी, धवलगिरि, सैक्टर-34,
नोएडा, (उत्तर प्रदेश) पिन नं. 201301
दूरभाष : 0120/2505808



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

# विषयानुक्रम—कडवकानुसार

मंगल-सन्देश ..... i
प्रकाशकीय ..... ii
प्रस्तावना ..... iii
विषयानुक्रम ..... xvii
मूल एवं हिन्दी-अनुवाद ..... 1
तिसट्ठिमहापुराणपुरिसआयारगुणालंकारु ..... 63
शब्दानुक्रमणिका ..... 71

कड. सं.

1. मगध-देशान्तर्गत-राजगृही के सेठ अर्हद्दास एवं सेठानी जिनमती के स्वप्नों का वर्णन। 1
2. चैत्र-शुक्ल-पंचमी के दिन पुत्रोत्पत्ति एवं उसका "जम्बू-स्वामी" नाम घोषित। 2
3. राजगृही के चार वणिक्-श्रेष्ठ अपनी-अपनी चार सुन्दर कन्याओं का जम्बू-स्वामी से परिणय करने का विचार करते है। 3
4. सागरदत्तादि वणिक्-श्रेष्ठ सेठ अर्हद्दास के पास जाकर अपनी चार कन्याओं का जम्बू-स्वामी के साथ परिणय-संस्कार करने हेतु निवेदन करते है। 4
5. कुमार जम्बू के विवाह की तैयारियाँ जब की जा रही थीं. तभी वसन्त-ऋतु का आगमन हो गया। समीपवर्त्ती उद्यान में क्रीडा करते समय वह एक दुर्धर मदोन्मत हाथी को वश में कर उसे वह राजा श्रेणिक को सौंप देता है, जिससे उसकी बडी प्रशंसा होती है। 5
6. राज्य-सभा में आलोकिनी-विद्या का स्वामी खेचर-गगनगति आकर मगधेश्वर से प्रार्थना करता है कि वह राजा मृगांक के शत्रु—हंस-द्वीप के खेचर-राजा के साथ युद्ध में राजा मृगांक की सहायता करें। 6
7. गगनगति-खेचर एवं कुमार जम्बू तथा मगधेश्वर का मनोरंजक वार्त्तालाप। अन्ततः गगनगति-खेचर के साथ नभोयान में बैठकर कुमार जम्बू शत्रु-खेचरराधिपति से युद्ध करने हेतु चल पड़ते हैं। 7
8. गगनगति-खेचर कुमार जम्बू को अपने नभोयान में बैठाकर केरलपुर ले जाता है और उसे राजा मृगांक के परम शत्रु रत्नचूल-खेचर की सुव्यवस्थित विशाल सेना के सम्मुख खड़ा कर उससे पूछता है कि क्या तुम स्थलचर होकर भी इस खेचर-सेना के साथ युद्ध कर सकोंगे ? 8
9. राजा मृगांक शत्रु-खेचर राजा रयणचूल के पास अपना दूत भेजता है। वह उसकी बैठक में पहुँच कर उसे न तो नमस्कार करता है और न ही बैठता है, प्रत्युत उसकी ओर आँखें तरेर कर देखता रहता है। फिर भी, वह उसे बैठने के लिये आसन दिलवाता है, जिस पर बैठकर वह दूत उसे सबक सिखाने का विचार करता है। 9
10. रयणचूल की बैठक में बैठकर कुमार जम्बू (दूत) ने रयणचूल को हितकारी शिक्षा देकर समझाने का प्रयत्न किया किन्तु उसका उस पर कोई प्रभाव नहीं पडा। इसके विपरीत वह उग्र हो उठा। उसके मन्त्री ने कुमार जम्बू को मारने की धमकी तक दे डाली। 10



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

11. रयणचूल एवं कुमार जम्बू की परस्पर में नोंक-झोंक। अपनी-अपनी शक्ति के वर्णन का रोचक-वर्णन। 11

12. शत्रु-खेचर रयणचूल एवं कुमार-जम्बू की दर्पोक्तियाँ/कुमार जम्बू गगनगति विद्याधर के विमान में सवार होकर युद्ध करना अस्वीकार कर समर-भूमि से ही युद्ध करते हैं। 12

13. रयणचूल-खेचर की अगणित–सेना के साथ कुमार-जम्बू अकेले ही तूफान जैसे भिड़ जाते हैं। यह देख कर लोग विस्मित होकर रह जाते है। 14

14. स्थल-युद्ध में कुमार जम्बू ने अकेले ही खेचर-शत्रु-सेना के साथ युद्ध किया और उसके आठ हजार सैनिकों को मार डाला। उधर गगनगति विद्याधर जब आकाश में विद्याद्यरों से जूझ रहा था, तभी उसका विमान खण्डित होकर पृथिवी पर जा गिरा। गगनगति भी मूर्च्छित हो गया। उसे उठाकर राजा मृगांक अपने घर ले जाता है तथा वह वहाँ उससे उस वीर बालक (जम्बू) का परिचय पूछता है। 15

15. रयणचूल-खेचर द्वारा बन्धक बनाये गये राजा मृगांक को बन्धन-मुक्त कराने हेतु खेचर-गगनगति जम्बू से निवेदन करता है। जम्बू-स्वामी वैसा करने के लिये तैयार हो जाते हैं. 16

16. जम्बू-स्वामी मृगांक के नगर की ओर जाते है। आकाशमार्ग में गगनगति अपना चीवर लहराकर मृगांक की भयभीत सेना को वापिस लौटकर शत्रु से युद्ध करने की प्रेरणा देता है। जम्बू-स्वामी शत्रु-खेचर-रयणचूल को बाहुयुद्ध करने का प्रस्ताव रखते हैं, जिसे रयणचूल रूष्ट होकर स्वीकार कर लेता है। 17

17. खेचर-रयणचूल एवं जम्बू का बाहुयुद्ध होता है। रयणचूल ही बाँह मरोड़कर जम्बू उसे बन्धक बनाकर भी छोड़ देता है। अपमानित रयणचूल नतमस्तक हो जाता है। गगनगति रयणचूल को कुमार जम्बू का परिचय देता है। राजा मृगांक जम्बू को प्रणाम कर उन्हें नगर-प्रवेश कराकर सम्मानित करता है। 18

18. केरलपुर-नरेश मृगांक ने कुमार जम्बू के कथन से शत्रु-खेचर-रयणचूल को बन्धन मुक्त ही नही किया बल्कि उसे सम्मानित भी करा दिया। वह भी प्रभावित होकर कुमार जम्बू के साथ मगधेश्वर राजा श्रेणिक से मिलने के लिये सदल-बल चलकर नर्मदा-नदी के तट पर पहुँचता है। 19

19. नर्मदा नदी के तट पर राजा श्रेणिक के स्कन्धावार में जम्बू कुमार पहुँचते हैं। श्रेणिक उन्हें अनन्य स्नेह प्रदान कर उनका माथा चूम लेते है। विलासवती के साथ विवाह कर राजा श्रेणिक जम्बू कुमार के साथ जब राजगृह पहुँचते है। तभी– 20

20. भ. महावीर के पाँचवें गणधर सुधर्माचार्य विहार करते हुए ससंघ वहाँ के उपवन में आते है। कुमार जम्बू उनसे अपने भवान्तर पूछते हैं, जिनका वे संक्षेप में कथन करते है। 21

21. भ. महावीर के पंचम गणधर आचार्य सुधर्म का स्वयं का भवान्तर-कथन। कुमार जम्बू उनके भवान्तर-कथन से प्रभावित होकर उनसे दीक्षा प्रदान करते हुए प्रार्थना करते है। 22

22. जम्बू कुमार सुधर्माचार्य से दीक्षा प्रदान करने हेतु बार-बार प्रार्थना करते है किन्तु आचार्य का स्पष्ट कथन है कि माता-पिता की आज्ञा प्राप्त कर आने के बाद ही दीक्षा प्रदान की जा सकेगी। 23

23. चरमदेही कुमार जम्बू के बार-बार प्रार्थना करने पर भी आचार्य सुधर्म ने माता-पिता की आज्ञा प्राप्त किये बिना जब दीक्षा नहीं दी, तब जम्बू धर आकर माता-पिता से आज्ञा प्रदान करने की प्रार्थना करते है। माता-पिता एवं पुत्र के मार्मिक संवाद का रोचक वर्णन। 24

24. कुमार जम्बू बार-बार अपनी स्नेहमयी माता को पुत्र-मोह छोडकर दीक्षा ग्रहण करने हेतु अनुमति माँगते 25



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

है। इसी बीच कन्याओं के पिता सागरदत्तादि सेठ अर्हद्दास के घर दसवें दिन वर-कन्या परिणय के महोत्सव के आयोजन हेतु सन्देश भेजते है।

25. कन्याओं के माता-पिता अपने-अपने दुर्भाग्य को कोसने लगते है। सर्वत्र उदासी का वातावरण छा जाता है। सेठ अर्हद्दास कन्या-पक्ष की ओर सन्देश भिजवाते है कि शीघ्र ही विवाह की तैयारी करें, जिससे कि जम्बू उन कन्याओं के साथ कम से कम एक रात्रि व्यतीत कर सके। 26

26. कुमार जम्बू के प्रवृज्या-ग्रहण का संकल्प जब वणिक्-पुत्रियों को बताया जाता है, तो उनमें से एक कन्या-पद्मश्री कहती है कि कुलीन कन्या का तो पूर्व निश्चित एक ही पति हो सकता है। अतः कुमार जम्बू हम लोगों के साथ परिणय-संस्कार कर कम से कम एक दिन हमारे साथ समय अवश्य व्यतीत करें। तत्पश्चात् वे जैसा चाहें, अपना निर्णय करें। 27

27. दीक्षा-ग्रहण करने हेतु कुमार जम्बू को दृढ़ संकल्पी जानकर वे कन्याएँ दूत के द्वारा पुनः सन्देश भिजवाती हैं कि तत्काल विवाह कर एक दिन विवाहित कन्याओं के साथ रहकर वे अगले ही दिन दीक्षा ले सकते है। 28

28. कुमार जम्बू का चार-वणिक्-कन्याओं के साथ विवाह सम्पन्न हो जाता है। जम्बू की माता जिनमती अपनी चारों पुत्र-वधुओं को एक व्यावहारिक सलाह देती है। 29

29. जम्बू कुमार अपनी नवविवाहिता पत्नियों के साथ रतिगृह में प्रविष्ट हुए। एक ओर उन्होंने पत्नियों का सौन्दर्य देखा तो दूसरी ओर अपने चैतन्य आत्मा के स्वरूप का चिन्तन करने लगे और दोनों की तुलना करने लगे। जम्बू की इस प्रवृत्ति से वे पत्नियाँ उदास हो गईं। 30

30. समय कम था और उन दृढ़-संकल्पी जम्बू को अपनी ओर रिझाना कठिन। फिर भी अपनी कामुक क्रियाओं एवं कथा-वार्त्ताओं द्वारा वे उसे रिझाने का प्रयत्न करती है। इसी प्रसंग में कमलश्री उन्हें धनदत्त की कहानी सुनाती है। 31

31. कमलश्री जम्बू कुमार के मन को अपनी ओर आकर्षित करने के लिये उस हालिक (किसान) धनदत्त की कहानी सुनाती है, जो वृद्धावस्था में एक सुन्दर किन्तु गर्वीली नवतरुणी से विवाह कर उसकी डाँट-फटकार सुन-सुनकर दुःखी रहने लगता है। 32

32. हालिक धनदत्त अपनी नवपत्नी के अनुरोध से अपने पुत्र को जान से मार डालने के उपाय पर दुःखी मन से विचार करता है। 23

33. अपनी नवोढा दुष्टा पत्नी के हठाग्रह से धनदत्त अपने कर्मठ प्रिय पुत्र की हत्या करने के लिये घर से प्रस्थान करता है किन्तु सहसा की एक ऐसा नाटकीय मोड़ आता है कि उसकी हत्या न कर वह उसे अपने गले से लगा लेता है। 34

34. कमलश्री के कथानक के उत्तर में कुमार जम्बू उसे माँस-लोलुपी कौए का कथानक सुनाकर बतलाते हैं कि किस प्रकार लालचवश वह दुखद मृत्यु को प्राप्त करता है। 35

35. कनकश्री जम्बू को बन्दर की कहानी सुनाकर उन्हें अपनी ओर मोहित करने का प्रयत्न करती है। 36

36. अपनी नवोढा पत्नी कनकश्री की कथा सुनकर उसके उत्तर में कुमार जम्बू भी उसे विषयाभिलाषी यूथाधिपति बन्दर की कथा सुनाकर कहते हैं कि दुर्गति से बचने के लिये कठोर तपस्या करना ही हितकारी होगा। 37



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

37. तीसरी नवोढा पत्नी नागश्री की कथा के अनुसार-संखिणी नामका लकड़हारा अपनी बचत का एक रूपया कलश में बन्द कर जमीन में गाड़ देता है। दूसरा धनी व्यक्ति भी अपनी समस्त सम्पत्ति उसके कलश में सुरक्षित कर देता है और चोरों से भयमुक्त होकर सूर्य-ग्रहण-स्नान के लिये वे दोनों चल पड़ते है। 38

38. नागश्री लालची लकड़हारे की कथा सुनाकर जम्बू को समझाती है कि उपलब्ध को छोडकर अनुपलब्ध को प्राप्त करने की आकांक्षा से व्यक्ति को शून्य ही प्राप्त होता है। 39

39. कुमार जम्बू नागश्री को एक वैराग्योन्मुखी कथा कहते हैं, तब उनकी चौथी पत्नी उसके उत्तर में साँप-छछूंदर की एक रोचक कथा उन्हें सुनाती है। 40

40. चौथी नवोढा दर्पीली पत्नी साँप-छछूंदर की कथा के माध्यम से साँप के समान ही अपने प्रियतम (जम्बू) को मूर्ख सिद्ध करती है। 41

41. चारों नवोढा पत्नियों की कथाएँ सुनते-सुनते तथा उनके उत्तर में जम्बू द्वारा वैराग्योन्मुखी कथाएँ सुनाते-सुनाते अर्धरात्रि व्यतीत हो गई। जम्बू कुमार पर उनका किसी भी प्रकार का प्रभाव नहीं पड़ा बल्कि इसके विपरीत पत्नियों में सद्बुद्धि का संचार हो गया। 43

42. विद्याचर-चोर चोरी करने के निमित्त से जम्बू के घर में आता है। जम्बू की माता उसे देखकर उसका परिचय पूछती है और परिचय जानकर कहती है कि मेरे यहाँ से जितना चाहो, उतना धन ले जा सकते हो। 44

43. जम्बू की माता के स्नेहिल स्वभाव से विद्याचर-चोर का हृदय-परिवर्तन हो जाता है। वह माता-जिनमती की बड़ी प्रशंसा करता है। 45

44. विद्याचर-चोर माता जिनमती को विविध प्रकार से आश्वासन देता है कि वह जम्बू कुमार को सांसारिक सुखभोगों के प्रति मोहित करने के प्रयत्न करेगा। किन्तु अपने उस कार्य में असफल हो जाने पर वह जम्बू के साथ ही मुनि-पद धारण कर लेने की प्रतिज्ञा भी कर लेता है। 46

45. माता जिनमती की सहायता से विद्याचर-चोर जम्बू का मामा बनकर उसके रतिगृह में प्रवेश करता है। स्नेहातुर होकर दोनों गले लगकर एक ही आसन पर बैठ जाते है। 47

46. मायावी मामा-विद्याचर कुमार जम्बू को संसार-भोगों में लिप्त रहकर वंशवृद्धि करते रहने का उपदेश देता है किन्तु जम्बू पर उसका कोई भी प्रभाव नहीं पडता। 48

47. विद्याचर के कथन के उत्तर में कुमार जम्बू सांसारिक सुख-भोगों को अनिष्टकर तथा परभव-विनाशक बतलाते हुए एक व्यापारी की कथा सुनाते हैं। 49

48. जम्बू कुमार भी अपने मायावी माता (विद्याचर-चोर) के लिये एक ऐसे वृद्ध व्यापारी की कथा सुनते हैं, जिसकी तरुणी स्वैरिणी भार्या अपने घर की समस्त सम्पत्ति लेकर भाग जाती है और धूर्तों के साथ रहकर सुख-भोग करती है। 50

49. वृद्ध व्यापारी की वह भगेडू दुष्टा भार्या एक धूर्त विट के साथ भाग जाती है। 51

50. वह भगेडू स्त्री विट के साथ रहते हुए एक निरपराध भट को कोटपाल द्वारा पकड़वाकर उसे पिटवा देती है और विट के साथ पुनः आगे भाग जाती है। बाद में वह धूर्त विट भी धोखे से उसके वस्त्राभरण आदि लेकर नदी के पार भाग जाता है। 52



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

51. कुमार जम्बू पुनः कल्पनाओं में भविष्य के सुखों के स्वप्न संजोये हुए विदेशों से आयात-निर्यात का व्यापार करने वाले रत्नों के एक व्यापारी का रोचक कथानक सुनाते हुए संसार के क्षणिक् सुखों से विराम लेने की सलाह देते हैं। 53

52. विद्याचर-चोर द्वारा कथित लोभी श्रृगाल के कथानक के उत्तर में कुमार जम्बू भी स्वप्न में राज्य प्राप्त कर सुखानुभव करने वाले दरिद्र लकड़हारे का रोचक कथानक सुनाकर नरभव की दुर्लभता तथा उसे सफल बनाने की शिक्षा प्रदान करते हैं। 54

53. विद्याचर जम्बू को वृद्ध वोडु नामक नट की रोमांचक कथा सुनाता है, जिसके उत्तर में जम्बू कुमार भी उसे वाराणसी के राजा लोकपाल की कथा सुनाना चाहते हैं। 56

54. राजा लोकपाल के समर-भूमि में जाने के बाद उसकी तरुणी महारानी एक सुवर्णकार-युवक पर आकर्षित होकर उसे अपने रतिगृह में बुलवाती है। उसी समय राजा भी घर में आ जाता है। अतः वह भयभीत होकर उस युवक को अपने भवन के पीछे छिपा देती है। 57

55. कामासक्त महारानी के जाल में फँसकर चंगा स्वर्णकार–युवक विविध प्रकार के कष्टों को सहता है। 58

56. संसार के क्षणिक्-सुखों का अनुभव कर विद्याचर-चोर का हृदय-परिवर्तन हो जाता है और जम्बू कुमार को अपना परिचय देकर वह अपने कुकृत्यों का प्रायश्चित कर सन्मार्ग की ओर बढता है। 59

57. कुमार जम्बू ने सुधर्म मुनिराज से दीक्षा ग्रहण कर बाह्यभ्यन्तर कठोर तपस्या प्रारम्भ कर दी। 60

58. जम्बू के माता-पिता एवं पत्नियों तथा विद्याचर-चोर ने भी सुधर्म मुनिराज से दीक्षा ले ली। सुधर्म मुनिराज को निर्वाण-प्राप्ति तथा उसी दिन जम्बू को कैवल्य-प्राप्ति हुई। 61

59. कठोर तपस्या के फलस्वरूप जम्बू-स्वामी को निर्वाण-पद की प्राप्ति हुई तथा विद्याचर-तस्कर भी कठोर तपस्या के फलस्वरूप ग्यारह अंगों के धारी होकर ससंघ विहार करते हुए पुरिमताल पहुँचे। 62

---



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

# प्रस्तुत पाण्डुलिपि का एक पृष्ठ



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

4877

## महाकवि रइधू-कृत–

# जंबू-सामि-चरिउ—

1

पुणु मागह-देसहि महिहि विसेसहि रायग्गिहि णिवसंतइणा।
जा कुल वणीसहु जाइ णिहीसहु दाण-पूय ववसंतइणा ।। छ।।

अरुहयास वणिणाहहु भज्जइ जिणमई णामइ ताम सलज्जइ।
णिय घरि सुंदरि ताई जि सुत्तिए दिट्ठा सुविणा पच्छिम-रत्तिए।
5 जंबू-तरु-फल-रिद्धि सइत्तउ णिद्धूमु जि हुयासु पह-दित्तउ।
सालि-छेत्तु-सहलु जि पुणु सरवरु कमलणिवासु तहवि रयणायरु।

घत्ता– पुणु ताइँ विहाणें विणय-पहाणें णिय णाहहु जि पउत्तउ।
ता सेट्ठि सभज्जो जिणहरि सज्जो आणंदिय मणु पत्तउ।। 1।।

---

### मगध देशान्तर्गत राजगृही के सेठ अर्हद्दास एवं सेठानी जिनमती के स्वप्नों का वर्णन

घत्ता– पृथिवी-मण्डल पर विशिष्ट कोटि के धार्मिक एवं सांस्कृतिक केन्द्र के रूप में सुप्रसिद्ध मगध देश की राजगृही नाम की नगरी में वणिक्-कुल में श्रेष्ठ, समृद्ध तथा दान-एवं पूजा-अर्चन में संलग्न रहने वाले–

अर्हद्दास नाम के एक व्यापारी निवास करते थे। उनकी धर्मपत्नी का नाम जिनमती था, जो स्वभाव से शील एवं लज्जालु-स्वभाव की थी। एक दिन उस सुन्दरी जिनमती ने रात्रि के अन्तिम प्रहर में सोते समय पाँच स्वप्न देखे, जिनके अनुसार उसने–

(1) सुन्दर जम्बू फलों से लदे हुए जम्बू-वृक्ष,
(2) प्रभा से दीप्तिमान निर्धूम अग्नि,
(3) शालि नामक धान के पौधों से समृद्ध हरा-भरा खेत,
(4) खिले हुए कमल-पुष्पों से युक्त सुन्दर सरोवर तथा–
(5) रत्नाकर (समुद्र) को देखा ।

घत्ता – अतः विनय-शीला वह सेठानी अगले ही दिन प्रमुदितमन से जिन-मन्दिर जाने के लिए तैयार होकर अपने स्वामी अर्हद्दास के पास पहुँची और अपने स्वप्न-दर्शन की बात उनसे कही।। 1।।



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



जिण वंदिवि पणविवि रिसिणाहहु सिविणय-फलु पुच्छियउ अवाहहु।
आहासइ-मुणिवरु-
जंबू रुक्ख-सहलें सुउ होसइ णिय रूवें मयणाहु णिरसेसइ।
हुववहेण कम्माइ डहेसइ.....
सालि वप्प दंसणि सिरिवासउ सरवरेण धुउ रयण णिवासउ।
5 सायरेण भवजलहि तरेसइ एरिसु सेट्ठि सुउ तउ होसइ।
तं णिसुणिवि आणंद-रसिल्लउ मुणिहु णवेप्पिणु सेट्ठि महल्लउ।
णिय मंदिरि सभज्जु संपत्तउ जा सुहु विलसइ धम्मासत्तउ।
ता सग्गाहु सत्तम दिणि सो सुरु चइवि ताहि गब्भहि संद्धिउ णिरु।
गुरु-भारहि अंगइ हुय सालस मुहु पंडुरु जिणधम्मासत्तउहु लालस।
10 हुवउ गब्भु कालें संपुण्णउँ चइत-सेय-पंचमिहि उवण्णउ।
पच्चूसिहिं रोहिणि णक्खत्तहिं मंगल-गीउ विहिउ ससिवत्तहिं।
वद्धावण तूरइँ बहु बज्जिय णं णव-घण-गयणयलहु गज्जिय।

घत्ता– सिविणय णिद्देसे मुणिउद्देसें जंबू सामि जि णामु तहु।
वणिणाहं वुत्तउ विहि समसत्तउ कियउ तेण वहु ।। 2।।

---

**चैत्रशुक्ल पंचमी के दिन पुत्रोत्पत्ति एवं उसका नाम "जम्बू स्वामी" घोषित किया गया।**

उन दोनों ने विघ्नहर श्री ऋषभनाथ-जिन की वन्दना कर वहाँ विराजमान मुनिवर से उन स्वप्नों का फल पूछा। उन्हें सुनकर मुनिराज ने बताया कि–

(1) जम्बू-फल सहित जम्बू-वृक्ष के देखने का फल यह है कि तुम्हें एक ऐसे पुत्र की प्राप्ति होगी, जो अपने सौन्दर्य से कामदेव को भी गौण कर देगा।
(2) निर्धूम-अग्नि के दर्शन से वह पुत्र अष्टकर्मों को दहन कर पाने में सक्षम होगा।
(3) शालि-धान के दर्शन से वह पुत्र लक्ष्मी अर्थात समृद्धि का स्वामी होगा।
(4) कमल-पुष्प युक्त सरोवर को देखने से वह रत्नत्रय का धारी बनेगा। और–
(5) सागर-दर्शन का फल यह होगा कि इस सेठ का वह पुत्र संसार रूपी सागर को पार करेगा।

मुनिराज के द्वारा स्वप्नों का सुखद एवं महान् फल सुनकर वह सेठ बड़ा आनन्दित होता हुआ, अपनी धर्मपत्नी के साथ घर आया और धर्मासक्त रहते हुए तथा सुख-भोग करते हुए समय व्यतीत करने लगा ।

स्वप्न-फल-श्रवण के सातवें दिन स्वर्ग से चयकर एक देव उस सेठानी के गर्भ में आया। गर्भ धारण करने के कारण उस सेठानी का शरीर भारी रहने लगा। अंग-प्रत्यंग शिथिल होने लगे, मुख पीला पड़ने लगा किन्तु धर्म के प्रति उसकी आसक्ति बढ़ने लगी। चैत्र सुदी पंचमी के दिन उसका गर्भ-काल पूर्ण होने पर प्रभात कालीन रोहिणी नक्षत्र में शिशु का जन्म होते ही चन्द्रमुखी महिलाओं द्वारा मंगल-गीत गाये जाने लगे, वधाई सम्बन्धी तूर-वाद्य तथा अन्य अनेक प्रकार के बाजे बजाये जाने लगे । ऐसा प्रतीत हो रहा था, मानों आकाश में नव-मेघ ही गर्जना कर रहे हों।

घत्ता– इस शिशु का स्वप्न के निर्देश तथा मुनिवर के द्वारा घोषित नाम 'जम्बू स्वामी' रखा गया । उस वणिक्नाथ अर्हद्दास ने भी यथोक्त विधियों पूर्वक समस्त क्रियाओं को सम्पन्न किया।। 2।।



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



सोलहवरिसमाणु संजायउ — कल णिउरुंबु सयल वि णायउ।
रायकुमारहिं सहुं सो कीलइँ — पेसणयारहि परिमिउ लीलइँ।
तायहु घर सरिं हंसुव अच्छइ — अणेक्कु जि तहिं वणिवरु णिवसइ।
उवहिदत्तु सावय-वय पोसइ.....
5 तहु पिय पोमावइ सुपसण्णा — पउमसिरि तहु भासिय कण्णा।
तहि जि कुवेरदत्तु पुणु वणिवरु — कणयमाल कंता हि हिययहरु।
कणयसिरी तहु दुहिय पउत्ती — लक्खण-रूव-कला-संहुत्ती।
तीयउ वइसवणु जि वणिसारउ — विणयमाल भज्जा हि मणहारउ।
विणयसिरी सुव विणएँ लीणी — जिणवर भणिय धम्मि सुपवीणी।
10 तुरियउ धणदत्तु जि वणि पुंगमु — विणयमई पियाहि कय संगमु।
रूव-लच्छि णामें तहु णंदणि — परियणयणहु चित्त आणंदिणि।

घत्ता– एयउ जि कुमारिउ जण मणहारिउ चारिवि तासु जि दिण्णियउ।
ताहं जि पियरहि विरु गब्भट्ठि ण्णिरु अण्णेणु जि पडिवण्णियउ।। 3।।

---

**राजगृही के चार वणिक्-श्रेष्ठ अपनी - अपनी चार सुन्दर कन्याओं का जम्बू स्वामी से परिणय करने का विचार करते हैं ।**

जब वह शिशु-–जम्बू स्वामी सोलह वर्ष का हुआ तभी उसने समस्त कलाओं में निपुणता प्राप्त कर ली। वह राजकुमारों के साथ क्रीडाएँ करता था। वह सुरक्षा-कर्मियों के साथ लीलाओं के साथ परिभ्रमण करता रहता था। अपने पिता के घर (राजभवन) में वह उसी प्रकार निवास करता था, जिस प्रकार कि हंस सरोवर में प्रमुदित होकर क्रीडाएँ किया करते हैं।

उस राजगृह नगर में जो अनेक वणिक्जन निवास करते थे, उन्हीं में से एक सागरदत्त (उवहिदत्त) नाम का भी वणिक् था, जो श्रावक-व्रतों का पोषक था।..... उसकी प्रियतमा का नाम पद्मावती (पोमावइ) था, जो बड़ी ही प्रमुदित मन वाली थी। उससे पद्मश्री नाम की एक कन्या थी। उसी नगर में कुबेरदत्त नाम का सहृदय वणिक् भी निवास करता था, जिसकी कनकमाला नाम की धर्मपत्नी थी । उससे कनकश्री नाम की एक सुलक्षणा पुत्री उत्पन्न हुई जो सौन्दर्य-सम्पन्न तथा समस्त कलाओं में निपुण थी।

उसी नगर में एक तीसरा वणिक्-श्रेष्ठ वैश्रवण भी रहता था, जिसकी विनयमाला नाम की मनोहारिणी पत्नी थी, उससे विनयश्री नामकी अत्यन्त विनयशीला पुत्री थी, जो जिनवरों द्वारा कथित धर्मागमों में अत्यन्त प्रवीण थी। वणिक्कुल में श्रेष्ठ माना जाने वाला चौथा धनदत्त सेठ भी था, जिसकी पत्नी का नाम विनयमती था। उसकी रूपलक्ष्मी नाम की पुत्री थी, जो समस्त परिवार जनों के लिए आनन्दित करने वाली थी।

घत्ता– समस्त जनों के मन का हरण करने वाली उन चारों कुमारियों के माता-पिता ने उनका परिणय उनकी स्वीकृति लेकर उस कुमार जम्बू-स्वामी के साथ करने का विचार किया।। 3।।



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



कण्णहिं मुणियउ सच्छच्छ-पारु होसइ पिउ वणिणाहहु कुमारु।
इय मण्णिवि णाणाविहु ताहि अब्भासियाइ पुणु ससिमुहाहि।
छंदालंकारु वि तक्कु-सच्छु लक्खणु लक्खु वि बुज्झिउ पसच्छु।
वीणा पमुहं जि वाईत्त सव्व सिक्खियइँ ताहि जो लोइ भव्व।
5 किं वण्णमि ताहँ जि रूव थत्ति अच्छर मणि भुज्जइ जाइ सत्ति।
हउँ जाणमि विहि सो अच्छि एक्कु जगउ सयलु घडइ पच्छण्णु थक्कु।
जिं घर आयहं किउ रूववण्णु सो को वि पयावइ मुणमि अण्णु।
णिय-णिय पुत्तिहुं लायण्णु वण्णु पेक्खेप्पिणु जोव्विणु अइक्खण्णु।
सायरदत्तहिं पमुहहिं जि तेहिं सेट्ठिहु घरि आविवि गउक्खेहिं।
10 विणएँ आहासिउ अरुहयासु चिरु पडिवण्णउ पालेहु आसु।
अम्हहं चउहं वि घरि जाय कण्ण तुम्हहं णिरु सुउ पुण्ण खण्ण।
एव्वहिं लइ तुव णंदणु जि ताउ परिणिउ अइरें सुललिय भुयाउ।

घत्ता– ता अरुहयासु वणि आणंदिउ मणि जंपइ भव्वु-भव्वु सयलु।
जं तुं मुहाहे वुत्तउ तं जि णिरुत्तउ मण इंच्छिउ जायउ सहलु।। 4।।

---

**सागरदत्तादि वणिक्-श्रेष्ठ सेठ अर्हद्दास के पास जाकर अपनी चार कन्याओं का जम्बूस्वामी के साथ परिणय-संस्कार करने हेतु निवेदन करते हैं–**

उन चन्द्रमुखी कन्याओं ने भी अपने मन में विचार किया कि जब आगम-शास्त्रों में पारंगत उस वणिक्नाथ के पुत्र जम्बू कुमार के साथ हमारा परिणय होना है, तब हम लोगों को भी नाना-प्रकार के ज्ञान-विज्ञान एवं कलाओं का ज्ञान होना चाहिए। अतः उन्होंने भी उनका अभ्यास प्रारम्भ कर दिया। उन्होने छंद, अलंकार एवं तर्क-शास्त्र, शरीर-लक्षण आदि का प्रशस्त ज्ञान प्राप्त कर लिया। वीणा प्रमुख जितने भी लोकप्रिय वाद्य थे, उन सभी को सीख लिया। यहाँ कवि स्वयं कहता है कि मैं उन कन्याओं के रूप-सौन्दर्य एवं कला-विज्ञान के नैपुण्य का कैसे वर्णन करूँ ? क्योंकि ऐसा प्रतीत होता था मानों अक्षर-रूपी-मणियों का भोजन ही उनका जीवन-शक्ति बन गया था। मैं यह भी जानता हूँ कि विधि के विधान की ही एक ऐसी प्रच्छन्न शक्ति है, जो समस्त जगत् की संरचना करती है और जिसने स्वयं ही हमारे घर आकर इन कन्याओं के सौन्दर्य-वर्ण की रचना कर दी है। निश्चय ही वह कोई अन्य प्रजापति ही है, ऐसा मैं मानता हूँ।

अपनी-अपनी कन्याओं के लावण्यपूर्ण अक्षय-यौवन को देखकर सागरदत्त आदि जो गौरवशाली प्रमुख वणिक्वर थे, वे सभी उस सेठ अर्हद्दास के घर आये और विनयपूर्वक उनसे निवेदन किया कि आपने जो पहले हमें वचन देकर आशान्वित किया था अब उसका पालन कीजिये। हम लोगों की चारों कन्याएँ परिणय के योग्य हो चुकी हैं उनके पुण्य भाग्य से आपका सुन्दर पुत्र भी परिणय के योग्य हो चुका है, अतः अब अपने नन्दन जम्बू स्वामी को वरयात्रा के साथ लेकर हमारे घर शीघ्र ही पधारें और उन ललित भुजा वाली कन्याओं के साथ उनका परिणय-संस्कार करें।

घत्ता– उन सभी का कथन सुनकर अर्हद्दास अपने मन में प्रमुदित हुआ और सभी को भव्य-भव्य कहकर कहा कि– आप लोगों ने अपने श्रीमुख से जो कुछ कहा है वह उत्तम है और उसने मेरी मन की इच्छा को सफल बना दिया है।। 4।।



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



ठविउ विवाह-लग्गु-सुह जोएँ आरम्भिउ पयरणु मण मोएँ।
पंच वि णिय-णिय मंदिरि संट्ठिय पाणिग्गहण कज्ज उक्कंट्ठिय।
धवलु-गीउ पंचहि घरि गिज्जइ मंगल-तूरह-पूरु सुणिज्जइ।
इय सामग्गि विहिज्जइ जामहि आउ वसंतु कालुक्खि य तामहि।
5 मलय-पवणु संचरइ सुहावणु णव-पल्लव-दल-सोहिउ-उववणु।
तहिमि समइ जिणमइयहि णंदणु सहयरेहि सहु मण आणंदणु।
करइ कील उज्जाणहिं जामहिं तहिं मइंधु करि पत्तउ तामहि।
दुद्धरु जलहर–सरु गज्जंतउ वइवसुव्व जण पलउ करंतउ।
सयलु लोउ तासु जि भय तट्ठउ राएं सहु वण्णाउ ख्णि णट्ठउ।
10 जंबू-सामि एक्कु पर थक्कउ अखुहिय मणु मेल्लिय तहिं हक्कउ।
तम पेच्छिवि तेण जि दट्ठोट्ठें खणि भूभंगाणय मणि रुट्ठें।
तं करि तिण समाणु सुगणंति पच्चारिउ कुमरेण तुरंतिं।
ता चिक्कार मुवंतु वि धाविउ कुंभच्छलि सा कुमरें धाविउ।
भय-विमुक्कु कडुवाविउ कुंजरु थिउ ऊँणामिय करुणं मंजरु।
15 वसि किउ करि तेण जि विण्णाणें पुणु तहु खंधि थियउ संठाणें।

---

**कुमार जम्बू के विवाह की तैयारियाँ जब की जा रहीं थीं, तभी वसन्त ऋतु का आगमन हो गया। समीपवर्त्ती उद्यान में क्रीड़ा करते समय वह एक दुर्धर मदोन्मत हाथी को वश में कर उसे वह राजा को सौंप देता है, जिससे उसकी बड़ी प्रशंसा होती है।**

शुभ-योग में विवाह की प्रमोदकारी लग्न निश्चित कर दी गई उसकी तैयारियाँ भी प्रारम्भ कर दी गईं। वर एवं कन्या पक्ष के पाँचों ही जन अपने-अपने भवन में पाणिग्रहण सम्पन्न कराने के लिए उत्कण्ठित थे। पाँचों ही भवनों में धवल-गीत गाये जा रहे थे तथा मांगलिक तूरों के निनाद को सारे नगर में सुना जा सकता था।

जब इस प्रकार की तैयारियाँ की जा रही थीं तभी वसन्त-ऋतु का आगमन हो गया। सुहावनी मलय-पवन का संचार हो रहा था, उपवन नव-नव पल्लवों से सुशोभित हो रहा था।

उस समय जिनमती के मन को आनन्दित करने वाला उसका नन्दन जम्बू स्वामी अपने सहचरों के साथ जब उद्यान में क्रीड़ाएँ कर रहा था तभी एक मदोन्मत्त हाथी वहाँ आ पहुँचा। वह बड़ा ही दुर्धर एवं मेघों के समान गर्जना करता हुआ वइवस (यमराज) के समान नर-संहार कर रहा था। सभी जन वहाँ भयत्रस्त थे। राजा के साथ-साथ वहाँ के सभी लोग भागने लगे। उस समय वहाँ केवल कुमार जम्बू स्वामी ही रह गया। उसने निर्भीकता पूर्वक उसे हाँका। यह देखकर उस हाथी ने मन में रुष्ट होकर जम्बू को अपने दाँत एवं ओठों से प्रहार कर तथा अपनी भृकुटियों को चढ़ाकर क्रोध प्रदर्शित किया किन्तु कुमार जम्बू ने उसे तिनके के समान क्षुद्र मानकर उसे तुरन्त पुचकारा (प्रेम प्रदर्शित किया)। वह हाथी चिक्कारता हुआ तुरन्त दौड़ा तभी जम्बू ने दौड़कर उसके कुम्भस्थल पर प्रहार किया। फलस्वरूप वह कुंजर (हाथी) मदोन्मत्तता तथा कटुता छोड़कर सूँढ को विनम्र कर वहीं स्थित हो गया मानों कुमार से वह करुणा की भीख माँग रहा हो। इस प्रकार जम्बू कुमार ने अपने मनोविज्ञान से उस हाथी को अपने वश में कर लिया और उसके कन्धे पर सवार होकर वह–



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

घत्ता– पुर मज्झि पइट्ठउ लोयहि दिट्ठउ राणाउ मणि आणंदियओ।
जंपइ तुहुँ धण्णउ महियलि पुण्णउ जंपइ करिवरु बंधियओ।। 5।।

## 6

अण्णहिं दिणि सहु जंबु कुमारें जायहु संट्ठिउ सहहि सुसारें।
ता किंकिणि रव मुहाहलु तुरंतउ दिव्व-विमाणु तच्छ संपत्तउ।
कणयाहरणा-विहसिय गत्तें जय कारिवि तिं राउ तुरंतिं।
आहासइ सोय चरिउ कयायरु अच्छि पयडु वेयड्ढु जि गिरिवरु।
5 गयणगइं णामें हउँ खेयरु तेच्छु वसमि हउँ बहु-विज्जाहरु।
आलोयणि-विज्जइ महु अज्जजि लक्खेप्पिणु अक्खिउ जं कज्ज जि।
तं तुव कहंमि णिसुणि मगहेसर जइवि हउँ जि उत्ताबलु णिववर।
मलयगिरिंद णियडि केरलउरु णिउ मियंकु णावइ रूवें सुरु।
तिं महु मलयलया सस परिणिय ताहि गब्भिय सुव ससि वयणिय।
10 णाम विलासमइं सुह-लक्खण हंसदीव खयरेण वियक्खण।
सा मग्गिय तेण जि णउ दिण्णी केरलउरु तिं रुहु रवण्णी।
णासेसइ पुरदेसइ भग्गइं अण्णोण्णइँ तेआहवे लग्गइं।

---

घत्ता– राजगृह नगर के मध्य में जब प्रविष्ट हुआ तब सभी नगर वासियों ने उसे देखा। वहाँ का राजा भी आनन्दित हो उठा और बोला– "हे कुमार जम्बू, तुम धन्य हो, पृथिवी मण्डल के पुण्य-पुत्र हो।" यह कहकर उसने उस हाथी को (हस्तिशाला में) बँधवा दिया।। 5।।

**राज्य – सभा में आलोकिनी-विद्या का स्वामी खेचर गगनगति आकर मगधेश्वर से प्रार्थना करता है कि वह राजा मृगांक के शत्रु-हंसद्वीप के खेचर के साथ युद्ध में राजा मृगांक की सहायता करे।**

अन्य किसी दूसरे दिन जब वह चतुर कुमार जम्बू राजा के साथ राज-सभा में बैठा था, तभी किंकिणियों का मधुर गुंजार करता हुआ एक दिव्य-विमान आकाश-मार्ग से वहाँ उतरा। स्वर्णाभरणों से विभूषित-गात्र वाले देव ने शीघ्र ही राजा की जय-जयकार की और बोला– 'हे कृतकार्य राजन्, यहाँ वैताढ्य नामका एक पर्वत है, मैं वहीं पर रहता हूँ। मेरा नाम गगनगति खेचर (विद्याधर) है। उस पर्वत पर और भी अनेक विद्याधर निवास करते हैं।

मैंने आलोकिनी-विद्या सिद्ध (अर्जित) की है। उसका प्रयोग कर ही मैं आपको बतला रहा हूँ। यदि मेरे योग्य कोई कार्य हो तो बतलाइये। मैं उसे कर दूँगा। हे नृपवर, हे मगधेश्वर, और भी सुनिये–

मलयगिरि के निकट ही केरलपुर नाम का देश है, वहाँ देव के समान सुन्दर मृगांक नाम का राजा राज्य करता है। उसका विवाह मेरी बहिन मलयलता के साथ हुआ है (अर्थात् वह मेरा बहिनोई है)। उसके गर्भ से चन्द्र के समान मुख वाली एक सुन्दर सुलक्षणा बुद्धिमता कन्या उत्पन्न हुई जिसका नाम विलासवती है। हंसद्वीप के खेचर (विद्याधर) ने उसे अपने लिए माँगा है किन्तु उसके पिता (मृगांक) ने उसे देने से इंकार कर दिया है। इस कारण उस खेचर में एवं राजा मृगांक में परस्पर में शत्रुता बढ़ रही है। वह खेचर इतना रूठ गया है कि अब वह उसका केरलपुर देश, नगर आदि को नष्ट करने की तैयारी में लग गया है।



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

घत्ता– मुणिवर-आएसें राय विसेसें सा परिणेव्वी पइं जि णिरु।
तहि हउँ पह गच्छमि एच्छु ण अच्छमि फेडमि जाइवि अरि तिमिरु।। 6।।

7

तुव अच्छाणु रायमइँ लक्खिउ णहि जंतिं तिं वइयरु अक्खिउ।
एम भणेवि खयरु जा चल्लिउ जंबु कुमारें तो सो बोल्लिउ।
थाहि-थाहि हउँ तच्छ जि आवमि भंगावत्तु अरिहु दंसावमि।
ता हसंतु खयरेसरु जंपइ चंदहु कंक्खो फंसइ संपइ।
5 सउ दिवट्ठु जोयण इह होंतउ केरलपुरवरु होइ महंतउ।
तुहुँ भूगोयरु किम जाएसहि मइँ जाएव्वउ अज्ज विसेसहि।
भणइँ कुमरु तुहुँ मज्झु जि एक्कहु णेहि तच्छ णेहेण गुरुक्कहु।
जेम मियंक णरेसहु जयसिरि वसइ भुयादंडहि सुमणोहरि।
सुणिवि एम विज्जाहरु कंपिउ काइं एण बालें किर जंपिउ।
10 को रवि-गमणु खलइ णहि जंतहु रूवें जिणइं कवणु रइकंतहु।

---

घत्ता– अतः हे राजन्, मुनिवर के आदेश एवं केरलपुर के राजा मृगांक के कथनानुसार आप स्वयं उसकी पुत्री विलासवती के साथ परिणय कर लीजिये। अभी मैं यहाँ नहीं रुकूँगा, यहाँ से जाऊँगा जिससे कि उस खेचर-शत्रु रूपी अन्धकार को नष्ट कर सकूँ।। 6।।

**गगनगति-खेचर एवं कुमार जम्बू तथा मगधेश्वर का मनोरंजक वार्त्तालाप। अन्ततः गगनगति-खेचर के साथ नभोयान में बैठकर कुमार जम्बू शत्रु-खेचराधिपति से युद्ध करने हेतु चल पड़ता है।**

आकाश मार्ग में चलने को उद्यत वह विद्याधर गगनगति मगधेश्वर से बोला– 'हे राजन्, आपकी उत्तम राजनीतिज्ञता को मैंने परख लिया है।' उसे जाते हुए देखकर कुमार जम्बू ने उससे कहा– "अरे विद्याधर, तुम रुको-रुको। मैं रणक्षेत्र में चल रहा हूँ तथा शत्रु-खेचर का मान-मर्दन कर उसे पराजय का मार्ग दिखा दूँगा।"

कुमार जम्बू का यह कथन सुनकर वह खचरेश्वर गगनगति (व्यंग्य पूर्वक) हँसते हुए तत्काल बोला– "तुम्हारा यह कथन तो उसी प्रकार का है जैसे कोई चन्द्रमा को प्राप्त करने की आकांक्षा करे। उस शत्रु-खेचर से जाकर उलझने में तुम बुरी तरह फँस (पराजित हो) जाओगे (अर्थात् एक तो तुम अनुभव-विहीन स्थलचर-बालक हो और वह अनुभवी शक्तिशाली विद्याधर। तुम उससे कभी भी जीत नहीं सकोगे।) और भी, कि इस राजगृही से वह केरलपुर 1008 योजन की दूरी पर स्थित है और तुम भू-गोचर हो। अतः तुम वहाँ पहुँचोगे कैसे? (तुम वहाँ पहुँच ही नहीं सकते) किन्तु मुझे तो वहाँ विशेष रूप से आज ही पहुँचना जरूरी है (अतः मैं अब चल रहा हूँ।)"

गगनगति का कथन सुनकर कुमार जम्बू ने कहा "हे खेचर, तुम तत्काल ही मुझ अकेले को अपने विमान में ले चलो । मेरा (शारीरिक–) बोझ अधिक नहीं है। जिससे कि मैं चलकर (केरलपुर-नरेश) मृगांक की सहायता कर सकूँ। क्योंकि उनकी सुमनोहारी जयश्री तो मेरे भुजदण्ड में ही निवास कर रही है।"

कुमार जम्बू का यह (बड़बोला–) कथन सुनकर वह गगनगति-खेचर काँप उठा और मन में सोचने लगा कि– "मैंने इस बालक के सम्मुख मगधेश्वर से राजा मृगांक के लिये क्यों सहायता माँगी? क्या कोई नभमार्ग में चलते हुए सूर्य की गति को स्खलित कर सकता है ? रतिकान्त (चन्द्र) के सौन्दर्य को क्या कोई जीर्ण-शीर्ण कर सकता



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

को ठा-फणिहुं फणामणि तोडइ — को भूगोयरु खयरहु मोडइ।
ता विहसेप्पिणु जंपइ राणउ — को वि ण महियलि एह समाणउ।
एक्कु वि अरियणह ण समच्छें — अइरावइ करि कर किर हच्छें।
एयहु णेहिं म संसउ भावहि — जिम मण इंच्छिउ जय फलु पावहि।

15 घत्ता– णिव-वयणु सुणेप्पिणु विणउ करेप्पिणु णह-जाणम्मि कुमारु खणि।
आरोप्पिउ खयरें धारिवि सयरें चलिउ खयरु अइरें गयणि।। 7।।

**8**

पुरलोयहु रायहु पेच्छंतहु — हुवउ अदंसणु कुमरु णियंतहु।
तक्खणेण पुणु बाहु विसालें — णिवेण वि सज्जिय सहसु जसालें।
चाउरंगु-बलु दुद्धरु सज्जिउ — समर-तूरु अरि भययरु वज्जिउ।
जोत्तिय रह-तुरंग-पल्लाणिय — सुहड-विंद वीडइं सम्माणिय।
5 केरलउरि मगहेसरु चल्लिउ — णं पलयहु सायरु उच्छल्लिउ।
जंतउ विंझायल-तडि पत्तउ — वेणा-णइहिं तीरि भय चत्तउ।

---

है ? शेषनाग के फण को तोड़कर क्या कोई उसकी मणि को प्राप्त कर सकता है ? हे कुमार जम्बू, तुम भू-गोचर होकर क्या उस शत्रु-खेचर को मोड (पराजित कर) सकते हो?"

गगनगति का यह कथन सुनकर मगधेश्वर ने हँसते हुए पुनः कहा– "हे खेचर, (ध्यानपूर्वक–) सुनो। पृथिवी-मण्डल पर इस कुमार-जम्बू के समान दूसरा कोई शक्तिशाली नहीं। इसके सम्मुख कोई भी अरिजन नहीं ठहर सकता। ऐरावत हाथी की सूँड के आगे क्या कोई सामान्य हाथी ठहर सकता है ? तुम इस कुमार को ले जाओ (इसकी अतुल्य शक्ति के विषय में–) किसी भी प्रकार की शंका मत करो और मन में अभिलषित इच्छा को, जयश्री प्राप्त कर पूर्ण करो।"

घत्ता– इस प्रकार मगधेश्वर का कथन सुनकर, उनको विनम्र प्रणाम कर, उस खेचर गगनगति ने कुमार जम्बू को अपने नभोयान (विमान) में बैठाया और वहाँ से तत्काल ही गगन-मार्ग से चल पड़ा।। 7।।

**गगनगति-खेचर कुमार जम्बू को अपने नभोयान में बैठाकर केरलपुर ले जाता है और उसे राजा मृगांक के परमशत्रु रत्नचूल-खेचर की सुव्यवस्थित विशाल सेना के सम्मुख खड़ाकर उससे पूछता है कि क्या तुम स्थलचर होकर भी इस खेचर-सेना के साथ युद्ध कर सकोगे?**

नभोयान के चलते ही नगरवासियों तथा राजा के देखते ही देखते वह कुमार जम्बू सबकी दृष्टि से ओझल (अदृश्य) हो गया।

विशाल बाहुओं वाला यशस्वी निर्भीक वह मगधेश्वर भी तत्क्षण ही तैयार हो गया। उसने अपनी दुर्धर चतुरंगिणी सेना को तैयार किया। शत्रुजनों को भयभीत कर देने वाला समर-तूर बजवा दिया गया। रथों में पलानों से सुसज्जित घोड़ों को जोत दिया गया। सुभटों को पान के बीडों से सम्मानित किया गया। इनके साथ वह मगधेश केरलपुर की ओर (विविध हुंकारो के साथ) इस प्रकार चला, मानो समुद्र में प्रलयकालीन उछाल ही आ गया हो।

चलते-चलते जब सदल-बल वह निर्भीक मगधेश विन्ध्याचल-तट के पास वेण्णानदी के तीर पर पहुँचा तब मगधेश का सैन्य-समुदाय वहीं रुका जहाँ कि कुमार जम्बू उस खेचर गगनगति के साथ रुका हुआ था। विश्राम करने के बाद



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आवासिउ वलु रायहु बलु जामहिं जंबू सामि वि खेयरु तामहिं।
णिविसेण जि केरलपुरि पत्ता ईसावस मह कोह-पलित्ता।
हय-गव-रह-भड किय कोलाहलु सेट्ठि सुवें पेच्छेप्पिणु तं बलु।
10 विंभिय मणेण गयणगइ पुच्छिउ किं इहु दीसइ भणु महु णिच्छउ।
तं णिसुणेवि वियच्चरु भासइ इहु सो जो अण्णाउ पयासइ।
इहु सो जो णिव कण्णा मग्गइ इहु सो रयणचूलु खगु लग्गइ।
इहु अरि विसमु रणंगणि हुज्जउ तहु खंधारु एहु सुसहिज्जउ।

घत्ता– तं वयणु सुणेप्पिणु ईसि हसेप्पिणु जंपइ जंबूसामि तहु।
15 खंधारहु सम्मुहु णह-जाणु जि तुहु खंचहि पेच्छहि चरिउ महु।। 8।।

9

ता खयरेण विमाणु विलंविउ णहयलाउ महियलि ऊलंबिय।
जंबु कुमारु खणेणोत्तिण्णउं पइसइ खंधारम्मि पसण्णउ।
पेक्खंतउ खंधारु विचित्तउ रावल-वारि वीर रुसंत्तउ।
कंचण दंडिं मंडिय हच्छें पडिहारु जि तिं विणय पसच्छें।
5 भणिउं जणावहि राय मयंकहु दूउ परिट्ठिउ वारि अवंकहु।

---

ईर्ष्यावश महान् क्रोध से उबलते हुए वे सभी वहाँ से चलकर केरलपुर जा पहुँचे। वहाँ घोडों, हाथियों, रथों एवं भटों ने कोलाहल मचा रखा था। सेठपुत्र उस कुमार जम्बू ने शत्रु-सेना का निरीक्षण किया। विस्मितमन होकर गगनगति खेचर ने उससे पूछा "इस सेना को देखकर तुमने अपने मन में क्या निश्चय किया, हमें बताओ।" यह सुनकर एक विद्याधर ने कहा कि– "यह सब सैन्य-समुदाय का जमावडा तो शत्रु-खेचर के अन्याय को ही प्रकाशित करता है। यह जो शत्रु नृपकन्या (विलासवती) को अपने लिये माँग रहा है, वह मुझे रत्नचूल-खग (खेचर) जैसा लग रहा है। यह शत्रु-खेचर रणक्षेत्र में अत्यन्त दुर्धर सिद्ध होगा। उसी का यह सुसज्जित स्कन्धावार सामने खड़ा हुआ है।

घत्ता– उस विद्याधर का यह कथन सुनकर कुमार जम्बू स्वामी ने कहा– "इस स्कन्धावार के सम्मुख तुम अपने नभोयान को और आगे खींचो (बढाओ), फिर तुम मेरा चरित्र अर्थात् मेरा युद्ध-कौशल देख लेना।। 8।।

**राजा मृगांक शत्रु-खेचर राजा रयणचूल के पास अपना दूत भेजता है। वह उसकी बैठक में पहुँच कर उसे न तो नमस्कार करता है और न ही बैठता है, प्रत्युत उसकी ओर आँखें तरेर कर देखता रहता है। फिर भी, वह उसे बैठने के लिए आसन दिलवाता है, जिस पर बैठकर वह दूत उसे सबक सिखाने का विचार करता है।**

तभी उस खेचर गगनगति ने अपने विमान (नभोयान) को रोका और उसे नभस्तल (आकाश) से महीतल पर उतारा। कुमार जम्बू तत्काल ही उससे उतरकर बाहर आया और प्रमुदित-मन से उस शत्रु-खेचर के स्कन्धावार में प्रविष्ट हो गया।

स्कन्धावार की विचित्रता देखकर रावल (राजा) के द्वार पर वीर-भट रूठने लगे। स्वर्णदण्ड मण्डित हाथ वाले प्रतिहारियों से उसने अत्यन्त विनय पूर्वक कहा– "सरल स्वभावी राजा रयणचूल के लिए जाकर बतला दो कि तुम्हारे द्वार पर राजा मृगांक का एक दूत आकर उपस्थित हुआ है।" एक प्रतिहारी राजा की बैठक में प्रविष्ट हुआ और खेचर-राजा रयणचूल के चरणों में नमस्कार कर उसने कहा– शत्रु रूपी अन्धकार को नष्ट करने वाले, हे परमेश्वर, राजा मृगांक



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पडिहारें अच्छाणि पईसिवि रयणचूल णिव पाय णमंसिवि।
कहिउ मियंक दूउ परमेसर अच्छइ वारि वइरि तमणेसर।
लहु पइसरउ णिविण पउत्तउ तें पइसारिउ सो जि णिरुत्तउ।
रयणसिहं णावंतउ दिट्ठउ मणि अच्छरिउ जि तासु पइट्ठउ।
10 दुण्णिरिक्खु णियं तणु उज्जोएं किं सुरवइ आयउ किय मोएं।
सुथिर दिट्ठि रयणसिहि उक्कंट्ठिउ णिव अच्छाणहं मज्झि पइट्ठउ।
रयणाहरणहि मंडिय विग्गहु करि-सुंडोवम-भुय कय विग्गहु।
दूवत्तणु किम एयहु हुज्जइ ण वयइ ण वइसइ दिट्ठिए तज्जइ।

घत्ता– इय चिंतिवि खयरें पविहिय वइरें देवाविउ आसणु जि तहु।
15 लइ-लइ एयहु मणु हउँ पेच्छमि खणु इम मण्णंतें तेण लहु।। 9।।

## 10

वइसिउ कुमारु तहिं ण किउ खेउ मणिचूलहु अक्खइ सावलेउ।
हउँ भणमि हियच्छें तुज्झु राय परमच्छें णिसुणहिं मज्झु वाय।
दप्पुब्भड बुज्झहि सहिउ कज्जु मा समरंगणि डज्झेहि अज्जु।
अणयारु म दंसहि एच्छु लोइ जो दुग्गइ-पह संबलउ होइ।

---

(केरलपुर खेचर – नरेश), का दूत आपके द्वार पर खड़ा है।" यह सुनकर उस शत्रु-खेचर ने आदेश दिया कि– "उस दूत को शीघ्र ही मेरे सम्मुख उपस्थित करो।" जब उस शत्रु-खेचर रयणसिंह ने उस दूत को अपने आस्थान की ओर आता हुआ देखा तो वह अपने मन में आश्चर्यचकित हो उठा जिसके तन से निकलने वाली मोदकारी उद्योत (तेजस्विता) दुर्निरीक्ष्य थी। ऐसा प्रतीत हो रहा था मानों रणभूमि में जाने के लिए उत्कण्ठित वह सुरपति-इन्द्र ही उस के रूप में आ गया हो। सुस्थिर (एकटक) दृष्टि से देखता हुआ वह रयणचूल अपने आस्थान (बैठक) में आकर बैठ गया। रत्नाभरणों से विभूषित, हाथी की सूँड के समान भुजदण्ड तथा सुगठित सुन्दर शरीर वाले उस दूत को देखकर वह रयणचूल सोचता है कि– "क्या दूत ऐसा ही (शिष्टाचार-विहीन) होता है, जो न तो मुझे नमस्कार करता है और न ही बैठता हैं और जो तर्जना भरी दृष्टि से देख रहा होता है।"

घत्ता– अपने मन में ऐसा विचार कर उस (शत्रु – खेचर रयणचूल), ने उसे अपना शत्रु समझकर भी उसे बैठने के लिए आसन दिलवाया। उस दूत ने भी मन में सोचा कि उस आसन को अभी तो ले ही लूँ। बाद में तो मैं इसे देख ही लूँगा (अर्थात् सबक सिखा ही दूँगा)।। 9।।

**रयणचूल की बैठक में बैठकर कुमार जम्बू ने रयणचूल को हितकारी शिक्षा देकर समझाने का प्रयत्न किया किन्तु उसका उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा । इसके विपरीत वह उग्र हो उठा। उसके मन्त्री ने कुमार जम्बू को मारने की धमकी तक दे डाली।**

वह कुमार जम्बू रयणचूल द्वारा प्रदत्त उस आसन पर अपने क्षोभ को प्रकट किए बिना ही बैठ गया और बिना किसी लाग-लपेट के (अर्थात् बिना भूमिका बाँधे ही) मणिचूल (रयणचूल) से बोला– "हे राजन्, तुम्हारा हितेच्छु होने कारण तथा तुम्हारे परमार्थ के लिए ही मैं तुम्हें यह सलाह दे रहा हूँ। हे आर्य, उसे सावधानी पूर्वक सुनो। दर्पोद्धत होने से प्रयोजन की कहीं सिद्धि होती है ? समरांगण में अपने को भस्म मत कर डालो। इस जगत् में अपना अनाचारी रूप मत दिखाओ क्योंकि वह अनाचार ही दुर्गति-पथ के लिए संबल (कलेवा, नाश्ते) का काम करता है। जिस कन्या के माता-पिता ने उसे



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

5 जा जणणी जणणहि दिण्ण कण्ण सेणिय रायहु रूवें पसण्ण।
तहि कारणि जंतु करहि गाहु तं हाणि तुज्झु णउ कें पि लाहु।
जाणंतु वि मुज्झहि काइं चित्ति अज्जावि मेल्लहि असगाहु झति।
सुर-णर-कंपावणु लंकराउ गउ खयहिं पयडु परतिय सराउ।
परतिय दोसें के-के ण णट्ठ किच्चय पमुह जि णरयहिं पइट्ठ।
10 रे-रे मंतिहु रायहु कुमंत्तु किं देहु तुम्ह धिट्ठहु सतंत्तु।
ण णिवारहु एयहु कुपहि जंतु णिज्झयमणु पुणु-पुणु इम चवंतु।
जिहं-जिहं जंपइ कुमरु जि अणिंदु तिह-तिह कंपइ कोहें खगिंदु।
दट्ठाहरु भासुरु रत्त-चक्खु दिट्ठउ खयरें णिय मंति पक्खु।

घत्ता– णिय पहु जि विरुद्धउ जाणिवि कुद्धउ मंतिहिं ता जि पउत्तऊ।
15 हो-हो साहस गिरा अणमिय णिय सिर जंपि म वि ण पंचतऊ ।। 10।।

**11**

एही जीहा अण्णहु ण कासु जा फरुसक्खर भासइ णिवासु।
भो दूव-दूव साहसिउ होसि एव्वहिं लहु जाहि सपक्ख पोसि।
ता रोसंतरियउ भणइ वीरु तिण सम गणंतु भडयणहँ धीरु।

---

(विलासवती को) सौन्दर्य-सम्पन्न राजा श्रेणिक को प्रदान कर दी है, उसी के लिए तुम इतनी कलह कर रहे हो? इससे तुम्हारी हानि ही होगी, लाभ कुछ भी नहीं। यह जानते हुए भी तुम अपने चित्त में उस कन्या के प्रति मोहित क्यों हो रहे हो ? अतः अब इसी समय से उसके प्रति अपनी मोह-ममता को छोड़ दो। सुरों एवं मनुष्यों को भी कँपा देने वाला लंकापति रावण परस्त्री के प्रति अनुरागी रहने के कारण ही मारा गया था, यह सर्वविदित ही है। परस्त्री को चाहने के दोष के कारण कौन-कौन अपने नाश को प्राप्त नहीं हुए ? और कितने ही प्रमुख जन मरकर नरकवासी नहीं हुए ? अरे-अरे मन्त्रीजनो, तुमने इस धृष्ट राजा (रयणचूल) को निरन्तर गलत सलाहें क्यों दी? इसे कुमार्ग में जाने से तुम लोगों ने रोका क्यों नहीं ?" (वस्तुतः यह दूत अन्य कोई दूसरा नहीं, बल्कि राजनीति-प्रवीण कुमार जम्बू ही था)।

जैसे-जैसे निर्भीक मन से वीर अनिन्द्य कुमार जम्बू बार-बार अपने कथनों को दुहरा रहा था, वैसे ही वैसे वह रयण चूल क्रोध से काँपा जा रहा था। वह अपने ओठ चबाए जा रहा था और उसके नेत्र मानों रक्त को बहाते जा रहे थे। अपने स्वामी रयणचूल की यह स्थिति जब उसके मन्त्री ने देखी तो–

घत्ता– अपने प्रभु (रयणचूल) के विरुद्ध लगाए गये आरोपों से क्रुद्ध होकर एक मन्त्री कुमार जम्बू से बोला– "अरे-अरे, इतनी दुस्साहस भरी वाणी बोलने वाला तू वही तो है, जो नमस्कार करने का शिष्टाचार भी नहीं जानता। सिर झुकाना भी नहीं जानता। अब अधिक मत बोल, नही तो तुझे यहीं मार दूँगा।" ।। 10।।

**रयणचूल एवं कुमार जम्बू की परस्पर में नोंक - झोंक। अपनी-अपनी शक्ति के वर्णन का रोचक-प्रसंग।**

(क्रुद्ध मन्त्री दहाडकर पुनः कहता है–) ऐसी जिह्वा वाला अन्य किसी को नहीं देखा, जो हमारे ही राजनिवास में आकर हम से ही ऐसे कर्कश-वचन बोले। हे दूत, तू भले ही साहसी हो, फिर भी तत्काल ही यहाँ से चला जा और अपने राजा का पोषण (सेवा – सुरक्षा) कर।"

मंत्री का अपमान जनक कथन सुनकर धीर-वीर जम्बू कुमार रुष्ट होकर बोला– "तेरे भटजनों को तो मैं तृण के समान समझता हूँ। हे मन्त्री, तू ही यहाँ का (सबसे बड़ा–) खल (दुष्ट) है। अपने प्रभु (स्वामी) एवं उसके राजनिवास



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रे-रे खल मंतिहु तुम्हि एहु पहु वसणण्ण विच्छुद्धउ मुणेहु।
5 कज्जाकज्ज ण जाणेहु किं पि जं णिय मणि रुच्चइ करहु तंपि।
णिव चंदगइहु रणि अजय-वाण छंडहु विग्गहु तेण जि समाण।
णिय गेहि जाहु कुसलेण अहु महु एहु वयणु मणि धरहु सहु।
णं तो खल पाव णिसायरेण खज्जेसहु इह दुण्णययरेण।
ता रयणचूलु जंपइ सकुद्धु णं पंचाणणु हच्छिहु विरुद्धु।
10 रे दूव णिरग्गल दुण्णिवार केत्तिउ अवगण्णहिं बार-बार।
महु भएण पुरिहिं पइसिवि मियंकु थक्कउ णउ णिग्गच्छइ ससंकु।
तुहु चवहि काइ एवहु जि गव्वु तहु दलु संघारमि समरि सव्वु।
अम्हइ खेयर-विज्जा समाण किहं भूगोयरु जिप्पइ अयाण।

घत्ता– ता वालु पयंपइ णउ मुणियउ पइँ रहुवइ भूगोयरेण चिरु।
15 रावणु खगु मारिउ रणि संघारिउ पयडु कहंतरु एहु णिरु।। 11।।

## 12

अण्णु वि पइँ भणियउ जि असक्कउ णिउ मियंकु पुरि पइसिवि थक्कउ।
विद्धंसिय गयउलु जिं काणणु जं गुह मज्झि वसइ पंचाणणु।

---

को तूने ही क्षुद्र बना दिया है। तू कर्त्तव्याकर्तव्य भी नहीं जानता और अपने मन में जो-जो भी आ रहा है, वही-वही किये जा रहा है। राजा चन्द्रगति (मृगांक) का रणभूमि में चलाया गया वाण अजेय होता है। अतः तू उसके साथ विग्रह (युद्ध) करना छोड़ दे और सदल-बल कुशलता पूर्वक अपने घर वापिस लौट जा। मेरे इस कथन को अपने में चित्त धारण कर। अन्यथा हे पापी, खल, अपनी दुर्नीति के कारण तू निशाचरों द्वारा यहीं (रणभूमि) में खा डाला जायेगा।"

कुमार जम्बू का मर्मभेदी कथन सुनकर क्रोध से तमतमाए रयणचूल ने इस प्रकार उत्तर दिया मानों पंचानन सिंह ही हाथी के विरुद्ध उठ खड़ा हुआ हो। वह बोला– "निरर्थक बकवास करने वाले हे दूत, मैंने दुर्निवार माने जाने वाले कितने ही सुभटों की बारम्बार अवगणना की है। मेरे भय के कारण ही राजा मृगांक,नगर में प्रवेश करके भी सशंकित हो जाने के कारण छिप गया है और वहाँ से निकल नहीं पा रहा हैं (हे दूत–), तू गर्वीले बोल क्यों बोल रहा हैं? समर भूमि में उसे तथा उसके समस्त सैन्य-समूह का मैं संहार कर डालूँगा। मेरी खेचरी-विद्या के सामने तुझ जैसा अंज्ञानी भूगोचर कैसे विजय प्राप्त कर सकेगा ?"

घत्ता– यह सुनकर बालक जम्बू कुमार बोला– "तूने कभी सोचा भी नहीं होगा कि चिरकाल पूर्व में रघुपति जैसे भूगोचर ने ही रावण जैसे खग (विद्याधर) को रणभूमि में मार कर उसकी सेना का संहार कर दिया था। कथा-ग्रन्थों (प्रथमानुयोग-साहित्य) से यह घटना प्रकट रूप में देखी जा सकती है।"।। 11।।

**शत्रु-खेचर रयणचूल एवं कुमार-जम्बू की दर्पोक्तियाँ/कुमार जम्बू गगनगति विद्याधर के विमान में सवार होकर युद्ध करना अस्वीकार कर समर-भूमि से ही युद्ध करता है ।**

(कुमार जम्बू उस उद्धत – मन्त्री के लिए कह रहा है–) और भी कि 'तूने जो कुछ कहा है, वह अशक्य ही है क्योंकि राजा मृगांक अपनी पुरी (नगरी) में ही रह रहा है। उसने शत्रु के समस्त गज-समूह का विध्वंस कर दिया है और जिस प्रकार कानन (जंगल) के गुफा-गृह में पंचानन (सिंह) निवास करता है, उसी प्रकार वह राजा मृगांक भी अपनी पुरी में



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तं णिय ससाहं वि मणि बुज्झहि मा रे मूढ राय मणि मुज्झहि।
तं णिसुविणि उवट्ठिय मणि वेयण तें आणत्त णियय किंकरयण।
5 लेहु-लेहु एयहु णिरु धिट्ठहु दुव्वयणहँ फलु देहु अणिट्ठहु।
तं णिसुणिवि उट्ठिय पहरणकर भड दप्पिट्ठा पवर दट्ठाहर।
हणु-हणु-हणु भणंत सहसट्ठइ जंबुकुमारें ते तहिं दिट्ठइ।
तक्खणिच्छुरिय तेण करि धारिय णं कालेण सजीह पसारिय।
भडह वीरु पच्चारइ जामहिं गयणगई तहिं पत्तउ तामहिं।
10 लइलइ चडहि विमाणि महाणर करि पच्चइं रणुए भड खेयर।
ता विहसिवि कुमारु तहु जंपइ चडमि ण तुव विमाणि हउँ संपइं।
जं पर-वलेण वइरि जिप्पिज्जइ तिं साहसेण सउलु लज्जिज्जइ।
समर महण्णवि अरिवुड्डंता पेक्खु-पेक्खु पक्खिव उड्डंता।

घत्ता– तं णिसुणिवि खयरें तासु जि अइरें वसुणंदउ सहुं असिवरेण।
15 कुमरहु करि दिण्णउ अणुण्णु थिउ णहयलि खणेण।। 12।।

---

निवास कर रहा है। अतः हे मूर्ख राजन्, तू अपने स्वभाव को मन में ठीक रूप से समझ और उस राजकन्या (विलासवती) के प्रति मोह-ममता छोड़।'

कुमार जम्बू के (कठोर) वचन सुनकर (क्रोधाकुल–) रयणचूल उखड़ गया और उसने अपने किंकरों को आदेश दिया कि– इस धृष्ट निरामूर्ख बालक (जम्बू) को पकड लो और इसके अनिष्टकारी दुर्वचनों का तत्काल फल चखा दो।"

रयणचूल का आदेश पाते ही उसके प्रहरी उठ खड़े हुए। उन्होंने भी उस भट (जम्बू) की दर्पोक्ति सुनकर क्रोधित होकर अपने अधरोष्ठ चबा लिए और इसे मारो-मारो-मारो कहते हुए उस कुमार जम्बू के पास जा पहुँचे।

जब जम्बू कुमार ने उन्हें अपने समीप आया हुआ देखा, तब तत्काल ही उसने एक छुरी अपने हाथ में इस प्रकार धारण कर ली, मानों काल (यमराज) ने अपनी जीभ ही पसार दी हो।

वह वीर (जम्बू) जब शत्रु-भटों को युद्ध के लिये ललकार रहा था, तभी वह गगनगति-विद्याधर भी वहाँ आ पहुँचा और उससे बोला– "हे महापुरुष (जम्बू), लो-लो जल्दी से आकर इस (हमारे) विमान में सवार हो जाओ और युद्ध में इन शत्रु-खेचर-भटों को समाप्त कर दो।"

गगनगति का कथन सुनकर वह कुमार जम्बू हँस पडा और बोला– "इस समय मैं तुम्हारे विमान में नहीं चढ़ सकता। क्योंकि यदि मैं किसी दूसरे की सहायता से इस रण में विजय प्राप्त करता हूँ, तो उस पर मेरी जग-हँसाई होगी और सभी के सम्मुख मुझे लज्जित होना पड़ेगा। मेरे युद्ध-कौशल से इस समर रूपी महार्णव में तुम या तो डूबते (मरते) हुए शत्रुओं को देखना अथवा पक्षियों के समान उड़-उड़ कर भागते हुए उन्हें देख लेना।"

घत्ता– कुमार जम्बू का कथन सुनकर उस गगनगति खेचर ने तत्काल ही वसुनन्द के साथ उत्तम जाति की तलवार कुमार जम्बू के हाथ में पकड़ा दी और अन्यान्य विद्याधर गगनतल में छा गये।। 12।।



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



एक्कहु तासु जि अरिवलु लग्गउ भिडिउ कुमारु जि ताहं अभग्गउ।
जिह पंचाणणु काणणि गज्जइ तिहं भडयणहँ वीरु रणि तज्जइ।
गयणगइं गयणंगिणि थक्कउ पेच्छइं विज्जावलेण गुरुक्कउ।
एत्तहिं केरलपुर अब्भंतरि कोलाहलु णिसुणिवि एच्छंतरि।
5 भणइं इंदुगइ किं दुहु कलयलु धावहु-धावहु सण्णज्झहु बलु।
किं पारक्कउ दलु सइँ भज्जइ एहु खोहु भो किंपि ण णज्जइ।
तं णिसुणेवि कोवि तहिं जंपइ दीसइ समरु होंतु णिव संपइ।
भडयण हक्कहिं महियलु फुट्टइ विसमु जुज्झु अरि सेणि पवट्टठ।
किं इहु कूडु तासु वलि जायउ अह किं कुवि तुंव परिक्खिउ आयउ।
10 ता अणेक्कें तच्छ पउत्तउ कोवि वालु अरि पासि पहुत्तउ।
दूव मिसें तेण जि रणु मंडिउ रयणचूल वलु सयलु विहंडिउ।
किं कुवि तुम्ह सयणु णेहासिउ अह कुवि सेणिएणं किं पेसिउ।
णउ जाणियइं देव इहु कारणु एक्कल्लउ भडु करइ महारणु।

घत्ता– इय तहु भासंतहु सुक्खु जणंतहु एत्तहिं खणि हेरिएण पुणु।
15 रायहु तिं अक्खिउ जें सइँ लक्खिउ देव-देव थिर-कण्ण सुणु ।। 13।।

---

**रयणचूल-खेचर की अगणित सेना के साथ कुमार-जम्बू अकेला ही तूफान जैसा भिड़ जाता है। यह देख कर लोग विस्मित होकर रह जाते हैं।**

एक ओर तो शत्रु-खेचर-रयणचूल की अगणित सेना लगी हुई थी, तो दूसरी ओर अकेला कुमार जम्बू था, जो उससे जा भिड़ा। जिस प्रकार कानन (जंगल) में पंचानन (सिंह) गर्जना करता है, उसी प्रकार वह वीरबर जम्बू भी रणक्षेत्र में शत्रुजनों की तर्जना कर रहा था। वह गगनगति विद्याधर उस समय गगनतल में स्थित था और वह अपने विद्यावल से उस कुमार के महान् रणकौशल को देख रहा था।

इसी बीच केरलपुर के मध्य में कोलाहल सुनकर वह इन्दुगति (गगनगति) बोला– "यह कल-कल शब्द दुखकारी है। दौड़ो-दौड़ो अपनी सेना को सावधान करो। अरे, क्या शत्रु-सेना स्वयं ही क्यों भाग गई ? उसका क्षोभ किसी के भी द्वारा नहीं जाना जा सकता।"

उसे सुनकर किसी ने कहा कि– "हे राजन्, इस समय युद्ध चल रहा है। भट-जन हुँकार भर रहे हैं। उनके चलने से उनके भार से मानों महीतल फूटा जा रहा है। विषम शत्रु-सेनाएँ परस्पर में जूझ रही हैं। क्या यहाँ उस शत्रु-खेचर के कूट-कपट का बलिदान हो गया है, अथवा क्या कोई तुम्हारी परीक्षा लेने आ गया है ?" –तभी अन्य कोई एक वहाँ आया और कहने लगा कि कोई बालक शत्रु-सेना के पास आ पहुँचा है और दौत्य-कर्म के बहाने उसी ने इस रण को मण्डित किया है और उसी ने इस रयणचूल की समस्त सेना को नष्ट भी कर दिया है। फिर वह उस कुमार जम्बू से पूछने लगा कि क्या तुम्हारे किसी स्नेहशील स्वजन ने तुम्हें यहाँ भेजा है? अथवा क्या (मगधेश्वर–) श्रेणिक ने तुम्हें यहाँ भेजा है ? हे देव, मैं इसका कारण नहीं जानता कि यह भट (जम्बू कुमार) अकेले ही इस महारण को कैसे कर रहा है"–

घत्ता– इस प्रकार वह सुखकारी कथन कर ही रहा था कि उसे सुनकर उसी समय उसने युद्ध में जैसा-जैसा देखा था और राजा को भी कहा था, उसे हे देव, अब उसे अपने कानों को स्थिर कर सुनो।। 13।।



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



तुज्झि पक्खिक्किल्लु महाणरु करइ जुज्झु सुरवइ करिकर करु।
अट्ठ-सहस खग्ग तेण वियारिय जयलच्छी णिय करयलि धारिय।
तुम्हइँ किं पुरि पइसिवि थक्किय तेणेक्कें अरिसयल विलुक्किय।
एम मियंकहु कहियउ जामहि सो सण्णहिवि सेणु खणि तामहि।
5 णीसरियउ गज्जंतउ पुरवहि संपत्तउ ससंकु अरिवलु जहिं।
आभिट्टइ सुहडइ ईसावस जुज्झियाइ परसप्पर बहुजम।
ता खेयरु णहगई गयणंगणि जुज्झंतउ अइ कुद्धु रणंगणि।
खंडिउ तहु विमाणु खडहडियउ महिहि मियंकहु पुरउ जि पडियउ।
तं पेच्छिवि राएं ता पुच्छिउ कवणु एहु भडु वेयण मुच्छिउ।
10 ता केण वि पउत्त इहु खेयरु गयणगई तुव भज्ज सहोयरु।
तं णिसुणेवि मियंके बहुगुणु उच्छाविवि तिं णियसालउ पुणु।
पुच्छिउ एहु कवणु महु कारिणि भिडइ वीरु भणु-भणु जि महारणि।

घत्ता– ता गयणगई तहु जंपइ किं बहु महुसच्छें परिहासओ।
एहु जि भडु आयउ जय विक्खायउ सेणिएण पेसिउ अभओ।। 14।।

---

**स्थल-युद्ध में कुमार जम्बू ने अकेले ही खेचर-शत्रु-सेना के साथ युद्ध किया और उसके आठ हजार सैनिकों को मार डाला। उधर गगनगति विद्याधर जब आकाश में विद्याधरों से जूझ रहा था, तभी उसका विमान खण्डित होकर पृथिवी पर जा गिरा । गगनगति भी मूर्च्छित हो गया। उसे उठाकर राजा मृगांक अपने घर ले आता है तथा वह उससे उस वीर बालक (जम्बू) का विशेष परिचय पूछता है ।**

(वह आगन्तुक कह रहा है–) हे राजा मृगांक, तुम्हारी ओर से ऐरावत हाथी की सूँड के समान भुजाओं वाला वह महान (भूगोचर–) नर अकेले ही अगणित शत्रु-खेचर सेना से भिड़ा हुआ है। अभी तक उस अकेले ने आठ हजार खेचरों को मार गिराया है तथा जयश्री को हस्तगत कर लिया है और समस्त अरिजनों को लुप्त कर उसने तुम्हारे नगर में प्रवेश भी कर लिया है। जब उसने यह समस्त वृत्तान्त राजा मृगांक को बताया तब उसने भी तत्काल ही अपनी सेना को उसका संज्ञान करा दिया। जब वह गर्जना करता हुआ अपने नगर के बाहर निकला और सशंक होकर वहाँ पहुँचा, जहाँ शत्रु-जन खडे थे, ईर्ष्यावश वह उन शत्रु-भटों से जा भिड़ा इस प्रकार वे दोनों परस्पर में जूझने लगे।

तभी क्रोधाकुल वह गगनगति खेचर भी गगनांगन में शत्रु-खेचरों से जूझने लगा। किन्तु उस (गगनगति) का विमान खण्डित होकर खड़-खड़ाकर राजा मृगांक की नगर-भूमि में जाकर गिर पड़ा। उसे देखकर उस राजा (मृगांक) ने किसी से पूछा– "यह कौन सा खेचर-भट वेदनाग्रस्त होकर मूर्च्छित हो गया है।" तब उसने बतलाया कि– यह गगनगति नाम का खेचर है, जो आपकी भार्या का सहोदर है। "यह सुनकर गुणज्ञ राजा मृगांक ने उस अपने साले को सावधानी पूर्वक उठवाया और अपनी शाला (भवन) में ले आया। मूर्च्छा टूटने पर मृगांक ने उससे पूछा कि यह वीर-बालक कौन है, जो मेरे लिए इस महायुद्ध में शत्रु-सेना से भिड़ रहा है।"

घत्ता– तब गगनगति ने उसे उत्तर देते हुए कहा कि– "मैं अधिक क्या कहूँ, हँसी-हँसी में ही यह निर्भीक वीर-बालक मेरे साथ (विमान में बैठकर राजगृही से–) चला आया था। यह जगद्विख्यात है और इसे (मगधेश्वर–) राजा श्रेणिक ने भेजा है"।।14।।



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



णामेण भणिउं इहु जंबुसामि — इय कहइ जाम कह गयण-गामि।
ता रयणचूल रायण भिण्णु — जुज्झंतहु तहु असिघाउ दिण्णु।
मुच्छा विहलंघल हुउ मियंकु — धावेवि तेण बंधिवि अपंकु।
लइयउ वंदिग्गहि विमल चित्तु — सेणु जि भग्गउ आवय-णिहित्तु।
5 ता गयणगई खयरें खणेण — जंबू सामिहु पणविवि सिरेण।
अक्खियउ चयहि इहु समरु-सामि — वंधिउ मियंकु रणि सुगइ गामि।
दलु भग्गु असेसु ण कोवि थक्कु — णं महियलि भमियउ कालचक्कु।
पइं मुइवि सरणु णउ कोवि अण्णु — वंधिउ छंडावहि णिउ पसण्णु।
लइ रक्खहि णिव कुलु खयहु जंतु — एव्वहि अवसरु तुम्हहँ महंतु।
10 जं जाणहिं तं करि एच्छु कालि — जसु विच्छारहि तिजयंतरालि।

घत्ता– खग वयणु सुणेप्पिणु रोसु वहेप्पिणु खग्गहत्तु ता बोल्लए।
को जलंत हुवासणि पइसइ इह जणि को मियंकु लइ चल्लइ।। 15।।

---

**रयणचूल-खेचर द्वारा बन्धक बनाये गये राजा मृगांक को बन्धन-मुक्त कराने हेतु खेचर गगनगति जम्बू स्वामी से निवेदन करता है। जम्बू स्वामी वैसा करने के लिए तैयार हो जाता है।**

–"इस वीर-बालक का नाम जम्बू स्वामी है। जब मैं रयणचूल-खेचर एवं राजा मृगांक की दुर्घटना सुनाकर राजगृही से आकाश-मार्ग से लौटने लगा तभी इसने मेरे साथ चलने को कहा था और मैं भी उसे अपने विमान में बैठाकर यहाँ ले आया। यह (जम्बू स्वामी) तो शत्रु-खेचर-सेना से अकेले ही भिड़ा रहा और मैं जब खेचर-शत्रु-रयणचूल से नभस्तल में जूझ रहा था तभी उसने अपनी तलवार से मुझ पर आक्रमण कर मुझे घायल कर दिया था (और मेरे विमान को भी खण्डित कर दिया था।) अतः मैं विह्वल होकर (पृथिवी पर गिरकर) मूर्च्छित हो गया था तभी सरल चित्त राजा मृगांक मुझे अपने घर ले आया था।"

"इधर, खेचर-शत्रु उस रयणचूल ने उस विमल चित्त वाले राजा मृगांक को बन्दी बना लिया, इस कारण उसकी सेना भी विपत्ति काल को आया हुआ देखकर उससे भयभीत होकर भाग खड़ी हुई। तब उस खेचर-गगनगति ने तत्काल ही, जम्बू स्वामी को प्रणाम किया और उससे कहा कि– "हे जम्बू, समर-स्वामी इस राजा मृगांक को बन्धन-मुक्त करा दो, क्योंकि इससे इसकी समस्त सेना भयभीत होकर भाग गई है। ऐसा प्रतीत हो रहा है, मानों पृथिवी तल पर कालचक्र मंडरा रहा है। अब आपकों छोड़कर और कोई भी प्रसन्नमन से शरण देने वाला दिखाई नहीं दे रहा है। अतः आप इस राजा (मृगांक) को छुड़वा दो और उस महान् राजकुल को क्षय होने से बचा लो। तुम्हारे लिये यही एक ऐसा अवसर आया है, जिसमें अपने सुयश का इस संसार में विस्तार कर सकते हो। (मैं तो जो कुछ कह सकता था, वह निवेदन कर दिया–) इस समय अब आप जो (उचित) समझें, सो करें (अधिक क्या कहूँ।)"

घत्ता– गगनगति–खेचर का कथन सुनकर तथा उस (रयणचूल) के प्रति रुष्ट होकर वह जम्बू बोला– "ऐसा कौन सा व्यक्ति है, जो जलते हुए अग्नि-कुण्ड में प्रवेश करेगा। कौन है, यह राजा मृगांक ? मुझे उसके पास ले चलो।। 15।।



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

## 16

एम भणेवि हक्क मेल्लंतउ धाविउ जंबूसामि तुरंतउ।
ता णहगइणा पुणु णिय चीवरु गयणि भमाडिवि जंपिउ वरसरु।
आवहु-आवहु भयइ म भग्गहु सामिहु कारिणि इह रणि लग्गहु।
ता णिय पइँ परिहवहु खिण्णा भड वाहुडिया कोह रस भिण्णा।
5 जंबुकुमार पासि संपत्ता धीरु-धीरु जय-सरु जंपंता।
सेट्ठि-सुवें ता अरि पच्चारिउ कच्छ जासि रे धिट्ठ णिरारिउ।
अट्ठ-सहस मइ खयरइँ चूरिय तहं वि ण महु रण आसा ओरिय।
रे चुक्कुउ तहिं कालि णिरारिउ जं अच्छा णट्ठियउ ण मारिउ।
एव्वहि णिक्खत्तणि जि मयंकहु वंधिवि कहि चल्लियउ असंकहु।
10 जइ तउ अंगि सत्ति जुज्झहु खल ता बाहुडि-बाहुडि रे कयच्छल।
मा इह मरउ सेणु णिक्कारणि अच्छउ एच्छु णियंतउ महरणि।
अज्ज जि पइमि मइ वि रण किज्जइ जो जिप्पइ तहु आण विहिज्जइ।

घत्ता– तं अणुमण्णेप्पिणु रोसु वहेप्पिणु जंपइ रयणचूलु खयरु।
भो भड किं गज्जहि मा रणि भज्जहि दिक्खालमि तउ जम-णयरु।। 16।।

---

**जम्बू स्वामी मृगांक के नगर की ओर जाते है। आकाशमार्ग में गगनगति अपना चीवर लहराकर मृगांक की भयभीत सेना को वापिस लौटकर शत्रु से युद्ध करने की प्रेरणा देता है। जम्बू स्वामी शत्रु-खेचर रयणचूल को बाहुयुद्ध करने का प्रस्ताव रखते हैं, जिसे रयणचूल रुष्ट होकर स्वीकार कर लेता है।**

यह कहकर जब जम्बू स्वामी वह स्थल छोड़कर तुरन्त ही भागे, तभी गगनगति-विद्याधर (खेचर) ने अपना चीवर (वस्त्र) आकाश में फहरा दिया और (भागते हुए मृगांक के सैन्य-समूह से) उत्तम स्वर में बोला– "वापिस लौटो -वापिस लौटो" इस प्रकार भयभीत होकर मत भागो और अपने स्वामी (राजा मृगांक) के निमित्त यहाँ रण-भूमि में आकर युद्ध करने में जा लगो।"

यह सुनकर अपने स्वामी (मृगांक) की पराजय से खिन्न तथा क्रोधित हुआ "जय धीर-वीर-जय धीर-वीर" की जय-जयकार का नारा लगाता हुआ वह सैन्य-समूह कुमार जम्बू के पास वापिस लौट आया।

उस श्रेष्ठि-पुत्र कुमार जम्बू ने उस शत्रु-खेचर-रयणचूल को ललकारा और चिल्लाकर कहा– "रे धृष्ट, कहाँ भागा जा रहा है? मैंने तेरे आठ हजार खेचरों का चूर्ण बना डाला है, तो भी रण में मुझे जीत लेने की तेरी यह आशा अभी तक समाप्त नहीं हुई ? अरे उचक्के, अब निश्चय ही तेरा काल (मृत्युकाल) आ गया है, जिसने तेरा आस्थान तो नष्ट कर दिया है किन्तु अभी तक मारा नहीं। यहाँ से उस निरीह राजा मृगांक को बन्धक बनाकर निशंक होकर कहाँ चला जा रहा है ? रे खल, छली-कपटी, यदि तेरे शरीर में शक्ति हो, तो मेरे बाहुबल से अपने बाहुबल की क्षमता अजमा ले, जिससे कि अकारण ही सेना का विनाश न हो। यह (प्रस्ताव) उत्तम भी रहेगा, क्योंकि इससे महायुद्ध पर नियन्त्रण किया जा सकेगा। आज मैं यह प्रतिज्ञा भी करता हूँ कि इस बाहु-युद्ध में जो भी जीतेगा पराजित-पक्ष उसका आज्ञाकारी बनेगा।"

घत्ता– रयणचूल-खेचर ने रुष्ट होकर कुमार जम्बू के उस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया और बोला– "अरे भट (जम्बू), तू (व्यर्थ) में ही गर्जना क्यों कर रहा हैं । रण से भाग मत जाना, मैं इसमें तुझे यमराज का नगर दिखा दूँगा"।। 16।।



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



ता अण्णोण्णइ कोह णिबद्धइ दुण्णिवि खग्गपाणि सण्णद्धइं।
दोहिंमि करिवर सम्मुंहं चोइय सुरवर पेच्छहिं णहयलि मोइय।
ता कमु विरइवि सास धीरें हरिणुव उप्फालेवि खणि वीरें।
पंचाणण्णेण तेम अरि धारिउ भुवदंडें खरवयणहिं खारिउ।
5 बंधिउ खयरु भुया मोडेप्पिणु खणि मुक्कउ मियंकु छोडेप्पिणु।
कुसुमविट्ठि पविहिय गिव्वाणहिं जयसरु घुट्ठ थक्कु णह-जाणहिं।
आणंदिं णहगइ-खगुवट्ठिउ णच्चइ केरलसेणु रसड्ढिउ।
जयतूरइँ असंख तहि वज्जिय जंबु कुमारें जयसिरि सज्जिय।
रयणचूलु हुउ भग्ग मडप्फरु हेट्ठा मुहुं थक्कउ गयमच्छरु।
10 तक्खणि गाढालिंगणु देप्पिणु भणइ गयणगइ तहु विहसेप्पिणु।
इहु सा मगहेसें जा पेसिउ इहु सो दूव-मिसें जो पइसिउ।
इहु सो जिं विग्गहु उप्पायउ अट्ठसहस खेंयरगणु घायउ।
एण जि तुम्हह जीविउ-दिण्णउ सहु णयरें करि रज्जु अच्छिण्णउ।

घत्ता– ता केरलराएं सुणिवि मोअएं पणएं जि णवइ अंगरहु।
15 पइसारिउ णयरहिं सोहा पउरहिं पुरजण-मणि वट्टियउ सुहु।। 17।।

---

**खेचर-रयणचूल एवं जम्बू का बाहुयुद्ध होता है। रयणचूल की बाँह मरोडकर जम्बू उसे बन्धक बनाकर भी छोड़ देता है। अपमानित रयणचूल नतमस्तक हो जाता है। गगनगति रयणचूल को कुमार जम्बू का परिचय देता है। राजा मृगांक जम्बू को प्रणाम कर उसे नगर-प्रवेश कराकर सम्मानित करता है।**

तभी परस्पर में क्रोध-निबद्ध वे दोनों बाहु-युद्ध के लिये तैयार हो गये। वे दोनों ही रयणचूल एवं कुमार जम्बू ऐरावत हाथी की सूँड के समान अपनी-अपनी भुजाओं को इस प्रकार घुमाने लगे कि जिन्हें आकाश में व्याप्त देवगण भी देख-देखकर प्रमुदित होने लगे। वे साहसी वीर धीरे-धीरे बाहु-युद्ध करने लगे और हरिण के समान उछलने-कूदने लगे। पंचानन के समान जम्बू कुमार ने अपने भुजदण्ड से शत्रु को पकड़ लिया और कर्कश वचनों से उसे डाँटा-फटकारा। फिर उस रयणचूल की भुजा को मरोड़कर उसने उसे बाँध लिया और उससे राजा मृगांक को बन्धन-मुक्त करा लिया। यह देखकर देवों ने अपने-अपने नभोयानों से कुसुमवृष्टि कर जय-जयकार का उद्घोष किया। गगनगति-खेचर भी आनन्दित होकर उठा और केरलपुर की जयश्री की रसिक सेना के साथ नाचने लगा। नगर में असंख्यात जयतूर बजाये गये और ऐसा प्रतीत हो रहा था मानों जम्बू कुमार के कारण ही जयश्री सुशोभित हो उठी हो।

रयणचूल का दर्प भग्न हो गया। उसने मत्सर-विहीन होकर अपना मुँह नीचें की ओर झुका लिया।

यह देखकर गगनगति ने उसे गाढालिंगन देकर उससे हँसकर कहा कि यह कुमार जम्बू है। इसे मगधेश ने यहाँ भेजा था। अतः इसने दूत के बहाने यहाँ प्रवेश किया। इसने ही इस महान् विग्रह (युद्ध) को प्रारम्भ किया, जिसमें इसने आठ हजार खेचरों को मार डाला। इसी ने तुम्हें जीवन-दान भी दिया है, साथ ही अछिन्न-राज्य भी लौटा दिया है।"

घत्ता– तत्पश्चात् केरलराज मृगांक ने यह सब सुनकर आनन्द मनाया। जम्बू कुमार को प्रेमपूर्वक प्रणाम किया। फिर नगर-प्रवेश कराया। नगरवासियों ने भी साज-सज्जा की और उनके मन आनन्द से भर गये।। 17।।



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



बहु उच्छाहें णिवहरि पइट्ठा मणिमय आसणि सयल जि बइट्ठा।
ता सेट्ठिहु पुत्तें कलहसूलु बंधिंउ छोडाविउ रयणचूलु।
सम्माणिवि लहु तहु भणिइ भव्वु भो खयरराय इह कवणु गव्वु।
धणु-तणु-परियणु-बलु चंचलु जेच्छु णउ किज्जइ हरिसु-विसाउ तेच्छु।
5 परसुहउहु मंडणच्छि एहु जं भज्जिवि रणहु ण जाइ गेहु।
लइ गच्छहि णियउरि करहि रज्जु ता रयणजडी जंपइ सलज्जु।
तहिं आवमि हऊँ तुव सच्छि सामि जहिं सेणिउं णिवसइ सुपह-गामि।
सो धण्णउं पहु संगाम-धीरु जसु गेहि अच्छि तुव सरिसु वीरु।
कयवय दिण तहि णिवसिवि कुमारु पुणु तिहिमिहुत्तु चल्लिउ सुसारु।
10 सय पंच वि सज्जिय वर-विमाण णहि जंतइ विज्जाहर-समाण।
णम्मय-सरि-तडि संपत्त जाम खंधारु णिएप्पिणु तच्छ ताम।

घत्ता– लंबियइ विमाणइं रयण पहाणइ ओयरेवि तेहिं जि णहहु।
तहिं सेणिउ राणउ मगह-पहाणउं जय कारिउ संट्ठिउ सहहु।। 18।।

---

**केरलपुर नरेश मृगांक द्वारा कुमार जम्बू ने शत्रु-खेचर रयणचूल को बन्धन मुक्त ही नहीं कराया बल्कि उसे सम्मानित भी करा दिया। वह भी प्रभावित होकर कुमार जम्बू के साथ मगधेश्वर राजा श्रेणिक से मिलने के लिए सदल-बल चलकर नर्मदा नदी के तट पर पहुँचता है।**

वह राजा मृगांक अत्यन्त उत्साहपूर्वक राज-सिंहासन पर बैठा। अन्य मंत्रीगण आदि भी रत्नजडित आसनों पर बैठ गये। उसी समय उसने कलह करने में शूल के समान उस खेचर-रयणचूल को कुमार जम्बू ने बन्धन से छुडवा कर उसे सम्मानित भी करा दिया।

उसी समय जम्बू कुमार ने कहा कि– "हे भव्य, हे खेचरराज रयणचूल, अब इसमें गर्व करने की क्या बात है? क्योंकि यह धन-धान्य, तन, परिजन, पुरजन, बल सभी तो चंचल (क्षणिक) हैं। इनके आने अथवा नष्ट होने में हर्ष एवं विषाद नहीं करना चाहिए। क्योंकि यह सब तो दूसरों के सुभटों के मण्डन के समान ही है, जिसे छोड़कर रणभूमि से भागकर घर नहीं जाया जा सकता। अतः अब अपना रथ लो और वापस घर जाकर राज्य करो।"

यह सुनकर उस खेचर रयणजटी (रयणचूल) ने लज्जित होकर कहा– कि "हे जम्बू स्वामिन्" मैं अब सीधे अपने घर न जाकर आपके साथ वहाँ चलूँगा, जहाँ कि सुपथगामी (मगधेश्वर–) राजा श्रेणिक निवास करते हैं। सचमुच ही वे श्रेणिक राज धन्य हैं जिनके गृह-राज्य में आप जैसे संग्राम-धीर-वीर जन निवास करते हैं। मैं वहाँ कुछ दिन रहूँगा और फिर वहाँ से वापिस चला आऊँगा।"

उसी समय पाँच सौ विमान तैयार किये गये और उनमें बैठकर वह सदल-बल श्रेणिक के गृहराज्य (राजगृही) की ओर चल पड़े। चलते-चलते वे जब नर्मदा-नदी के तट पर पहुँचे, तभी उसने वहाँ एक स्कन्धावार देखकर–

घत्ता– अपने विमानों को वहीं लम्बित कर (रोक) दिया। (संघनायक–) रयणचूड विमान से नीचे उतरा और जहाँ मगध-प्रधान राजा श्रेणिक की जय-जयकार हो रही थी, वहीं पर जाकर वह सबके साथ (सभा-मण्डप में) बैठ गया।। 18।।



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



पेच्छिवि जंबूसामि मगहेंसें अवरुंट्ठिउ खणेण संतोसें।
सिरु चुंबिबि अंकिहिं वइसारिउ पुणु-पुणु तिं सो साहुक्कारिउ।
णहगइणा सयलु जि तहु साहिउ संगामहु वित्तंतु जसाहिउ।
ए एहु मियंकु रायउ ठिउ पेक्खहि कण्णारयणु एहु उवलक्खहि।
5 इहु सो खेयरु णिव विक्खायउ रणयचूलु णामें इह आयउ।
ता मगहेसरेण परियाणिय कयणेंहे बहुविह सम्माणिय।
सुह-दिण सुह-जोएं आणंदिणि परिणिय तेण मियंकहु णंदणि।
किंकर करिवि बिण्णि सुसज्जिय णिय-णिय पुरि सेणिएण विसज्जिय।
गयणगइ वि सच्छाणहु पेसिउ अप्पुणु कुमरें सहु मणि तोसिउ।
10 पत्तउ णिय पुरि जाम पईसइ ताम महामुणि उववणि दीसइ।
पंचसएहिं सुसीसहिं जुत्तउ णामें सोहम्मु जि विहरंतउ।
सो वंदिउ खणेण मगहेसें बहु भत्तिए महि धारिवि सीसें।

घत्ता– ता जंबुकुमारें महियलि सारें वंदिउ रिसिवरु विगयतमु।
सिरि वीर-जिणेसहु णाण-दिणेसहु जो इहु गणहरु पंचमु।। 19।।

---

**नर्मदा नदी के तट पर राजा श्रेणिक के स्कन्धावर में जम्बू कुमार पहुँचता है । श्रेणिक उसे अनन्य स्नेह प्रदान कर उसका माथा चूम लेते हैं। विलासवती के साथ विवाह कर राजा श्रेणिक जम्बू कुमार के साथ जब राजगृह पहुँचते, हैं, तो उपवन में भ. महावीर के पाचवें गणधर सुधर्माचार्य के दर्शन कर उनकी वन्दना करते हैं।**

(नर्मदा-नदी के तट पर–) जब मगधेश्वर श्रेणिक ने जम्बू स्वामी को देखा, तो वे उठ खडे हुए। उन्होंने बड़े सन्तोष का अनुभव किया, उसका माथा चूँमा और उसे अपनी गोद में बैठा लिया तथा बार-बार उसका साधुकार किया। गगनगति आदि सभी खेचरों ने जम्बू के संग्राम-संबंधी समस्त यशस्वी वृत्तान्त उन्हें कह सुनाये और उन्हें यह भी बताया कि– राजा मृगांक को यहाँ बैठे हुए जो आप देख रहे है, उनके साथ उनके कन्यारत्न (विलासवती) को भी आप देख रहे है, उसके लिये यह जो विख्यात खेचर-नृप रयणचूल है, वह अपने लिये चाहता था किन्तु, जम्बू द्वारा पराजित हो चुकने के बाद उसने अपना वह विचार छोड़ दिया है। अब वही यहाँ भी आया हुआ है।"

जब मगधेश्वर ने (रयणचूल) का परिचय जाना, तब उन्होंने उसका स्नेक पूर्वक बहुविध सम्मान किया। श्रेणिक ने शुभ दिवस की शुभ लग्न में आनन्द दायक उस मृगांक– पुत्री विलासवती के साथ परिणय-संस्कार कर लिया। दोनों पक्षों के द्वारा यशार्जन करने वाले समस्त कर्त्तव्य कार्य कर दिये जाने के बाद राजा श्रेणिक ने सभी को अपने-अपने घर जाने के लिये विदाई दे दी । गगनगति खेचर को भी स्वस्थान भेज दिया और वह स्वयं भी मन में सन्तुष्ट होकर कुमार जम्बू के साथ जब अपने गृह नगर राजगृही पहुँचा, तभी उन्होंने वहाँ के उपवन में एक महामुनि को देखा। वे अपने पाँच सौ साधु-शिष्यों के साथ विहार करते हुए वहाँ पधारे थे। उनका नाम सौधर्म (आचार्य सुधर्म) था।

मगधेश्वर श्रेणिक ने तत्काल ही उनके पास जाकर बहुभक्ति पूर्वक पृथिवी पर माथा टेककर उनकी वन्दना की।

घत्ता– तभी पृथिवी-मण्डल पर विशिष्ट व्यक्तित्व वाले कुमार जम्बू ने भी अज्ञानान्धकार को नष्ट करने वाले, उन ऋषिवर की वन्दना की। वे ऋषिवर ज्ञान-सूर्य कहे जाने वाले श्री वीर जिनेश्वर के पाँचवें गणधर कहे गये हैं।। 19।।



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



णिम्मल णाणचउक्कहं धारउ पुच्छिउ सेट्ठि-सुवें वय-धारउ।
पहु तउ दंसणि णेहु पवट्टइ किं कारणि महु संसउ वट्टइ।
तं पि कहहिं चिरभव संज्जुत्तं तं णिसुणिवि मुणिणा जि पउत्तं।
जंपमि जिणमइ-सुव आयण्णहिं णेहहु कारणु फुडु मणि मण्णहिं।
5 एच्छु जि विसइ वट्टमाणंकिउ पुरवरु वइरि कुलेहि असंकिउ।
तहिं दिय-पुत्त बिण्णि लंबियकरु भवदत्तु वि भवएउ विणयपरु।
दुण्णिवि दुद्धरु तउ विरएप्पिणु सण्णासें अवसाणि मरेप्पिणु।
तीयइं सग्गि विण्णि सुरवर हुया अवसाणें जातें तच्छहु चुया।
वज्जयंतमह पउम-णिवहु सुय बिण्णिवि सुरवर कर लंबियभुय।
10 उवहिचंदु-सिवकुमरु वि णामें पुणु तउ विण्णउ वज्जिय कामें।

घत्ता– बिण्णिवि बंभोत्तरि सुक्ख णिरंतरि जाया अमर अखंड सुहु।
भुंजिवि तच्छाविवि णरभउ पाविवि हुवउ एहुउ अण्णु तुहु।। 20।।

---

**भ. महावीर के पाँचवे गणधर सुधर्माचार्य विहार करते हुए ससंघ वहाँ आते हैं। कुमार जम्बू उनसे अपना भवान्तर पूछते हैं, जिनका वे संक्षेप में कथन करते हैं।**

सेठ अर्हद्दास के पुत्र जम्बू कुमार ने चार प्रकार के सम्यग्ज्ञान के धारी उन महाव्रती आचार्य सुधर्म से पूछा कि– "हे प्रभु, आपके सम्यग्दर्शन के प्रति यद्यपि मेरे मन में स्नेह उत्पन्न हो रहा है, फिर भी, इसका कारण क्या है कि उसके प्रति मेरे मन में संशय उत्पन्न हो रहा है ? फिर भी, आप हमारे पूर्व-भवान्तरों का कथन कर दीजिये।"

यह सुनकर उन ऋषिवर ने कहा कि– "जिनमति के हे सुपुत्र, मेरा कथन सुनो– "तुम्हारे मन में उत्पन्न सन्देह का (मूल–) कारण है, तुम्हारा स्नेह (अर्थात् मोह अथवा राग-भाव)। ऐसा अपने में स्पष्ट रूप से समझो। (और भी कि–)

इसी (मगध) देश में वर्धमान नाम का एक नगर है जो बैरी-कुलों के द्वारा अशंकित (घोषित किया गया) था। वहाँ अजानुबाहु दो द्विजपुत्र रहते थे। उन विनयशील दोनों पुत्रों के नाम थे भवदत्त एवं भवदेव। दोनों ने ही संन्यास धारण कर दुर्धर तप किया और मरकर वे तीसरे स्वर्ग में देव हुए।

आयुकर्म समाप्त होने पर वहाँ से भी चयकर वे दोनों ही देव वज्रदन्त एवं महापद्म नामक राजाओं के यहाँ आजानुबाहु उवहिचंद (सागरचन्द्र) एवं शिवकुमार नाम के पुत्रों के रूप में उत्पन्न हुए। उन दोनों ने भी काम-वासना का त्याग कर तपस्या की और मरकर–

घत्ता– वे (दोनों) ही निरन्तर अखण्ड सुख प्रदान करने वाले ब्रह्मोत्तर-स्वर्ग की देवयोनि में उत्पन्न हुए। वहाँ भी सभी सुख भोगकर वहाँ से चयकर वे दोनों ही यहाँ उत्पन्न हुए। उन्हीं में से पूर्व-भव का वह शिवकुमार ही तुम्हारे रूप में उत्पन्न हुआ है।। 20।।



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



णामें सोहम्मु वि जइ-पउरु सच्छच्छ-कुसलु विण्णाण-धरु।
सुपइट्ठु पियासहु भवहरणि गउ वड्ढमाण जिण-समसरणि।
तहिं जणणें सहु हउँ दिक्खियओ चेयणु अप्पा उवलक्खियओ।
सो हउँ पंचमु गणहरु पयडु सोहम्मु णामु खयमयण भडु।
5 जिणु सासयपुरि संपाइयओ हउँ विहरिउ संघ-विराइओ।
भो जिणमइ-सुय एहु जि कहिओ णेहहु कारणु तउ णउ रहिओ।
जइया तडिमाली तुहु जि सुरु होंतउ तणु पह-तेएण गुरु।
तइया जो देवि चउक्कु धुओ सा सायरदत्ता इहु जि हुओ।
दुहियहु चउक्कु भो तुच्झु पुणु दिण्णं णिरु जंबूसामि मुणु।
10 दहमइ-वासरि परिणयणु तओ इय सुणि वयणं णिसुणेवि तओ।
सविसेसें सुमरिउ तेण भओ ता जइ चलणहिं णिवडिवि अमओ।

घत्ता– पुणु सेट्ठिहु णंदणु जय आणंदणु जंपइ सामिय दयकरहिं।
भवकूवि पडंतहु मज्झु तुरंतहु सयरें रिसिवर उद्धरहिं।। 21।।

---

**भ. महावीर के पंचम गणधर आचार्य सुधर्म का स्वयं का भवान्तर-कथन।**
**कुमार जम्बू उनके भवान्तर-कथन से प्रभावित होकर उनसे दीक्षा प्रदान करने हेतु प्रार्थना करते हैं।**

"शास्त्रार्थ – कुशल और ज्ञान-विज्ञान के धारी आचार्य सौधर्म (सुधर्म) नामके वे यति-प्रवर पूर्वभव में सुप्रतिष्ठ नाम के राजा थे। वे अपनी सुप्रतिष्ठा नाम की महारानी के साथ एक दिन वर्धमान-जिन के भव-तापहारी समवशरण में गये। वहाँ उन्होंने अपने पिता के साथ चेतन-आत्मा के स्वरूप को जानकर दीक्षा धारण कर ली और तपस्या कर विषय-भट को नष्ट कर दिया। वही मैं अब इस भव में जन्म लेकर भगवान् महावीर के पाँचवे गणधर के रूप में उत्पन्न होकर आचार्य सुधर्म के नाम से प्रसिद्ध हुआ हूँ और जिन-शासन की पुरी (मोक्ष) का बन्ध करने वाला मैं वर्तमान में ससंघ विहार करता हुआ अभी यहाँ विराजमान हूँ।"

"हे जिनमति के सपूत (जम्बू कुमार), मैंने जो यहाँ कहा कि स्नेह (राग–) भाव के कारण ही तपस्या का फल नहीं मिलता। जिस प्रकार तडिमाली के रूप में तू स्वर्ग का महान् देव हुआ था और वहीं जो तेरी चार देवियाँ थी, अब वहाँ से चयकर वे ही यहाँ सेठ सागरदत्त आदि चार सेठों की पुत्रियों के रूप में यहाँ उत्पन्न हुई हैं। वे चारों पुत्रियाँ जो तुम्हें दी जाने वाली हैं, वे ही पूर्वभव की तुम्हारी चारों देवांगनाएँ, है तुम ऐसा जानो। आज से दसवें दिन उन्हीं के साथ तुम्हारा परिणय कर दिया जायगा।

उन आचार्य का कथन सुनकर जम्बू कुमार ने अपने भवान्तरों का विशेष रूप से स्मरण किया और उस निरभिमानी अर्हद्दास के सुपुत्र जम्बू ने आनन्दित होकर उनके चरणों में अपना माथा टेककर–

घत्ता– निवेदन किया कि "हे स्वामिन्, हे, ऋषिवर, मुझ पर दया कीजिये और भव-कूप में पडने से मेरा उद्धार कीजिये"।। 21।।



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



णिव्विण्णउ हउँ महु दय किज्जउ णेह पयत्तें महु तउ दिज्जउ।
इय तहु वयण सुणिवि रिसि जंपइ जाहि णिहेलणि भो सुव संपइ।
पुच्छेप्पिणु णिय जणणी जणणं ता आविवि किज्जहि तव गहणं।
तं णिसुणेवि चरम-तणु भासइ काइ कज्ज महु गेह पयासइ।
5 माय-वप्प केत्तियइँ जि पुच्छमि दुद्धरु तउ एव्वहि हउँ इंच्छमि।
तुहु जि माय तुहु बप्पु महारउ तुहु बंधउ तुहुं सयणु पियारउ।
बुहुँ जि सामि तुहुँ गुरु भव-तारउ तुहु एक्कु जि भुवणयलहु सारउ।
परम मित्तु तुहु किं बहु बुच्चइ तारिं-तारिं महु देव समुच्चइ।
दइयंवरिय दिक्ख महु अल्लहि मा सरणहिं पइट्ठु मुणि मेल्लहि।

10 घत्ता– ता भणइ रिसीसरु हय वम्मीसरु सो कुमार सुणि वयणु महु।
पियरहु पुच्छंतहं तव-भरु लिंतह दोसु काइँ सुव भणहि लहु।। 22।।

---

**जम्बू कुमार सुधर्माचार्य से दीक्षा प्रदान करने हेतु बार-बार प्रार्थना करते हैं किन्तु आचार्य का स्पष्ट कथन है कि माता-पिता की आज्ञा प्राप्त कर आने के बाद ही दीक्षा प्रदान की जा सकेगी।**

कुमार जम्बू सुधर्माचार्य से दीक्षा दे देने हेतु पुनः प्रार्थना करते हुए कहते हैं– "हे ऋषिवर, मैं निर्विण्ण (वैराग्योन्मुख) हो रहा हूँ। मुझ पर दया कीजिये और स्नेह पूर्वक मुझे उसे (दीक्षा को) दे दीजिये।"

जम्बू की प्रार्थना सुनकर ऋषिवर ने कहा– "हे पुत्र, इसी समय चले जाओ और अपने माता-पिता से पूछकर आओ और यदि वे आज्ञा प्रदान कर दें, तभी तपस्या के लिये दीक्षा ग्रहण करना।"

ऋषिवर का कथन सुनकर चरमशरीरी वे जम्बू बोले– "किस प्रयोजन से आप मुझे मेरे घर भेज रहे हैं ? मेरे माता-पिता से मैं क्यों और कितने समय तक पूछता रहूँगा ? मैं तो तत्काल ही दुर्धर तप करना चाह रहा हूँ।"–

–"अब तो आप ही मेरी माता हैं और आप ही मेरे पिता और आप ही मेरे लिये प्यार करने वाले महारथी, आप ही मेरे बन्धु हैं और आप ही मेरे स्वजन, और मेरे लिये सत्पण्डित और स्वामी, और भव से तारने वाले सद्गुरु। मेरे लिये तो केवल आप ही इस त्रिभुवन में साररूप परममित्र, और इससे अधिक मैं क्या कहूँ ? अतः हे देव, मुझे इस भवोदधि से पार उतार दीजिये। मुझे दिगम्बरी-दीक्षा प्रदान कर दीजिये। हे मुनिवर, मुझे निराश्रितों की श्रेणी में अकेला मत छोड़िये।"

घत्ता– जम्बू की मार्मिक प्रार्थना सुनकर काम-वासना का हनन करने वाले ऋषिवर ने कहा– "हे कुमार, मेरी बात सुनो, दीक्षा ग्रहण करने के लिये माता-पिता से आज्ञा लेने में दोष (हानि–) क्या है ? मुझे तत्काल बताओ"।। 22।।



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



तुहु चरम-देहु मा करि वियप्पु भो णिच्छइं तउ होसइ अदप्पु।
गुरुवयणोल्लंघणि दोसु होइ तं पालिज्जइ इह एच्छु लोइ।
मुणि भासिउ णिसुणिवि जंबुसामि आएसु मणेप्पिणु मोक्खगामि।
गुरु-चलण णवेप्पिणु गेहि पत्तु णिव्विण्ण-चित्तु खणि कमलवत्तु।
5 जणणी-जणणहु णावेवि सीसु कर मउलिवि जंपइ सो गरीसु।
चच्चर-दीवोवमु चवलु जीउ अहिजीहा फुणुव तणु धणीउ।
गिरि-णइ-पूरुव लच्छी-विलासु परियणु जिह णहि-विज्जुल-पयासु।
मइँ मुणिय सयल जणणहु अवच्छ तिं पव्वज्जा गिण्हमि अवच्छ।
मइ खमियउ तुम्ह जि खमहु मज्झु तउ चरमि हउँ जि मायरि असज्झु।
10 तं णिसुणिवि मुच्छिय जणणि तासु उम्मुच्छिय कहव जि कहव आसु।
उट्ठिय सा हा-सुय-सुय भणंति पुत्तहु विओय वीहिय कणंति।
तउ लिंति संति तुज्झु पुत्त कुलु-जाइ खयहं भो गुण णिपुत्त।
गोत्तहु अवठं भणु तुहु जि वच्छ मा खंधु समोडेहि भरहु दच्छ।

घत्ता– णिय जणणिंहि उत्तउ सुणिवि णिरुत्तउ जंपइ चउ-गइ-वीहियओ।
15 जं अंबि चविउ पइँ णेहाउर मइँ तं असच्चु णिरु साहियओ।। 23।।

---

**चरमदेही कुमार जम्बू के बार-बार प्रार्थना करने पर भी आचार्य सुधर्म ने माता-पिता की आज्ञा प्राप्त किये बिना जब दीक्षा नहीं दी, तब जम्बू घर आकर माता-पिता से आज्ञा प्रदान करने की प्रार्थना करते हैं। माता-पिता एवं पुत्र के मार्मिक संवाद का रोचक वर्णन**

ऋषिवर ने पुनः कहा– "हे कुमार, तुम चरम-देही हो, निर्विकार हो, अतः अपने मन में किसी भी प्रकार का विकल्प मत करो। तुम निश्चय ही तपस्यारत होओगे। किन्तु गुरु के वचन का उल्लंघन करने से दोष हो जायगा। अतः इस सांसारिक जीवन में गुरु की आज्ञा का पालन तो होना ही चाहिये। आचार्यगुरु का वचन सुनकर मोक्षगामी, चित्त से निर्विण्ण तथा विकसित कमल के समान मुख वाले वे जम्बू कुमार "तथास्तु" कहकर गुरु चरणों में अपना माथा नवाकर, हाथ जोड़कर उन्होंने उनसे प्रार्थना की कि–"टिमटिमाते हुए दीपक के समान यह जीवन क्षणिक् है, सर्प की जिह्वा की फूत्कार के समान ही यह शरीर भी क्षणिक् ही है, पर्वतीय-नदी के पूर (प्रवाह) के समान यह लक्ष्मी का विलास भी क्षणिक् है तथा परिजनों का स्नेह भी मेघ की विद्युत् की चमक के समान क्षणिक् ही है। अतः हे पिताजी, मैंने संसार की समस्त दशाओं पर विचार कर लिया है। ऐसी अवस्था में मैं अब प्रवृज्या ग्रहण करना चाहता हूँ। मैंने आपको क्षमा कर दिया है। अब आप भी मुझे क्षमा कर दें।" "हे माताजी, अब मैं दुस्साध्य दुर्धर तप करने जा रहा हूँ। अतः आप भी मुझे जाने की आज्ञा प्रदान करें।"

अपने प्रिय पुत्र कुमार जम्बू का यह संकल्प सुनते ही माता मूर्च्छित होकर गिर पड़ी। जिस किसी प्रकार मूर्च्छा टूटने पर वह उठी और हा-हाकार करती हुई, "मेरा पुत्र-मेरा पुत्र" कहती हुई तथा पुत्र-वियोग के कारण अत्यन्त व्याकुल-भयाकुल होकर बोली–"हे पुत्र, दीक्षा ग्रहण करते ही हमारा कुल एवं जाति निपूती रह जायगी। तेरा गोत्र भी अवरुद्ध हो जायगा। अतः हे कुशल वत्स, तुम इस सूनेपन रूपी गढ्डे को भरो।"

घत्ता– अपनी माता के दारुण कथन को सुनकर भी चतुर्गतियों के भय से भयभीत वे कुमार जम्बू पुनः बोले –"हे माता, नेहातुर होकर आपने जो कुछ भी कहा है, वह सब मेरे लिये अयथार्थ (असत्य) है–"।। 23।।



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



णउ वंसु सुगइ पहि लेइ अम्मि — इहु लोयायारु जि धुउ सकम्मि।
कित्तियइ गणेसमि आसि वंस — तुम्हहँ कुलु उज्जालमि य संस।
जहि णिच्च असइ जीविउ कयंतु — तहिं रइ करेइ किम माय संतु।
पुणु कहियइ णिय जम्मंतराइ — जणणिंहु अग्गइ जि णिरंतराइ।
5 संबोहिय मायरि तेण जाम — सा णिच्छउ जाणिवि भणइ ताम।
हो-हो णंदण कुल-कमल-सूर — णउ वज्जिय घरि मंगल जि तूर।
खुण्हाह-वयणु मइ सुवण दिट्ठु — हा-हा विहि णिग्घिण्ण किउ अणिट्ठु।
इय जा जंपइ जिणमइं सणेह — ता सेट्ठि चउक्कहि तासु गेह।
सायरदत्ताइ हि पुरिस बिण्णि — संपेसिय बहुबिह बुद्धि मण्णि।
10 तें अरुहयास वणिणा खणेण — सम्माणिवि थाणिय आ मणेण।
तंबोलु-विलेवणु दिण्णु ताह — जा विहिउ वि णउ बिहु सज्जणाह।
ता एक्कें सेट्ठिहु तहि पउत्तु — कण्णा तायहि अम्हइ णिरुत्तु।
पेसियइ तुम्ह घरि तेण आस — एव्वहिं णिसुणइ संदेस वाय।

घत्ता– परिणयण महुच्छउ सुवहु अउव्वउ किज्जहु अज्जहु दहम दिणि।
15 ता अरुहयासु पुणु जंपइ बहु गुणु गयणंसुहि पूरेवि खणि।। 24।।

---

**कुमार जम्बू बार-बार अपनी स्नेहमयी माता को पुत्र-मोह छोड़कर दीक्षा ग्रहण करने हेतु अनुमति माँगता है। इसी बीच कन्याओं के पिता सागरदत्तादि सेठ अर्हद्दास के घर दशवें दिन वर-कन्या परिणय के महोत्सव के आयोजन हेतु सन्देश भेजते हैं ।**

–"और हे माता, वंश-कुल एवं लोकाचार स्वयं ही सुगति-पथ की ओर नहीं ले जा सकते। बल्कि व्यक्ति के अपने-अपने कर्म ही निश्चयरूप से गति के कारण बनते हैं। गणेश-गौतम के वंश की उनकी साधना के कारण जिस प्रकार प्रशंसा की जाती है, उसी प्रकार मैं भी आपके वंश को उज्ज्वल बनाकर लब्ध-प्रतिष्ठ बनाऊँगा । जहाँ नित्य ही संसार में असत्-कार्य करते हुए व्यक्ति मृत्यु के मुख में पड़ते रहते है, उन्हीं असत्-कार्यों में हे माता, यह प्राणी रति अनुराग करता रहता है।"

जम्बू कुमार ने अपनी माता के आगे अपने निरन्तर भोगे गए दुख भरे जन्मान्तरों की कथा भी बताई और उसे सम्बोधित करते हुए जब उसे दीक्षा-ग्रहण करने सम्बन्धी अपना संकल्प बतलाया, तब पुत्र का अटल निश्चय जानकर वह बोली– "कमल पुष्पों के लिये सूर्य के समान, हे प्रिय नन्दन, अभी तक तो तेरे लिये, इस गृह-द्वार पर मांगलिक तूर -वाद्य भी नहीं बज सके। खेद-खिन्न होकर मैंने एक अनिष्टकारी स्वप्न भी देखा है, जिसके फलस्वरूप ही मानों दुर्भाग्य से यह विघ्न आ उपस्थित हुआ है।" इस प्रकार स्नेहमयी माता जिनमती जम्बू से जब अपने मन की व्यथा कह रही थी, उसी समय सागरदत्तादि चारों सेठों ने तत्काल ही अत्यन्त बुद्धिमान् एवं कुशल दो व्यक्तियों को सेठ अर्हद्दास (जम्बू के पिता) के घर भेजा। अर्हद्दास ने भी मनोयोग पूर्वक उन सज्जनों को विनम्रभाव से सम्मानित कर बैठाया और ताम्बूल-विलेपनादि प्रदान किये। तभी उनमें से एक सेठ ने कहा कि कन्याओं के पिता सागरदत्तादि ने हमें आपके घर आकर जो सन्देश देने के लिये कहा है, उसे आप सुनिये–

घत्ता– "आज से दशवें दिन अत्यन्त अपूर्व परिणय-महोत्सव का आयोजन कीजिये"। यह सन्देश सुनकर गुणज्ञ सेठ अर्हद्दास ने नेत्रों में स्नेहाश्रु भरकर उत्तर में कहा–।। 24।।



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



अघडियउ घडावइ एह विहि सुघुडु जि विहंडावइ होउ दिहि।
अम्हहि चिंतिउ सुह कज्ज मणि दइएँ अंतरि किउ अण्णु खणि।
पावज्जहु रत्तउ पुत्तु महु णिय कण्णा दिज्जहु अण्णि लहु।
तं णिसुणिवि अणिमिस दिट्ठ जणा विण्णिवि गय खणि दूमिय स मणा।
5 कण्णा जणणहँ तं अक्खियओ णउ किंपि गुज्झु तह रक्खियओ।
तं णिसुणिवि णं सिरि वज्जहया मुहि करयलु देप्पिणु ठिय णिहुया।
तूरइ वज्जंतइं वारियइँ मंगलगीयइँ वि णिवारियइँ।
णच्चंतु णिसिद्धउ णारियणु जणु जंपइ लग्गेप्पिणु सवणु।
हेट्ठामुहुं संट्ठिउ तहि सयणु सुय ताहँ जि ओहुल्लिउ वयणु।

10 घत्ता– ता कण्णा पियरहिं विहुणियं स सिरहिं वुच्चइ दीहि-सासु मुइवि।
हा-हा णिट्ठुर विहि किं दाविवि णिहि णयणहु जलु हरियउ कुइवि ।। 25।।

---

**कन्याओं के माता-पिता अपने-अपने दुर्भाग्य को कोसने लगते हैं । सर्वत्र उदासी का वातावरण छा जाता है । सेठ अर्हद्दास कन्या-पक्ष की ओर सन्देश भिजवाते हैं कि शीघ्र ही विवाह की तैयारी करें, जिससे कि जम्बू उन कन्याओं के साथ कम से कम एक रात्रि व्यतीत कर सके।**

सेठ अर्हद्दास ने उन सन्देश-वाहकों से कहा– "विधि का विधान ही ऐसा है कि वह अघटित को घटित तथा सुगठित को विघटित कर देता है। हमने तो अपने मन में शुभ-कार्य करने का विचार किया था किन्तु दैव ने तत्काल ही उसे नकारात्मक कर दिया। आप ऐसा करा दीजिये कि जिससे कन्याओं का परिणय-संस्कार शीघ्र ही हो जाय, जिससे कि वे मेरे पुत्र– जम्बू के पास एक रात्रि व्यतीत कर सकें।"

यह सुनकर वे दोनों सन्देशवाहक दुखी चित्त होकर तत्काल ही वहाँ से जाकर कन्याओं के पिता के पास गये। बिना कुछ रहस्य छिपाये उन्हें सारा वृतान्त कह सुनाया। उसे सुनते ही उन्हें (कन्याओं के पिताओं को) ऐसा अनुभव हुआ, मानों उनके सिर पर वज्रपात ही हो गया हो। वे बेचारे उदास चित्त होकर हाथों में मुँह छिपाकर बैठ गये।

उन्होंने बजाये जा रहे तूर-वाद्यों का बजाना रोक दिया और मांगलिक संगीत को बन्द करा दिया। महिलाओं के मांगलिक नृत्य को भी रोक दिया। यह सब देखकर वहाँ उपस्थित लोग कान से कान लगाकर बतयाकर इसके रहस्य को जानने का प्रयत्न करने लगे। किन्तु स्वजन लोग नीचा मुँह किये हुए वहीं बैठे रहे। वे कन्याएँ भी अपने मुँह लटकाकर वहीं बैठी रहीं।

घत्ता– तभी दीर्घ निःश्वास छोड़ते हुए अपने-अपने शिरों को धुनते हुए उन कन्याओं के पिताओं ने भी– "हाय-हाय, निष्ठुर दुर्भाग्य ने मानों कुपित होकर हमें जम्बू के रूप में प्रदान की हुई निधि तथा हमारी आँखों के आँसुओं को भी हमसे छीन लिया है।। 25।।



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



वरु मेल्लिवि सेट्ठिहु सुउ मणिट्ठु अण्णु ण कुवि पुरि अम्हेहि दिट्ठु।
चित्तु जंबु सामिहु दिण्ण जाउ इह परह देहु किह भणमि ताउ।
वणिणाहहिं तातहिं कियउ मंतु कण्णह मणि रुच्चइ किं तुरंतु।
पुच्छहु जाइवि णिय वालियाउ कयली गब्भुव सुकुमालियाउ।
5 इय भासिवि दूवहु कर धरेवि णिय गेहब्भंतरि पइसरेवि।
कण्णाहं पुरउ वणिवरहि गंपि कहियउ असेसु कारणु जि तंपि।
जसु दिण्णियाउ तुमइं जि आसि तिंच्छिंदिय पुत्तिहु मोह-पासि।
पावज्जिहिं सज्जिउ णियय चित्तु णउ परिणइ सो तुम्हहँ विरत्तु।
लइ अण्णु कोवि वरयत्तु लेहु जंबूसामिहु चित्त म कुणेहु।
10 तं णिसुणिवि कज्जंतरु विणीए दिज्जइ उत्तरु पउम जि सिरीए।
वरकुल उप्पण्ण गुणालियाहं एक्कु जि गुरु एक्कु जि वीयराउ।
अण्णाण्ण विलासिणि गहइ कंत इणि वयणहिं कुलु लज्जइ महंत।

घत्ता– जइ णाहु महारउ सयण पियारउ तउ धारेसइ ता धरओ।
परिणयणु करिवि पर एक्कु दिवसु घर णिवसउ एत्तडए जि करओ।। 26।।

---

**कुमार जम्बू के प्रवृज्या-ग्रहण का संकल्प जब वणिक्-पुत्रियों को बताया जाता है, तो उनमें से एक कन्या पद्मश्री कहती है कि कुलीन कन्या का तो पूर्व सुनिश्चित एक ही पति हो सकता है। अतः कुमार जम्बू हम लोगों के साथ परिणय-संस्कार कर कम से कम एक दिन हमारे साथ समय अवश्य व्यतीत करें। तत्पश्चात् वे जैसा चाहें, अपना निर्णय करें।**

"जम्बू कुमार जैसा वर एवं सागरदत्तादि सेठों की मनोहारी कन्याओं को छोड़कर इस नगर में उनकी तुलना में हमें कोई अन्य दिखाई ही नहीं दे रहा है। किन्तु जम्बू का चित्त तो आत्मा एवं शरीर की भिन्नाभिन्नता के विचार में लगा हुआ है। अतः उन्हें क्या कहें ?" यह देखकर सेठ अर्हद्दास एवं कन्याओं के पिताओं ने परस्पर में तुरन्त ही विमर्श किया कि कदली-वृक्ष लता के समान सुकुमार बालिकाओं से भी जाकर क्यों न पूछ लिया जाय कि उनकी रुचि क्या है ? वे क्या चाहती हैं ? यह विचार कर वे उस सन्देश-वाहक–दूत का हाथ पकड़कर उसे अपने घर के भीतर ले गये वणिग्वर की उन कन्याओं के सम्मुख गये और उन्हें जम्बू द्वारा तत्काल दीक्षा ग्रहण सम्बन्धी समस्त वृतान्त कह सुनाया और कहा कि– "तुम लोगों का हाथ जिस वर के हाथ में देने का निर्णय किया गया था, उसने तुम्हारे प्रति अपने मोहपाश को नष्ट कर दिया है और प्रवृज्या लेने में उन्होंने अपना चित्त लगा लिया है। अतः अब वे तुमसे विरक्त हो जाने के कारण तुम्हारे साथ परिणय नहीं करेंगे। इस कारण तुम लोग अन्य किसी वर के साथ अपना सम्बन्ध करो और जम्बू स्वामी के प्रति अपनी मोह छोड़ो।"

यह सुनकर पद्मश्री नामकी कन्या ने विनम्रता पूर्वक उत्तर देते हुए कहा– "श्रेष्ठ कुलोत्पन्ना तथा सद्गुण-सम्पन्ना बालिका का तो एक ही पति होता है, एक ही माता होती है, एक ही पिता होता है, एक ही गुरु होता और एक ही वीतरागी-देव होता है। अन्य कोई दूसरा नहीं हो सकता। हाँ, जो (कामुक–) विलासिनी नारी होती है, उसके अन्य-अन्य कान्त होते रहते हैं। किन्तु इस प्रकार के आचार-विचार से महान् कुल लज्जित-लांछित हो जाता है।"

घत्ता– यदि स्वजनों के प्रिय और हम लोगों के महारथी वे नाथ कुमार जम्बू दीक्षा ग्रहण करते हैं, तो भले ही करें किन्तु उन्हें चाहिये कि वे हम लोगों के साथ परिणय-संस्कार कर कम से कम एक दिन घर में रहकर हमारे साथ समय अवश्य व्यतीत करें, तत्पश्चात् उन्हें जो कुछ करना हो, वह करें।। 26।।



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



जइ पाणिग्गहणुहु कहव घडइ अम्हाण दिट्ठि जइ पिउ चडइ।
ता मोहिज्जइ णिच्छएण पहु किं अच्चग्गलु वि लियइ बहु।
कहिं वणु कहि पुणु तवयरण दुहु पिउ माणइं अहणिसु रइहु-सुहु।
तावहिं वइराउ जि सो वहइ अम्हह दंसणु जाव ण लहइ।
5 एव्वहिं तुहु जाइवि इम भणहु पाणिग्गहणु जि सामिय कुणहु।
एक्कु ज़ि वासरु णिय-घरि रहहु कल्लइं वणि जाइवि तउ गहहु।
इय वयण सुणिवि गउ दूउ तहिं अच्छइ णिव्विण्णउं कुमरु जहिं।
पणवेप्पिणु तहु पय तिं चविओ जं किं पि वणिंद सुअहि लविओ।
परिणेप्पिणु तहं एक्कु जि दिवसु पेच्छहु भज्जहँ मुह ताम रसु।
10 पच्छइं तेहिमि सहुं तउ चरहु इहु वयणु ण अम्हह परिहरहु।

घत्ता– तं णिसुणिवि धीरें चिंतिउ वीरें सुइहिं भिज्जइ केम गिरि।
तिहं महु णिव्विण्णहु लक्खिय भिण्णहु किहं मोहइ परिणयण सिरि।। 27।।

---

**दीक्षा-ग्रहण करने हेतु कुमार जम्बू को दृढ संकल्पी जानकर वे कन्याएँ दूत के द्वारा पुनः सन्देश भिजवाती हैं कि तत्काल विवाह कर एक दिन विवाहित कन्याओं के साथ रहकर यदि वे चाहें तो वे अगले ही दिन दीक्षा ले सकते हैं।**

–"यदि वे (कुमार जम्बू) जिस किसी प्रकार भी हमारे साथ पाणिग्रहण रचा लें और हमारी (मोहित कर लेने वाली–) दृष्टि जब हमारे उन प्रियतम पर पड़ेगी तब निश्चय ही यदि वे हम लोगों पर मोहित हो जाय, तो इसमें आश्चर्य की बात ही क्या ? और, जब हमारे साथ प्रतिदिन वे सुरति-सुख का अनुभव करेंगे, तब स्वयं ही तपाचरण को दुख का कारण मानने लगेंगे और फिर कभी भी दीक्षा-ग्रहण करने की बात नहीं करेंगे। वे तब तक वैराग्य लेने की बात रटते रहेंगे, जब तक वे हम लोगों का मोहक-दर्शन नहीं कर लेते। अतः हे सन्देशवाहक दूत, तुम जाकर उन कुमार जम्बू से इस प्रकार कहो कि– "हे स्वामिन्, पाणिग्रहण शीघ्र ही कर लीजिये और कम से कम एक दिन परिणीताओं के साथ रह लीजिये। फिर भले ही अगला कल होते ही वन में जाकर तपस्या धारण कर लीजिएगा।"

पद्मश्री का यह कथन सुनकर वह दूत लौटकर वहाँ गया, जहाँ वैराग्योन्मुख कुमार जम्बू निवास कर रहे थे। उनके चरणों में प्रणाम कर उसने उसे वह सब कुछ कह सुनाया, जो उन वणिक्-कन्याओं ने उसे कहा था। उसने दुहराते हुए पुनः कहा कि– "उन कन्याओं के साथ परिणय कर उनके साथ कम से कम एक दिन रह लीजियेगा और उसमें भार्याओं के मुख का रसपान अवश्य कीजियेगा। तत्पश्चात् उन्हीं के साथ तपस्या करने चले जाइयेगा।"

घत्ता– उन धीर-वीर जम्बू ने दूत के मुख से उन कन्याओं का सन्देश सुना, तब वे सोचने लगे कि क्या सुई (अर्थात परिणयोत्सुक कन्याओं) से गिरि-पर्वत (अर्थात् मुझ जैसे दृढ़ संकल्पी जम्बू कुमार) का छेदन-भेदन किया जा सकता है ? मुझे वैराग्योन्मुख देखकर क्या वे कन्याएँ मुझ से परिणय-संस्कार कर मुझे मोहित करना चाह रही हैं और मुझे मेरे लक्ष्य से च्युत करना चाह रही हैं ?"।। 27।।



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



को कणयायलु थाणहु चालइ — कवणु रविहु सम्मु जिहु जि णिहालइ।
एही सत्ति पुहमि को धारइ — तवचरणु लिंतु महु वारइ।
सुरवइ पुणु असक्कु णिरु जेत्तहिं — केत्तिय मत्तु वि तिययणु तेत्तहिं।
इय चिंतिवि तेण वि णउ बज्जिउ — पाणिग्गहण कज्ज पडिवज्जिउ।
5 तं णिसुणेवि दूउ संतोसिउ — भव्वु-भव्वु इम पुणु-पुणु घोसिउ।
गयउ गंपि वणिणाहहँ कण्णहँ — कहिउ तंपि विहसेवि पसण्णहँ।
बिहिंमि कुलहिं आणंदु पवट्टिउ — राएं कुमरिहु चित्तु चहुट्टिउ।
मंगलतूरइँ गहिरइँ वज्जिय — कामिणि विहंहि गीयइँ सज्जिय।
मंडउ रयउ सयण बहु मिलिया — तोरण-वद्धरयण-गण कलिया।
10 जय-जय सद्दें वरु सुपइट्ठउ — मउडं किय सिरु लोयहिं दिट्ठउ।
हुउ पयरणु सहुं कण्ण चउक्कें — किं तेण जि पुणु णेह-विमुक्कें।
सहुं भज्जहिं वरु णिय घरि आयउ — एत्तहिं रवि अच्छवणि परायउ।

घत्ता– रइ-हरु सज्जेप्पिणु कुंथु सरेप्पिणु जिणमइ सुण्हइं भणइं पुणु।
तिहं किज्जहु दच्छिए अज्ज मयच्छिए जिह राइज्जइ पिउ सगुणु।। 28।।

---

**कुमार जम्बू का चार - वणिक् कन्याओं के साथ विवाह सम्पन्न हो जाता है।**
**जम्बू की माता जिनमती अपनी चारों पुत्र-वधुओं को एक व्यावहारिक सलाह देती है।**

कुमार जम्बू कहता है कि– "कनकाचल (सुमेरुपर्वत) को कौन विचलित कर सकता है। तेजस्वी सूर्य के सम्मुख जाकर सीधे से ही कौन देख सकता है। ऐसी किसकी शक्ति है, जो पृथिवी के भार को धारण कर सके और ऐसा कौन शक्तिशाली है, जो तपाचरण से मुझे रोक सके ? सुरपति इन्द्र भी जहाँ दृढ-संकल्पी को रोक पाने में अशक्य हो जाता है, तब फिर इन वणिक्-कन्याओं की तो सामर्थ्य ही क्या, जो मुझे तपाचरण से रोक सकें।"

यह विचार कर भी जम्बू कुमार ने सन्देशवाहक-दूत के कथन की उपेक्षा नहीं की और पाणिग्रहण-संस्कार करने की स्वीकृति दे दी।

कुमार जम्बू का यह निर्णय सुनकर वह दूत बड़ा सन्तुष्ट हुआ और "भव्य-भव्य" का बार-बार उद्घोष किया और वहाँ से चल पड़ा। वणिक्-पुत्रियों के पास जाकर प्रसन्नतापूर्वक हँसते हुए उन्हें पूरा वृत्तान्त कह सुनाया। दोनों ही (वर-कन्या के) परिवारों में आनन्द का पारावार न रहा किन्तु कुमार जम्बू के चित्त को तो मानों कोई चिहुटी ही काट रहा था। गम्भीर तूरादि बाद्य बजाये जाने लगे। कामिनी युवतियाँ विविध प्रकार के संगीत कर रही थीं। मण्डप लगाया गया। वहाँ स्वजन परस्पर में मिलने लगे। रत्नजटित तोरणद्वार सजाये गये। जय-जयकार के घोष के साथ ही मुकुट से अलंकृत शीर्ष वाले वर (कुमार जम्बू) को सभी ने देखकर हर्ष व्यक्त किया। पुनः स्नेह-विमुक्त उन कुमार जम्बू के साथ (दिन के समय में ही–) उन चारों कन्याओं के फेरे पड़ गये।

अपनी चारों भार्याओं के साथ वे वर-राजा जब अपने घर आये, तब तक सूर्य अस्ताचल-गामी हो गया था।

घत्ता– पुनः रतिगृह को सजाकर भ. कुन्थुनाथ का स्मरण कर माता जिनमति ने उन चारों कन्याओं से कहा कि –"हे कुशल, हे आर्य मृगनयनियो, तुम लोग ऐसा प्रयास करना कि जिससे तुम्हारे प्रियतम में राग-भाव जागृत हो सके"।। 28।।



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



वासहरि पइट्ठउ कुमरु मणिट्ठउ वर पल्लंकसुसोहियए।
पुणु चारिवि णववहु जिणमइयए लहु पट्ठवि मण-मोहियए।। छ।।

पिहिवि कवाड पुणु वि रइगेहहु आय जणणि वाहुडि सुव-णेहहु।
पल्लंकोवरि कुमरु परिट्ठिउ चहु पासहि तिय-यणु उक्कंट्ठिउ।
5 भज्जहँ रूवसिरि अवलोइवि अप्पा णाण-गुणें संजोइंवि।
चिंतइ जंबू-सामि विसुद्धउ काम-भुवंगि भुवणु जि खद्धउ।
मूढउ तिय-रूवें मोहिज्जइ तं पेच्छेप्पिणु खणि-खणि खिज्जइ।
मुहुँ-लाला विट्टलु विलिसावणु वयण-कमलु तहु भणइं दयावणु।
रुहिर-पूइहु गंध-णिवासउ मुत्त-पुरीसह-किमि-आवासउ।
10 विसयंधु जि तणु चंगउ मण्णइ रइ-णिहाणु जडु तिं पुणु मण्णइ।
जसु णामग्गहणें लज्जिज्जइ तासु संगु किह एच्छु विहिज्जह।
णाण-सरूउ चएवि जहिंच्छइ विसय-सुक्खु विसु कवणु समिच्छइ।
को अप्पाणउं कम्महि बंधइ दुग्गइं गमणु कवणु इह संधइ।
तिय सुह-गइं पुरहुयहु अग्गल तिय दीवहु-सिहेव अइ चंचल।
15 तियहिं काय-कुंडहि मज्जेप्पिणु चउगइँ भमइँ सीलु गंज्जेप्पिणु।

---

**जम्बू कुमार अपनी नवविवाहिता पत्नियों के साथ रतिगृह में प्रविष्ट हुए। एक ओर उन्होंने पत्नियों का सौन्दर्य देखा तो दूसरी ओर अपने चैतन्य आत्मा के स्वरूप का चिन्तन करते हुए वे दोनों की तुलना करने लगे। जम्बू की इस प्रवृत्ति से वे उदास हो गईं।**

घत्ता– वे कुमार जम्बू सुसज्जित रति-कक्ष में प्रविष्ट हुए और सुन्दर सजे हुए पलंग पर बैठ गए। पुनः माता जिनमती ने भी तत्काल ही मन मोहक अपनी चारों नव-विवाहिता पुत्रवधुओं को उसके पास भेज दिया।

पुत्र-वत्सला-माता भी वहाँ आई और उसने उस रतिकक्ष के कपाट बन्द करा दिये। पलंग पर कुमार तो बैठे ही थे, वे चारों उत्कण्ठित त्रियागण भी जाकर वहीं बैठ गईं। जम्बू कुमार ने अपनी पत्नियों के रूप-सौन्दर्य को देखकर तथा अपने आत्मा के विशुद्ध ज्ञान-गुण को देखकर मन में विचार किया कि– "काम रूप भुजंग ने तो सचमुच ही संसार को निगल लिया है। मूढात्मा त्रिया के रूप-सौन्दर्य से वह विमोहित हो जाता है। वह उसे देखता हुआ क्षण-क्षण में काल द्वारा खाया जाता रहता है। उस विलासिनी के मुख से लार रीसती रहती है, फिर भी उसका प्रेमी उसके मुख को 'मुखकमल' कहता फिरता है। उसका शरीर रक्त एवं पीव की दुर्गन्ध से भरा हुआ है और जो मल-मूत्र और अनेक कृमियों का घर है, फिर भी विषयांध-जन उसके शरीर को चंगा मानते हैं और मूर्खतावश उसे रति का निधान (भण्डार) मानते हैं। जिस विलासिनी का नाम लेने मात्र से लज्जा आती है, उसका संग कैसे किया जा सकता है?"

ज्ञान-स्वरूप आत्मा को छोड़कर विषय-सुख रूपी विष की कौन इच्छा करेगा? अपने को कर्मों के बन्धन में कौन बाँधेगा और दुर्गति-गमन कौन चाहेगा? त्रिया दीप-शिखा के समान अति चंचला होती है। उसके साथ सुख- भोग नीच-गति को प्रदान कराने वाला अर्गला होता है। त्रिया के कायरूपी कुण्ड में स्नान कर शील को भंग कर यह जीव चारों गतियों में गमन करता रहता है, भटकता फिरता है।"



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कुमार जम्बू स्वामी अपनी नव-विवाहिता पत्नियों के साथ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

घत्ता– इमय मणि चिंतंतउ ठिउ गुणवंतउ जाम ताम ता पत्तियहिं।
दिढ-चित्तु णियच्छिवि सपिउ पडिच्छिवि मुक्कु सासु ससिवत्तियहिं।। 29।।

## 30

तहिं खणि सविलक्ख हसंतियाइँ अण्णोण्णइँ सण्ण कुणंतियाइँ।
ता कमलसिरीए सवत्तियाउ अणुकमेण ठाउ आलत्तियाउ।
णाहहु कवि सहिए अउव्व भंगि विब्भमु संकेल्लहि हे वरंगि।
किं सँठहु तुहु लग्गहिं मयणवाण मा करहु खेडु एयहु समाण।
5 गीयहु णट्टहु णउ मुणइं भेउ आराहइ इहु थिरु थक्कु देउ।
एयहु अविवेयहु णहु लग्गु वंच्छइ तव णिट्ठइं एहु सग्गु।
दुल्लहु देवाहंमि मणुवलोउ तं पाविवि दच्छु ण चयइ भोउ।
एहु जि मंदिरु सग्गहु विमाणु अच्छर तुम्हइं पिउ सुर समाणु।
संपज्जइ मण इंच्छियउ एच्छु णउ किंपि जि अहिंयणु अच्छि तेच्छु।
10 सा हीणु चइवि संदेह चित्तु भोयणु सिद्धइ भिक्खा-णिमित्तु।
वरदत्तु भमइं अम्हहं जि एहु सग्गापवग्गु वंच्छइ अणेहु।

---

घत्ता– अपने में ऐसा विचार कर वे गुणवन्त जम्बू कुमार जब रतिकक्ष में बैठे थे, तभी उनकी चन्द्रमुखी पत्नियों ने उन्हें दीक्षा-ग्रहण के लिए दृढ़-निश्चयी मानकर उनकी ओर देखकर दीर्घ-निश्वास छोड़ी।। 29।।

**समय कम था और उस दृढ़ संकल्पी जम्बू को अपनी ओर रिझाना कठिन।**
**फिर भी अपनी कामुक क्रीड़ाओं एवं कथावार्त्ताओं द्वारा वे उसे रिझाने का प्रयत्न करती हैं।**
**इसी प्रसंग में प्रथम नवोढा पत्नी कमलश्री उन्हें धनदत्त की कहानी सुनाती है।**

वे चारों नव-विवाहिताएँ जम्बू की ओर व्यंग्य भरी हँसी हँसती हुई परस्पर में एक-दूसरे की ओर कनखियों से इशारे करती रहीं। फिर उन्होंने कमलश्री से कहा कि– "हे वरांगि" तुम सबसे पहिले अपनी भंगिमाएँ दिखलाते हुए विभ्रम पूर्वक कुछ विचित्र लीलाएँ करते हुए अपनी ही किसी सखी के साथ अपने नाथ जम्बू को लक्ष्य करके वार्तालाप करते हुए कहना– "कि क्या नाथ के पास बैठते ही तुझे काम-वाण लग गया है? किन्तु तू इसका खेद मत कर। ऐसे अवसर पर गीत एवं नृत्य में भेद नहीं करना चाहिये और अपने नाथ को ही देव मानकर उसकी आराधना करना चाहिये। इस कार्य में अविवेकी होने का पाप नहीं लगता। तपोनिष्ठ होने वालों के लिए इसे ही वांछित स्वर्ग मानना चाहिए।"

हे कमलश्री, तुम उसे पुनः कहना कि– "हे देव, यह मनुष्य जन्म बड़ा ही दुर्लभ है। अतः जो कुशल होता है उसमें मिलने वाले भोगोपभोगों का त्याग नहीं करता। आपका यह जो भवन है, यह भी स्वर्ग-विमान के समान ही है और हम लोग जो आपकी भार्याएँ हैं, वे स्वर्ग की अप्सराओं के समान ही हैं। आपके सम्मुख हम लोग यहाँ प्रस्तुत हैं। अतः उनका आप यथेच्छ उपयोग करें। अब मैं और अधिक क्या कहूँ?"

यह सुनकर जम्बू ने उसे उत्तर देते हुए कहा– "सन्देहचित्त वाली इस कमलश्री ने बहुत ओछी बात कही है। आत्म-साधना करने के लिए भोजन तो भिक्षावृत्ति (आहारदान) से मिल जाता है। स्वर्गापवर्ग के कांक्षी वरदत्त जैसे अनेक लोग तो इस संसार में ही भटकते-फिरते हैं।"



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

घत्ता– हलि एक्कु कहाणउं कहंमि पहाणउं जइ महु उवरि जि रोसु पुणु।
तुम्हहिं णउ किज्जइ ता जि कहिज्जइ णाहहु हालिहु तुल्लु मणु।। 30।।

**31**

सा कहइ सुणइं जिणवई तणुउ सा वत्ति तहं वि विंभिय मणउ।
हालिउ धणदत्तु णामेण चिरु होंतउ सो हलु खेंडतु णिरु।
तहु भामिणि णाहहु णेह हुया णंदणु जणेवि सा एक्कु मुया।
सुउ वड्ढिउ हुउ कुल-भार-धरु सुरकरि कर-सम सो थूल करु।
5 तिं हलिणा वुड्ढत्तणि जि पुणु किउ पाणिग्गहणु जि सहिए सुणु।
सा तरुण तरट्टि मरट्ट हुया सोहग्गें गव्विय ललिय-भुया।
तहु विरहें तप्पइ थेरु मणि चाडुय-सय जंपइ खणि जि खणि।
एक्कहिं दिणि रयणिकुडी हरहिं विण्णिवि सुत्तइँ रइ-सुहयरहिं।
पुणु अद्ध-रत्ति तहिं तासु पिया मणि धारेप्पिणु अहि-माण किया।
10 कडवट्टु देवि फेरेवि मुहु थक्की सा जाता सो अबुहु।
पिय वयणहिं अणुणइ मयण-वसु पिय हच्छहिं ठेल्लइ सा जि तसु।

---

घत्ता– यह सुनकर कमश्री ने पुनः कहा– अच्छा और भी सुनिये– "यदि आप क्रोधित न हो तो मैं एक कथा प्रधान नायक हालिक की कहानी आपको कहती हूँ। हे गुणज्ञ नाथ, आप हमें अपनी चेरी मानिये और मेरी वह कथा सुनिये।। 30।।

**कमलश्री जम्बू कुमार के मन को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए उस हालिक (किसान) धनदत्त की कहानी सुनाती है, जो वृद्धावस्था में एक सुन्दर किन्तु गर्वीली नवतरुणी से विवाह कर उसकी डाँट-फटकार सुन- सुन कर दुःखी रहने लगता है।**

"हे जिनमती के सुपुत्र जम्बू – मैं जो विस्मयकारी कथा कह रही हूँ, उसे सावधान-चित होकर सुनो– "पुराकाल में धनदत्त नाम का एक हालिक (किसान) था, जो निरन्तर हल चलाया करता था। उसकी स्नेहवत्सला एक प्रियतमा थी। वह एक पुत्र को जन्म देने के बाद ही मर गई। ऐरावत हाथी की सूँड के समान स्थूल भुजाओं वाले उसके पुत्र पर गृह-परिवार का सारा बोझ आ गया।

हालिक ने अपनी वृद्धावस्था में भी अपने साथियों की सलाह से अपना दूसरा विवाह कर लिया। ललितभुजाओं वाली वह नव-विवाहिता बड़ी हट्टी-कट्टी तड़क-भड़क वाली नवतरुणी थी और स्वभाव से बड़ी गर्वीली थी। जब वह वृद्ध हालिक अपनी प्रथम पत्नी के विरह में तड़फने लगता था, तब वह दूसरी पत्नी समय-समय पर उसे मुँह देखी मीठी-मीठी चाटुकारिता भरी बातें कह-कहकर ढाढस बँधाती रहती थी।

एक दिन वे दोनों पति-पत्नी रतिसुख में रत रहकर अपनी रत्नकुटी में सोए हुए थे। तभी आधी रात के समय अपने मन में अहंकार-भाव धारण किये हुए उसकी वही मूर्खा पत्नी उसे कड़वी खरी-खोटी बातें सुनाकर मुँह फेर कर खड़ी हो गई। उसके उस कामान्ध वृद्ध पति ने मधुर वचन कहकर उसकी बड़ी मनुहार की, फिर भी उसने उसे अपने हाथों से धक्का देकर ठेल दिया।



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

घत्ता– कडुवक्खर जंपइ कोहें कंपइ मा करु लावहि देहि महु।
ओसरु-ओसरु खल वुड्ढवि गयबल सीलु ण खंडमि काइं बहु।। 31।।

**32**

तउ पुत्तु समच्छु जि अच्छि गेहि — जे णंदण होंति वि मज्झु देहि।
ते तहु आणायर इह जणेण — जीवेसहि पुणु भिच्चत्तणेण।
तिं कारणि रइ-सुहु परिहरेमि — इहु परिहवहुहु णउ अणुसरेमि।
अहवा जइ तुहुं लंपडु जि तासु — ता णिहणहि लह जेट्ठहु सुयासु।
5 जि पुत्त हवेसहिं मज्झु कंत — ते भुंजावेसहि सुह महंत।
इम करहि चइविं जइ णेहु गाहु — ता हउँ भामिणि तुहु मज्झु णाहु।
तं णिसुविवि पामरु भणइं सहु — पिए पइँ जंपिउ णिरु लज्जणिहु।
मारिज्जइं ताएं केम पुत्तु — घर-भारहू खमु मह-विणय जुत्तु।
पच्चक्खु कुलक्खउ होइ मज्झु — अवजसु वट्टइ महियलि असज्झु।
10 अह तहु मारंतहु डरु जि अच्छि — सो जोव्वण हुउ महु सत्ति णच्छि।
णउ तासु पहुच्चमि हउँ सुकंति — तं णिसुणिवि सा जंपइ सुदंति।
हउँ मंतु कहेसमि णाह तुज्झु — जिम णउ अवजसु कंदलु ण हुज्झु।
तउ जीवहु णउ खलु किं पि हाणि — उट्ठेप्पिणु तुहुं पठमु जि विहाणि।

---

घत्ता– वह कड़वे-कर्कश वचन बोलने लगी, क्रोध से काँपने लगी और जब वह कुछ बोलता था, तो उसे वह चुप करा देती थी। वह कहने लगी कि– "हे ,खल, हे बल-विहीन बुड्ढे, अब आगे मैं किसी भी प्रकार अपने शील को खण्डित नहीं करने दूँगी।। 31।।

**हालिक धनदत्त अपनी नवपत्नी के अनुरोध से अपने पुत्र को जान से मार डालने के उपाय पर दुःखी मन से विचार करता है।**

हालिक पत्नी पुनः बोली– "तुम्हारी चल-अचल जितनी भी सम्पत्ति है, वह सब मुझे इसी समय अर्पित कर दो, अन्यथा तुम्हारे पूर्व-पुत्र की जो सन्तान होगी वह ज्येष्ठ होने के कारण, उसे ले लेगी और हमारी सन्तान को आज्ञाकारी बनकर उसके भृत्य की तरह जीवित रहना पड़ेगा। इसी कारण मैं अब रतिसुख का परित्याग करती हूँ, जिससे कि मुझे और मेरी होने वाली सन्तान को पराधीनता का अनुभव न करना पड़े अथवा यदि तुम्हें लंपट (कामान्ध) ही रहना हो, तो फिर तत्काल ही मेरी सलाह मानकर अपने ज्येष्ठ-पुत्र (पूर्व पत्नी के पुत्र) की हत्या कर डालो, जिससे मेरे जो पुत्र होंगे, वे उस सम्पत्ति का सुख-भोग कर सकें। यदि तुम्हें मेरा कथन स्वीकार हो, तभी हम और तुम पत्नी-पति के रूप में सुख पूर्वक रह सकेंगे।"

पत्नी का कथन सुनकर वह बेचारा हालिक धनदत्त बोला– "हे प्रियतमे, तुम्हारा कथन बड़ा ही लज्जित करने वाला है। मैं अपने उस पुत्र को कैसे मार डालूँ क्योंकि वह बड़ा ही विनयशील एवं गृहस्थी के भार-वहन में सक्षम है। ऐसा निन्द्य कार्य करने से प्रत्यक्ष में ही मेरे कुल का क्षय हो जायगा ओर पृथिवी मण्डल पर मेरा अपयश भी फैलेगा। उसकी हत्या करने में मुझे डर भी लगता है। वह अभी युवक है, अतः उसे मारने की शक्ति भी मुझ (वृद्ध) में नही है। अतः हे सुन्दरी, यह घृणित कार्य मेरी पहुँच के बाहर ही है।" धनदत्त का कथन सुनकर उसकी पत्नी बोली– "तुम्हारे जीवन में किसी भी प्रकार की हानि नहीं होगी। तुम ऐसा करना कि कल बड़े सवेरे-सवेरे उठकर सबसे पहिले–



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

घत्ता– णिय हलि सुवयल्लइं जोत्ति णवल्लइं करि पच्छइ पिय काइँ बहु।
15 तहु हलु वाहंतहु पुरउ चलंतहु च्छिंदिवि भारहिं सुवहु लहु।। 32।।

## 33

एहु मंतु पडिभयहु विवज्जिउ तं णिसुणिवि हलिणा पडिवज्जिउ।
होउ-होउ पिए एम करेसमि कल्लि स णंदणु हउँ मारेसमि।
तं णिसुणिवि सा हूय पसण्णी काम-केलि अणुहुत्त रवण्णी।
इय संकेय-वयण पुणु पुत्तें णिसुणिय णियड कुडीहर सुत्तिं।
5 पामरु पुणु सुपहाइ समुट्ठिउ णिय णंदण मारण उक्कंट्ठिउ।
णिसिय अग्गुलंगलु सिरि धारिवि गयउ जाम जडु कवडु समारिवि।
ता अग्गइं सुउ दिट्ठु तुरंतउ पक्कुउ धण्ण खेत्तु खेडंतउ।
जंपइ पुत्त-पुत्त किं भुल्लउ किं णासहि घर-वित्तु अतुल्लउ।
भणइं ताय हउँ इहु उम्मूलमि अण्णु ववमि पुणु एच्छु ण भूलमि।
10 णिप्पज्जेसइ सो गरुयारउ भणइं सो जि किं सुय गहिलारउ।
छंडिवि सिद्धु असिद्धउ वंच्छहि भावि लाह संदेहें गच्छहि।
भासहि सुउ जं रयणिहिं वुत्तउ महु मारेप्पिणु ताय णिरुत्तउ।

---

घत्ता– अपने हल में जोते जाने वाले सुन्दर नये बैलों को लेकर अपने पुत्र के पीछे-पीछे चलना। तुम्हारा पुत्र खेत में हल चलाता हुआ आगे रहेगा ही, उसी समय तुम उसके पीछे अपने बैल छोड़ देना, जिससे वे उसे सींगों से छेदकर जान से मार सकें।। 32।।

**अपनी नवोढ़ा दुष्टा पत्नी के आग्रह से धनदत्त अपने कर्मठ प्रियपुत्र की हत्या करने के लिए घर से प्रस्थान करता है किन्तु सहसा ही एक ऐसा नाटकीय मोड़ आता है कि उसकी हत्या न कर वह उसे अपने गले से लगा लेता है।**

अपनी पत्नी की सलाह को सुनकर भयभीत होकर भी वह हालिक उसे स्वीकार कर लेता है और उसे वचन दे देता है कि "ऐसा ही होगा– ऐसा ही होगा मैं कल जाकर अपने पुत्र की हत्या कर दूँगा।" अपने प्रियतम की यह प्रतिज्ञा सुनकर पत्नी बड़ी प्रसन्न हुई और उसके साथ काम-क्रीड़ा में आसक्त हो गई।

संयोग से अपने माता-पिता का यह (दुखद–) सांकेतिक वार्त्तालाप पास के कमरे में सोए हुए उसके पुत्र ने भी सुन लिया। वह भयाक्रान्त पिता अत्यन्त तीक्ष्ण धार वाले लोहे के अंगवाले हल को सिर पर रखकर घर के किवाड़ों को धीमे से बन्द कर पुत्र के पीछे-पीछे खेत की ओर चल पड़ा।

उसने आगे जाकर देखा कि उसका पुत्र पके हुए धान के खेत में फिर से हल चला चलाकर धान को उखाड़ रहा है। उसे देखकर पिता ने पूछा कि– "हे पुत्र, क्या तू भूल गया है कि तू घर का अमूल्य धन नष्ट कर रहा है। यह सुनकर पुत्र ने उत्तर देते हुए कहा– हे तात, मैं इस धान को उखाड़ कर फेंक दूँगा, इसके स्थान पर दूसरी नई धान बोऊँगा। फिर आगे ऐसी भूल नहीं करूँगा। हे पिताजी, आप इसे समझने का प्रयत्न कीजिये कि पकी हुई धान को उखाड़कर नई धान बोकर तो उसकी क्षतिपूर्ति कर ली जायगी, किन्तु ज्येष्ठ पुत्र को मारकर उसे पुनः कहाँ से प्राप्त किया जा सकेगा? उपलब्ध को छोड़कर अनुपलब्ध को प्राप्त करने की इच्छा करने से भविष्य का लाभ तो



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

णव महिला णंदणु पुणु होसइ तुव मणि किं इहु णिच्छउ पोसइ।
तं णिसुणेप्पिणु धाविवि पामरु कंठि लग्गि तहु रोवइ दुहयरु।

घत्ता– तह कंतु णवल्लउ हालिहु तुल्लउ महइ किलेसें सग्ग सुहु।
तं संदेहासिउ कट्ठ पयासिउ लद्धउ सुहुच्छंडइ अबुहु।। 33।।

## 34

तं णिसुणिवि चिंतइ वरु बहु जसु पेच्छहु-पेच्छहु महिलहिं साहसु।
किहं हउँ कियउ आए खणि पामरु जो णिच्च जि खेडइ हलु अहयरु।
मुक्खत्तणिए तिण-समु मण्णहिं जं-जं रुच्चइ तं-तं भण्णहिं।
तोवरि हउँ जि किंपि कह भासमि एयहं मण संसउ णिण्णासमि।
5 इय चिंतिवि जंपइ सुणि सारी भद्दि कहा महु एक्कु पियारी।
वायसोव्व हउँ विसयहिं लुद्धउ जामि ण खयहु जि णाण समिद्धउ।
विंज्झयलि मुउ एच्छु महाकरि पवहंतउ पावसि णम्मयसरि।
रिट्ठें एक्कें भक्खिज्जंतउ सो वहंतु मह-सायरि पत्तउ।
आमिस लुद्धु जि उयरहु होंतउ णीसरियउ वायसु जि तुरंतउ।

---

संदिग्ध ही हो जाता है।"

पुत्र ने पुनः कहा– "हे तात्, रात्रि में आपने मुझे मारने का निर्णय किया था और हमारी सौतेली-माता का जो पुत्र होगा, क्या यह निश्चित है कि वह आपकी वृद्धावस्था में आपका भरण-पोषण करेगा ही?" पुत्र का यह कथन सुनकर वह बेचारा दुखी पिता उसके गले से लगकर रोने लगा।

घत्ता– उस नवोढा पत्नी तथा हालिक धनदत्त की तुलना में स्वर्ग का सुख प्राप्त करना तो और भी बड़ा क्लिष्ट है। क्योंकि वह सन्देहाश्रित तथा कष्ट प्रकाशक होता है। अतः हे जम्बू, मैं तो यही कहूँगी कि उपलब्ध सुख को अज्ञानी लोग ही छोड़कर भविष्य में वांछित सुख प्राप्त करने की आकाँक्षा करते हैं, जो सर्वथा सन्दिग्ध होता है।। 33।।

**कमलश्री के कथानक के उत्तर में कुमार जम्बू उसे माँस-लोलुपी कौए का कथानक सुनाकर बतलाते हैं कि किस प्रकार लालचवश वह दुखद मृत्यु को प्राप्त करता है।**

कमलश्री के मुख से हालिक की पत्नी सम्बन्धी कथानक सुनकर कुमार जम्बू विचार करने लगे कि "इस महिला का साहस तो देखो क मेरी तुलना उस भयाकुल (पामरु) के साथ कर रही है, जो नित्य ही अपने खेत में हल चलाया करता है। वह मूर्खा मुझे तृण के समान तुच्छ समझ रही है और इसके मन में जो कुछ भी अच्छा लगता है वही-वही कहे जा रही है। तो भी उसके उत्तर में मुझे भी तो कुछ कहना ही चाहिए, जिससे इसके मन का संशय दूर हो सके।" यह विचार कर उन्होंने (जम्बू ने) कहा– "हे बुद्धिमति प्रियतमे, भद्रे, मेरी भी एक कहानी सुनो। (लोभी–) वायस (कौवे) के समान यदि मैं विषयों का लोभी बन जाऊँ तो हमारे सुज्ञान की समृद्धि किस काम की?"

"इसी विन्ध्याचल के किनारे एक महान् हाथी मरा और वह वर्षा ऋतु में नर्मदा नदी में बहने लगा। वह कौवा अकेला ही उस पर बैठे-बैठे उसका माँस खाता रहा और इस प्रकार वह बहते-बहते महासमुद्र में जा गिरा। माँस के लोलुपी अन्य समुद्री जन्तु भी उसका जब माँस खाने लगे, मगरमच्छों ने भी उसके कलेवर को जब खा डाला, तब



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

10 तं जि कलेवरु मयरहिं भक्खिउ उड्डिउ गयण मग्गि पुणु पक्खिउ।
चाउद्दिसु सो धावइ दीणउ कं कं कं भणंतु हुउ रीणउ।
गिरि-वणु-गामु-थामु-णउ दीसइ सव्वच्छ जि कल्लोवमु लहिं भीसइ।
थोउ भमेप्पिणु पुणु गयणहु वउ काउ वराउ विसय-लुद्धउ मुउ।

घत्ता– तिह तुम्हहं सग्गिं लग्गिवि अंगो विसयामिस लुद्धउ जि हउँ।
15 संसार-समुद्दहिं दुक्ख-रउद्दिहिं जामि वियक्खणु केम खओ।। 34।।

## 35

कणयसिरी पुण कहइ कहंतरु कइलासहु सिरि एक्कु जि वाणरु।
णिवसंतउ तिं मुणिवर वयणहु धम्मु सुणेप्पिणु णासिय मयणहु।
सो अण्णहिं दिणि पव्वय-सिहरहु पडिवि मुवउ पाविय दुह विहुरहु।
हुउ सुरु कइय मउड-कुंडल-धरु तं पेक्खेवि कोवि विज्जाहरु।
5 विंभियमणु सो तियसहु जंपइ जहिं कइ मरिवि देउ हुउ संपइ।
तहिं जइ हउँ खगु मरमि पडेप्पिणु ता सिउ पावंमि तणु मेल्लेप्पिणु।
एम भणेप्पिणु तिय वारंतहु गिरि सिहरहु णिवडिवि मूवउ लहु।
सो वाणरु जायउ रत्ताणणु अहणिसु वासिउ जेण जि काणणु।
अवगण्णिवि कंतहि वयणुल्लउ लद्धउ दुक्खु जि तेण अतुल्लउ।

---

वह वायस पक्षी वहाँ से डरकर तत्काल आकाश में उड़ गया। वह दीन-हीन बेचारा पक्षी चारों दिशाओं की ओर काँव-काँव करता हुआ दौड़ने लगा, किन्तु सब व्यर्थ, क्योंकि उसे वहाँ कहीं भी गिरि, वन, ग्राम आदि रुक सकने योग्य स्थान नहीं दिखा। सर्वत्र भयंकर समुद्री लहरें ही दिखाई दे रहीं थीं। थोड़ा इधर-उधर भटककर (थककर–) अन्त में विषयों का लोभी वह बेचारा कौवा जिस प्रकार वहीं समुद्र में डूबकर मर गया–

घत्ता– ठीक, उसी प्रकार तुम लोगों के साथ अंगों से अंग मिलाकर मैं भी क्या विषयों का लोभी बन जाऊँ और भयानक दुखों से व्याप्त संसार रूपी समुद्र में उस विषयान्ध-पक्षी के समान ही डूब जाऊँ''।। 34।।

### कनकश्री नामकी दूसरी नवोढा पत्नी जम्बू को बन्दर की कहानी सुनाकर उसे अपनी ओर मोहित करने का प्रयत्न करती है।

जम्बू कुमार की कथा सुनकर कनकश्री ने उन्हें पुनः एक कथा सुनाते हुए कहा– कैलाश पर्वत-शिखर पर एक बन्दर निवास करता था। उसने एक मुनिराज का उपदेश सुनकर अपनी मदनाभिलाषा का त्याग कर दिया था।

किसी एक दिन वह पर्वत-शिखर से गिरकर कष्ट पूर्वक मरा और स्वर्ग में जाकर मुकुट एवं कुण्डल-धारी देव के रूप में उत्पन्न हुआ। उसे देखकर किसी विद्याधर ने विस्मित मन से अपनी पत्नी से कहा कि जब यह बन्दर मरकर देव-योनि में उत्पन्न हो सकता है, तब मुझ जैसा खग (विद्याधर) यदि पर्वत-शिखर से गिरकर मरे, तो शरीर छोड़ते ही वह मोक्ष प्राप्त कर सकता है।

यह कहकर वह अपनी विद्याधरी द्वारा रोके जाने पर भी तत्काल ही जाकर पर्वत-शिखर से गिरा और मर गया। किन्तु (दुर्भाग्य से–) उसे ललमुहे बन्दर की योनि मिली और उसे जंगल में रहना पड़ा। इस प्रकार अपनी पत्नी विद्याधरी की सलाह न मानने के कारण उस विद्याधर को अनेक असहनीय दुख भोगना पड़े।



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

10 घत्ता– सा हीणइ सुक्खइँ चइवि पयक्खइँ जिह वहिणिए णट्ठउ खयरु।
तिह दइवेंच्छलियउ रइतरु फलियउ छंडइ एहु जि तुम्हवरु।। 35।।

**36**

तं णिसुणिवि जिणमई सुउ चवए अडविहिं कइ एक्कु जि जूहवए।
णिवसइ कामाउरु खर डसणु अहणिसु सेवइ रइ-सुहु कसणु।
जं-जं किर वाणरि सुउ जणइ तं-तं सो पाविउ णिरु हणइ।
वाणरि पालइ मणि महिवि रई इम जा सो णिवसइ पावमई।
5 ता वणयरि एक्कु सगब्भ हुया अण्णहिं वणि जाइवि सा पसुया।
जायउ पुत्तु जि हुउ पोढत्तणु सेवइ एकल्लउ च्छण्णवणु।
पुच्छइ जणणिहि पिंगल णयणु कहि अंबि कच्छ मुज्झु जि जणणु।
सा भणइ म गिण्हहिं णामु तहु तेण जि सुय णिहणियं आसि बहु।
ते मइँ तुहुं इहच्छण्णइं जणिउ इय वयणु सुणिवि तिं सिरु धुणिउ।
10 कहिं णिवसइ मायरि सो जि खलु तहु दंसावमि हउँ पाव फलु।
ता जणणिए णीयउ सो जि तहिं णिवसइ पिउ जर-ढुकई सु जहिं।
कुद्धाउर मक्कुड बे वि जणा धाविय अण्णोंण्ण जि हणण मणा।

---

घत्ता– तात्पर्य यह कि उपलब्ध सुखों को छोड़कर वह विद्याधर रति रूपी वृक्ष के फल को छोड़कर दैव (दुर्भाग्य) द्वारा छला गया। अतः हे वरराज (प्रियतम), तुम अपनी यह प्रवृत्ति छोड़ो। मेरी सलाह मानों और हम लोगों की ओर अपना मन मोड़ो।। 35।।

**अपनी नवोढा पत्नी कनकश्री की कथा सुनकर उसके उत्तर में कुमार जम्बू भी उसे विषयाभिलाषी यूथाधिपति बन्दर की कथा सुनाकर कहते हैं कि दुर्गति से बचने के लिए कठोर तपस्या करना ही हितकारी होगा।**

तब नवोढा पत्नी कनकश्री की कहानी सुनकर उसके उत्तर में जिनमती के पुत्र जम्बू ने भी अपनी एक कहानी सुनाते हुए इस प्रकार कहा–

किसी एक अटवी में एक यूथपति-कपि (बन्दर) निवास करता था। वह बड़ा ही कामातुर था। वह प्रतिदिन डटकर रति-सेवन का सुख-भोग करता रहता था और जब-जब बन्दरी की सन्तान होती थी, तभी-तभी वह उसे (सन्तान को) निर्ममता पूर्वक मार डालता था। वह पापमयी बानरी भी अपने मन में रतिसुख को बहुत महत्व देती और इस प्रकार वह समय व्यतीत कर रही थी। वही बानरी एक बार पुनः जब गर्भवती हुई तभी उसने अन्य किसी दूसरे स्थान पर जाकर एक पुत्र को जन्म दिया। उस नवोत्पन्न शिशु का वहीं छिप-छिपकर पालन-पोषण करने लगी और जब वह पुत्र प्रौढ़ावस्था को प्राप्त हुआ, तब पीताभ-नयन उस पुत्र ने अपनी माता से अपने पिता का नाम और पता पूछा। माता ने घृणा से भरकर कहा कि तू उसका नाम मत ले। क्योंकि उसने तुम्हारे जन्म के पहिले उत्पन्न हुए अनेक भाई-बहनों को मार डाला है। इस कारण मैंने उससे दूर हटकर यहाँ आकर तुम्हें जन्म दिया है। माता- बन्दरी का यह कथन सुनकर उस पुत्र ने अपना माथा पीट लिया और बोला कि– हे माता, मुझे बतलाओ कि वह रहता कहाँ हैं, चलकर उसे दिखाओ। मैं तो उसके पापों के फल के रूप में उत्पन्न हुआ हूँ।

उसकी माता (बन्दरी) उसे वहाँ ले गई, जहाँ उसका वृद्धावस्था-ग्रस्त पिता (बन्दर) रहता था। पिता-पुत्र ने एक- दूसरे को देखा और क्रोधातुर होकर वे एक-दूसरे को मारने के लिए झपट पड़े। तभी कुटिल स्वभाव वाला वृद्ध बन्दर-पिता रण



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ता णट्ठउ जरु छंडेवि रणु — इयरु वि कुढिलग्गउ थूल-तणु।
छंडाविउ वणु तं तेणहु — सो मह-तिसाइं पीडियउ लहु।
15 जा सरु पेच्छिवि पाणिउ पिवए — ता णिय पडिबिंबु जि सो णियए।
जाणिउ तिं ढुक्कउ चइवि कई — कद्दम खुत्तिवि मुउ पावमईं।

घत्ता– तिह विसय-तिसासिउ भय-संतासिउ होइवि खइणउ जामि हउँ।
जम्मंवुहि सोसणु सुहगइ पोसणु करमि दुविहु पुणु घोरु तओ।। 36।।

## 37

कहइ वि णायसिरि पुणु जि कहाणउ — अम्हहं पिउ संखिणिहिं समाणउ।
चिरभवि असुह-कम्म-घण ताडिउ — णामें संखिणि कुवि कव्वाडिउ।
होंतउ बहु दालिद्दें भुत्तउ — कट्ठहु कारणि सो जि णिरुत्तउ।
पडिदिण अडविहिं दीणउ गच्छइ — उयरु भरइ पुणु सो मह कच्छइ।
5 अण्णहिं दिणि एक्कु जि रूवउ तहु — भोयणु करिवि सेसु थिउ जा लहु।
ता रहसा रूढउ सहु महिलए — भणइं कवाडिउ थक्कु णिहेलए।

---

छोड़कर वहाँ से खिसक गया और इस प्रकार स्थूल-काय उस पुत्र-बन्दर ने उसे उस स्थान से निकाल बाहर कर दिया।

जंगल में उस वृद्ध-बन्दर को बड़ी जोर से प्यास लगने के कारण वह तड़पने लगा। उसने वहीं पर एक सरोवर देखकर जब वह पानी पीने के लिए झुका तभी उसने उस पानी में अपना प्रतिबिम्ब देखा। तब उसने जाना कि वह तो बूढ़ा होकर शिथिल हो गया है इसीलिए कपि-समूह उसे छोड़कर भाग गया है और उसी समय वह पापी वहाँ कीचड़ में फँसकर मर गया।

घत्ता– वह जम्बू विचार करता है कि बन्दर के समान ही काम-पिपासा की पूर्ति के लिये आतुर एवं भय से त्रस्त होने के पूर्व ही मैं, जन्म-मरण रूपी सागर का शोषण करने वाले तथा शुभ गति के पोषक द्विविध कठिन तपाचरण को क्यों न धारण कर लूँ, जिससे दुर्गति-गमन से बच सकूँ।। 36।।

**तीसरी नवोढा पत्नी नागश्री की कथा के अनुसार-संखिणी नामका लकड़हारा अपनी बचत का एक रुपया कलश में बन्द कर जमीन में गाड़ देता है। दूसरा धनी व्यक्ति भी अपनी समस्त सम्पत्ति उसके कलश में सुरक्षित कर देता है और चोरों से भयमुक्त होकर वे दोनों सूर्य-ग्रहण-स्नान के लिये चल पड़ते हैं।**

जम्बू कुमार का कथानक सुनकर उसके उत्तर में जम्बू की तीसरी नवोढा पत्नी नागश्री ने जम्बू कुमार की तुलना संखिणी नामक कव्वाडिक (लकड़हारा) से करते हुए अपनी रोचक कथा इस प्रकार सुनाई– "पूर्व-जन्म में अपने अशुभ-कर्म रूपी धन से प्रताड़ित संखिणी नामका एक लकड़हारा रहता था, जो बड़ा ही दरिद्र था। वह बेचारा प्रतिदिन जंगल में जाकर सूखी लकड़ियाँ लाकर अपने गाँव में बेचता था और बड़ी कठिनाई से अपना भरण-पोषण करता था।

अन्य किसी एक दिन उसने भोजन आदि की सामग्री जुटाकर एक रुपये की बचत कर ली। इस बचन के रहस्य की बात उसने अपनी पत्नी को बतलाई और कहा कि– हे, सुन्दरि, हमारे पुण्य के उदय से यह गौरव बढ़ाने वाली बचत हुई है। अतः इस विशेष धन को किसी पर्व-दिन पर खर्च करने के लिए सुरक्षित रखना है। यह कहकर उसे उसने एक कलश में रखकर उसे भूमि में गाड़ दिया।



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कंति अम्ह पुण्णु जि गरुयारउ पव्व दिणहुं धणु रक्खहु सारउ।
इय भणेंवि सो कलसिच्छु हि घेप्पिणु रक्खिउ महियलि मज्झि णिहेप्पिणु।
अह एक्कु दिया रवि गहणहु दिणि चलियइं सयल णिहाणइं तहि खणि।
10 तिच्छ-णहाण-कारणि सुपहाणहिं मणिकंचण पूरिय-सुणिहाणहिं।
संखिणि णिहि पुणु सच्छहिं चल्लिया खडहडंति पेच्छिवि ते हल्लिया।
भएण पुणु वि ते भणणह लग्गा लुंटिव्वा तक्करहिं सभग्गा।
एक्केक्कउ माणिक्कु रवण्णउ घल्लिवि एहु करहु पुणु पुण्णउ।

घत्ता– तं वयणु सुणेप्पिणु मणि भावेप्पिणु सव्वहिं तं एक्केक्कओ।
15 घल्लिवि सा पूरिउ भउ मुसुमूरिउ खडहडंतु सो थक्कओ।। 37।।

## 38

तिच्छु करिवि णिय-णिय घरि पत्तइँ महियलि मज्झि पुणु वि णिक्खित्तइँ।
कव्वाडिय महिलए पुण्णिम दिणि णाहहु भासिउ विहसेप्पिणु खणि।
रूवउ सयलु सामि विलसिज्जइ अज्ज पव्व-वासरु जणि गिज्जइ।
तं णिसुणिवि संखिणिए हसंतिं खणिंउं कलसु जा तेण तुरंतिं
5 ता तं दिट्ठउ कंचण भरियउ मणि-गण-उज्जोएं विप्फुरियउ।
भणइ सो जि पिए आइवि पेक्खहिं महु समु पुण्णिउ अण्णु म लक्खहि।

---

और उधर, एक अन्य धनी व्यक्ति सूर्य-ग्रहण के दिन तीर्थ-स्नान करने के लिए सबेरे-सबेरे ही जवाहरात एवं सोना आदि अपनी समस्त सम्पत्ति लेकर घर से निकला। संखिणी लकड़हारा भी उसके साथ चल पड़ा। मणि- माणिक्य एवं स्वर्ण के हिलने के कारण उस धनी व्यक्ति का धन खड़खड़ा कर हल्ला (आवाज) कर रहा था। अतः उस (धनी व्यक्ति) ने लकड़हारे से विचार किया कि एक-एक करके वे सुन्दर चमकदार मणि-माणिक्य आदि उसी संखिणी लकड़हारे का कलश निकालकर उसी में एक साथ क्यों न सुरक्षित कर गाड़ दिये जायें और आवश्यकता पड़ने पर इसमें से अपनी एक-एक निधि निकाल कर काम चलाया जाय।

घत्ता– यही विचार कर उन्होंने वह कलश निकाल कर उसमें सभी सम्पत्ति सुरक्षित कर उसे पुनः जमीन में गाड़ दिया। इस कारण जवाहरातों एवं स्वर्ण की खड़खड़ाहट बन्द हो जाने से वे भयमुक्त हो गये और आगे बढ़े।। 37।।

**नागश्री लालची लकड़हारे की कथा सुनाकर जम्बू को समझाती है कि उपलब्ध को छोड़कर अनुपलब्ध को प्राप्त करने की आकांक्षा से व्यक्ति को शून्य ही प्राप्त होता है।**

वे दोनों तीर्थ-स्नान करके लौटे और भूमि में गाड़े गये अपने-अपने धन को देखते हुए अपने-अपने घर वापिस लौट आयें।

कव्वाडिक (लकड़हारे) की पत्नी ने पूर्णमासी के दिन हँसते हुए कहा– हे स्वामिन्, आज पूर्णमासी के पर्व की पवित्रता का सभी गौरव-गान करते हैं। अत अपने संचित रुपए का सदुपयोग कर लेना चाहिये। यह सुनकर संखिणी ने भी हँसते हुए जाकर तुरन्त ही जमीन खोदकर वह कलश निकाला तो उसे मणि-समूह के प्रकाश से स्फुरायमान तथा स्वर्ण से भरा हुआ देखा। उसे लेकर वह घर आया और अपनी पिय्रतमा से बोला कि देखो, मेरे भाग्य को तो देखो, मेरे समान अन्य पुण्यशाली को तुमने नहीं देखा होगा। जमीन मे धन-कलश को गाड़ देने से ही मुझे यह सिद्धि



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जाय सिद्धि महि णिहिय णिहाणें अण्णु उवाउ करमि सइँ ठाणें।
बहु कलसइँ आणिवि गड्डिय घरि एक्केककउ ताह जि अब्भंतरि।
घल्लिवि थक्कउ सो णेहल्लिउ रवि-गहणहि दिणि णिहि गणु चल्लिउ।
10 खडहड़ंत बहु कलस जि दिट्ठा पूरहु कासु वि मणि ण पइट्ठा।
करिवि मंतु तेहि जि एकक्कउ गिण्हिउ रयणु वि रूवउ थक्कउ।
एक्कें णिहेण सो जि पुणु लइयउ रित्तउ करिवि कलस-गणु चइयउ।
अण्ण दिवसि जा सो उग्घाड़इ सुण्णु णिएवि हच्छहिं सिरु ताड़इ।
हा-हा पिय हउँ भग्ग-विहीणउ घरहुं तउ रूवउ वि विलीणउ।
15 पवरु लाहु णियमणि इच्छंतहु जिह फलु हुउ संखिणिहु तुरंतहु।

घत्ता– तिह सुहु साहीणउ चइवि अहीणउ वंछइ पिउ सग्गहु जि दिहि।
णउ एकु जि बुज्झइ परभवि मुज्झइ पावेसइ पुणु सुण्ण णिहि।। 38।।

**39**

भासइ कुमारु मुउ भमरु जेम हउ खयहु ण गच्छमि मूढु तेम।
कमलब्भंतरि सो गंधच्छूढु णउ मण्णइं रवि अंथवणु मूढु।

---

(ऋद्धि) प्राप्त हुई है। अतः अब किसी अपने अन्य स्थान-भूमि में मैं इसे गाड़ देता हूँ।

इस प्रकार वह कव्वाडिक (लकड़हारा) उस कलश को गाड़ी में रखकर अपने घर ले आया और उसमें से वह बड़े ही प्रेम के साथ प्रतिदिन एक-एक करके सब कुछ निकाल-निकाल कर अपने उपयोग में लेने लग गया। और इधर, सूर्य-ग्रहण के दिन वह धनी व्यक्ति अपनी निधि (मणि-माणिक्य, स्वर्ण आदि) की गणना करने हेतु घर से चला। वहाँ खड़खड़ाता हुआ (खाली) जो कलश देखा, तो वह मणियों से पूरा भरा हुआ नहीं था। तब आपस में मन्त्रणा करके उन्होंने एक-एक करके उन अवशिष्ट मणियों एवं रुपयों को ले लिया। किसी एक ने उसकी बची हुई पूरी निधि को ले लिया और कलश को वहीं छोड़ दिया।

किसी दूसरे दिन जो उसने उस कलश को उघाड़ा, तो उसे शून्य (खाली) देखकर उसने अपने हाथों से सिर पीट लिया और बड़बड़ाकर कहने लगा– हाय-हाय, हे प्रिये, मैं तो भाग्य-विहीन ही हूँ। हमारे घर का (परिश्रम से अर्जित) वह रुपया भी विलीन हो गया।

इस प्रकार संखिणी कव्वाडिक ने जिस लाभ-प्राप्ति की इच्छा संजो रखी थी, ठीक तुरन्त बाद उसके विपरीत उसे उसका फल मिला।

घत्ता– अतः हे प्रियतम जम्बू, इस जन्म में उपलब्ध साधन-सामग्री को छोड़कर अनुपलब्ध सामग्री (स्वर्ग-प्राप्ति) के प्राप्त करने की आकांक्षा की पूर्ति सन्दिग्ध होती है। क्योंकि यह यथार्थ तथ्य किसी कि समझ में नहीं आता और वह परभव को बनाने के मोह में पड़ा रहता है। अतः ऐसा करने वाले को तो शून्य ही प्राप्त होता है।। 38।।

**कुमार जम्बू जब नागश्री को एक वैराग्योन्मुखी कथा कहते हैं, तब उनकी चौथी पत्नी रूपश्री उसके उत्तर में साँप-छछूंदर की एक रोचक कथा उन्हें सुनाती है।**

नागश्री की कथा सुनकर जम्बु कुमार उत्तर में कहते हैं कि जिस प्रकार एक भ्रमर शतदल कमल की पराग का रस-पान करता हुआ, यह नहीं सोच पाता है कि सूर्यास्त के बाद यह कमल-पुष्प संकुचित हो जायगा और वह उसी



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संकुचिउ णिसिहिं सयवत्तपत्तु पंचत्तु पत्तुच्छप्पउ णिरुत्तु।
इय इंदिय-सुक्खु रमंतु संतु खइ जामि ण हए महु एहु मंतु।
5 ता कहइ रूवसिरि पुणु सदप्पु एरिस गाहें गउ कालसप्पु।
वासा-रत्तहिं वरिसइ घणोहु तडयडइ तडक्कइ तडि ससोहु।
घरवलउ असेसु लेण छण्णु जगु सयलु वि दीसइ हरियवण्णु।
गिरि-गुह-संट्ठिउ वणयरहँ बिंदु भुक्खइ पीडिउ कय कम्म णिंदु।
पक्खिहि मुच्छिज्जइ बारबार णउ लब्भइ णहयलि गमणचार।
10 भुक्खाउर रोउ कुडंव खिण्ण जर तण्ण कुडी गेहम्मि भिण्ण।
अहणिसु सत्त जि दिण मेहु बुट्ठु ता जलमंदी होएवि सुणट्ठु।

घत्ता– ता सरढें एक्कें भुक्ख गुरुक्कें णिय आहारु चरंतइणा।
दिट्ठउ कालउ अहि ता तेंण जि तहि आरण्णिहिं विचरंतइणा।। 39।।

## 40

चिंतइ सरढउ केण उवाएँ आयहु छुट्टमि हउँ अणघाएँ।
णउलह-गुणु चिर दिट्ठु सरंतिं तेणा समुहं जाएवि तुरंति।

---

में बन्द होकर मर जायगा, फिर भी, वह मूर्ख उस पर समय का ध्यान रखे बिना ही बैठा रह जाता है और रात्रि आते ही उसमें बन्द रहकर वह मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। अतः हे प्रियतमे, इन्द्रिय-सुख में रमण करते हुए मैं भ्रमर के समान दुर्गति को प्राप्त नहीं होना चाहता।

जम्बू का वक्तव्य सुनकर उसकी नवोढा गर्वीली चौथी पत्नी रूपश्री उसे नेवला एवं सर्प की एक रोचक कथा सुनाते हुए कहती है–

एक समय दिन-रात बहुत ही घनी वर्षा हुई। तड़तड़ाकर मेघ गर्जना करते रहे। भयानक बिजली चमकती रही, घर, मैदान एवं मार्ग सभी पानी से लवालव भर गये। समस्त प्रदेश जलमय हरा-भरा दिखाई देने लगा। वनचर-प्राणी पर्वत-गुहा-कन्दराओं में जा छिपे। भोजन-सामग्री न जुटा पाने के कारण सभी भूख से तड़फने लगे। पक्षीगण बार-बार मूर्च्छित होने लगे। वर्षा के कारण आकाश में उनका उड़ना और गमनागमन रुक गया।

भयानक भूख के कारण उनके कुटुम्बी-गण खिन्न होकर रोने लगे। उनके घास के बने घोंसले छिन्न-भिन्न हो गये। इस प्रकार सात-दिन-रात लगातार वर्षा होती रही। उसके रुकने या मन्द पड़ जाने की आशा ही नष्ट हो रही थी।

घत्ता– उसी समय एक सरढ-प्राणी (छछूंदर-कृकलस) अत्यन्त भूखी होने के कारण भोजन की खोज कर रही थी, तभी उसने वहाँ जंगल में एक भयानक सर्प विचरण करते हुए देखा–।। 39।।

### चौथी नवोढा दर्पीली पत्नी-रूपश्री साँप-छछुंदर की कथा के माध्यम से साँप के समान ही अपने प्रियतम (जम्बू) को मूर्ख सिद्ध करती है।

वह छछूंदर सोचने लगी कि किस उपाय से मैं इस सर्प द्वारा आक्रमण किये जाने के पूर्व ही यहाँ से छूटकर भाग जाऊँ। वहाँ उसने नेवलों को चिरकाल तक सरकते हुए देख लिया। अतः वह छछूंदर सर्प के सम्मुख जाकर तुरन्त ही उसने उसकी जय-जयकार की और उसके सम्मुख नाचकर विनय पूर्वक उसे प्रणाम कर कहा– मेरे द्वारा चिरकृत



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जय-जय सरु भासिवि अहि पणविउ तासु पुरउ णच्चिवि पुणु विणयउ।
अज्जा अउव्व लाहु संजायउ चिरकिय मह पुण्णें इह आयउ।
5 एव्वहिं सामिय महु तुहुं मारहि सरढ जोणि दुक्खहु णिच्छारहि।
एम कहेवि तेण पुणु रुण्णउ अंसु पवाहें अइ कारुण्णउ।
सप्पें पुच्छिउ चरिउ वि तेरउ उप्पायइ महु मणि अच्छेरउ।
काइँ भणहि महु मारहि सिग्घें किं पुणु रुवहि सइंच्छिय विग्घें।
सरढु भणइं ता भो णिसुणहि पहु पइं भक्खणि लहेमि सुर पउ लहु।
10 तिं कारणि जयकारु पउत्तउ रुण्णउं जं तं सुणहि णिरुत्तउ।
महु परिवारु कुडंबु महल्लउ तं मेल्लेप्पिणु हउँ एकल्लउ।
केम जामि सग्गहि तिं कारणि चिंत पवट्टइ एही महु मणि।
सामिय जइ पसाउ महु उप्परि ता सकुडंवु णेहि महु सुरहरि।
तं णिसुणिवि भुयंगु गंजोल्लिउ सरढहु पच्छइ लग्गिवि चल्लिउ।
15 णिउ गिरि-तडि-णउलह दरु दाविउ एच्छु कुडंबु अम्ह दुक्खवाविउ।
जा पइट्ठु अहि आमिस लुद्धउ ता णउलिं फाडिवि सो खद्धउ।

घत्ता– मुहि पत्त गासु जि छुह दुहाण सु जि मेल्लिवि बहु सुह लुद्धउ।
जिहं उरउ वि णट्ठउ उहयहिं भट्ठउ तिहं पिउ अम्हहं मुद्धओ।। 40।।

---

महान् पुण्य से आज मुझे आपके दर्शन का अपूर्व लाभ प्राप्त हुआ है। अतः हे स्वामिन्, आप मुझे मार डालिये और इस छछूंदर-योनि से मेरा उद्धार कर दीजिये।

यह कहकर वह छछूंदर उस सर्प के आगे आँसू बहाते हुए करुणाजनक रुदन करने लगी। यह देखकर उस सर्प ने उस छछूंदर का कार्य-प्रयोजन पूछा और कहा कि तुम्हारे प्रति मेरे मन में एक अच्छा उपाय सूझ रहा है। पुनः सर्प ने उससे पूछा कि– एक ओर तो तुम अपने को शीघ्र ही मार डालने के लिए मुझे कह रही हो और फिर रो-रोकर स्वयं ही उसमें विघ्न भी उत्पन्न कर रही हो। ऐसा क्यों?

यह सुनकर वह छछूंदर बोली कि– हे प्रभु, यदि आप मेरा भक्षण कर लेंगे, तो मुझे शीघ्र ही सुर-पद प्राप्त हो जायगा। इसीलिये मैंने जय-जयकार बोला है और रोयी इसलिये हूँ कि जिससे आप मेरी बात को सुन लें। वैसे मेरा परिवार बहुत बड़ा है। उसे छोड़कर मैं यहाँ अकेली ही आयी हूँ। मैं कैसे स्वर्ग प्राप्त करुँ, मेरे मन में यही चिन्ता उत्पन्न हो रही है। हे स्वामिन्, यदि मेरे ऊपर आपकी कृपा हो जाय, तो मैं अपने कुटुम्ब सहित स्वर्ग को प्राप्त कर सकूँगी।

उसका कथन सुनकर वह भुजंग (-सर्प) जब वहाँ से सरकने लगा, तभी वह छछूंदर भी उसके पीछे-पीछे चलने लगी। उसने उसे पर्वत के किनारे नेवले की गुफा बतला दी और बतलाया कि यहीं पर हमारा दुःखी कुटुम्ब रहता है। माँस का लोलुपी वह सर्प जैसे ही उस गुफा में प्रविष्ट हुआ, उसी समय नेवलों ने उसे चीरकर खा डाला।

घत्ता– जैसे ही उसके मुँह में साँप का कौर गया, वैसे ही उसकी भूख का दुख समाप्त हो गया और उसने बहुत सुखानुभव किया। जिस प्रकार वह उरग-सर्प मारा गया और दोनों पक्षों की ओर से भृष्ट भी हो गया। उसी प्रकार हमारा यह प्रियतम (जम्बू) भी महामूर्ख है, जो दोनों पक्षों की ओर से सर्प के समान ही हानिग्रस्त होने जा रहा है।। 40।।



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



जिणमइ-अंगरुहें ता वुच्चइ
णयरि पइट्ठु वसहु तिं दिट्ठउ
भक्खंतेण तेण पल-लुद्धें
जाउ विहाणु जणहं संचरणें
5 चिंतइ एव्वहिं जाहु ण सक्कमि
णिसि आगमु पाविवि ता लहु गच्छमि
इय मंतिवि पडेवि जा थक्कउ
तं पेच्छिवि वट्टिय बहुरोएँ
अज्ज जाउ महु लाहु रवण्णउँ
10 चिंतइ जंबुउ जइ हउँ च्छुट्टमि
अण्णु भणइं हउँ गिण्हमि दंतइँ
जा किर सो पाहणु गिण्हेप्पिणु
चिंतइ सो दंतहँ विणु जीवणु
णयर सयल जणु रोएँ घट्टउ

एक्कु सियालु णिसाहि समुच्चइ।
रच्छामहि णिवडिउ मुउ हिट्ठउ।
रयणि पमाणु ण जाणिउ मुद्धें।
बुज्झिउ सो जि चित्तभययरणें।
मुवउ होवि इह णिवडिवि थक्कमि।
पहर चारि दिणु सुहिहु हि अच्छमि।
ता जणोहु तहु पासि जि ढुक्कउ।
एक्क णरेण भणिउ मणि मोएँ।
एयहु लुणमि जि पुच्छु सकण्णउँ।
ता बिणु पुच्छ जि कण्णहिं वट्टमि।
णिय ओसह कारणेण महंतइँ।
चूरइ डसणइँ पुणु णिहणेप्पिणु।
दुक्करु होइ ण सक्कमि वेयणु।
इय चिंतिवि जंबुउ खणि णट्ठउ।

---

**चारों नवोढा पत्नियों की कथाएँ सुनते-सुनते तथा उनके उत्तर में जम्बू द्वारा वैराग्योन्मुखी कथाएँ सुनाते- सुनाते अर्धरात्रि व्यतीत हो गई। जम्बू कुमार पर उनका किसी भी प्रकार का प्रभाव नहीं पड़ा बल्कि पत्नियों में ही सद्बुद्धि का संचार हो गया।**

उसकी कथा सुनकर जिनमति के पुत्र जम्बू ने उत्तर स्वरूप एक रोचक कथा इस प्रकार सुनाई– "एक श्रृगाल रात्रि के समय एक नगर में प्रविष्ट हुआ और उसने वहाँ गली में एक मरा हुआ बैल पड़ा देखा। वह श्रृगाल माँस-लोलुपी था, अतः उसने उसे खाना प्रारम्भ कर दिया। उस मूर्ख ने यह भी नहीं जाना कि खाते-खाते पूरी रात व्यतीत हो चुकी है। सवेरा होते ही लोग चलने-फिरने लगे। अतः श्रृगाल ने भयभीत होकर मन में विचार किया कि अभी तो मैं यहाँ से नहीं भाग सकता। अतः मृतक का बहाना बनाकर यहीं पास में पड़ा रहूँ और रात्रि के आते ही तत्काल यहाँ आकर रात्रि के चार पहर और दिन तक सुख पूर्वक इसका माँस खाता रहूँगा।

यह विचार कर जब श्रृगाल वहाँ (मृतक बनकर) पड़ा हुआ था, तभी कुछ लोग उसके पास आए और उसे मृतक समझकर उसके शरीर पर उगे हुए बालों को देखकर उनमें से एक व्यक्ति ने प्रसन्न होकर अपने मन में कहा कि– "आज तो मुझे बहुत ही सुन्दर वस्तु का लाभ हुआ है। उस श्रृगाल की पूँछ से लेकर कान तक इसके समस्त बालों को मैं उखाड़ लेता हूँ।" इस कथानक का स्मरण करते ही जम्बू कुमार भी अपने मन में विचार करते हैं कि– "यदि मैं इन नवोढाओं के चक्कर में पड़ गया, तो मेरी पूँछ तो भले ही नहीं है, किन्तु कान तो अवश्य हैं, वे भी नोंच लिये जायेंगे।"

उस जन-समूह में से किसी एक व्यक्ति ने पुनः कहा कि– "मैं इस श्रृगाल के दाँत तोड़ लेता हूँ, जो मेरी औषधि के निर्माण के लिये उपयोगी सिद्ध होंगे।" यह कहकर उसने एक पत्थर उठाया और उससे मार-मार कर उसके दाँत चूर-चूर कर निकाल लिये।

श्रृगाल अपनी यह दुखद अवस्था देखकर सोचने लगा कि दाँतों के बिना मेरा जीवन वेदना से भर जायगा। जीना कठिन हो जायगा। उस अवस्था में मैं कुछ भी नहीं कर सकूँगा। नगर के सभी लोग तो मेरे बालों (रोमों) का उपयोग



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

15 पुरलोयहिं कुठिलग्गि वि मारिउ सो णहि फाडिवि खद्धु णिरारिउ।
जो विसयहँ लुद्धउ पुणु अच्छइ सो णरु एम खयहु णिरु गच्छइ।

घत्ता– इय कह सुकहंतहो पिय बोहंतहो अद्ध-रत्ति गयंतु वि कुमरु।
रायहिं ण पवट्टिउ चित्तोहट्टिउ जाउ अहलु तिय मइ-पसरु।। 41।।

## 42

एत्तहिं अवसरि पुरवरि भमंतु अंजण-गुणेण सच्छइ कमंतु।
विज्जाच्चरु चोरु जि भणिउ आसि सो लाउ अरुहयासहु णिवासि।
जंबू सामिहु रइ-हरहु भित्ति लग्गिवि थक्कउ जा रयण दित्ति।
तेणावि कहंतर सुणिय सव्व कारणु परियाणिउ चित्ति भव्व।
5 एत्तहिं वि कुमारहु तणिय माय पुत्तहु विओय भय-सुसिय-काय।
खणि-खणि सुवस्स वासहरु वारु जोवइ कवाड-रंधहँ सुचारु।
पुणु घर-पंगणि पुणु तच्छ एइ सुव-सुण्हइँ वयणइँ सा सुणेइं।
किं सुवहु जाउ मयणाहिलासु किं अज्जावि इंच्छइ मोक्खवासु।
ता चोरहुच्छाया जिणमईए पिच्छिप्पिणु बोल्लिउ सुहमईए।
10 को तुहु भो भायरच्छण्णु थक्कु मणइंच्छिउ लइ धणु जइ णिरिक्कु।

---

करते रहेंगे, और मैं? यह सोचते-सोचते वह श्रृगाल तत्काल मर गया।

वह श्रृगाल बैल की नाभि को फाड़कर उसके माँस को लम्बे समय तक खाता रहा किन्तु उसकी कुटिलता के कारण लोगों ने उसे मार डाला। अतः यह सच ही कहा गया है कि– "जो व्यक्ति विषय-लोलुपी होता है, उसका मरण भी वैसा ही होता है, जैसा कि विषयान्ध श्रृगाल का।"

घत्ता– इस प्रकार जम्बू द्वारा कथा सुनते-सुनते तथा कहते-कहते अर्धरात्रि व्यतीत हो गई। अन्ततः उनकी नवोढा चारों पत्नियाँ जम्बू कुमार में राग-भाव उत्पन्न न कर सकीं। प्रत्युत, पत्नियों में सद्बुद्धि का प्रसार अवश्य होता गया।। 41।।

**विद्याचर-चोर चोरी करने के निमित्त जम्बू के घर में आता है। जम्बू की माता उसे देखकर उसका परिचय पूछती है और परिचय जानकर कहती है कि मेरे यहाँ से जितना चाहो, उतना धन ले जा सकते हो।**

इसी अवसर पर नगरों में भ्रमण करता हुआ, अंजन-विद्या की सिद्धि के कारण सुप्रसिद्ध विद्याचर नामका चोर राजगृही के सेठ अर्हद्दास के घर में आता है। वह जम्बू स्वामी के रतिगृह की दीवाल से रातभर सटा रहा और उसने जम्बू स्वामी और उसकी नवोढा पत्नियों के कथा-कथान्तरों को सुन लिया और उसने उनकी सभी परिस्थितियों की जानकारी प्राप्त कर ली।

इतने में ही जम्बू कमार की माता, जो अपने पुत्र की विचार धारा से दीर्घकाल से चिन्तित और दुखी थी, क्षण-क्षण में वह जम्बू के निवासकक्ष के द्वार में बने छिद्र से छिप-छिपकर जम्बू एवं उसकी पत्नियों की मनोदशा को देख रही थी। फिर वहाँ से चलकर वह घर के आंगन में आकर उनका वार्तालाप सुन रही थी और उससे यह जानना चाह रही थी कि उसका पुत्र मदनाभिलाषी बन सका है अथवा अभी भी वह मोक्षाभिलाषी ही बना हुआ है।

उस शुभमति जिनमती ने उसी समय उस विद्याचर - चोर की छाया देखकर उससे पूछा– "छिप-छिपकर यहाँ देखने वाले हे भाई, तुम कौन हो? यदि (तुम चोर हो तो–) चाहो, तो तुम यहाँ से इच्छित धन ले जा सकते हो।"



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

घत्ता– तं णिसुणिवि तक्करु भणइ महुरसरु वीहहि किंपि म माय मणि।
तुव चिंतिउ सहलउ होउ म विहलउ हउँ कुसुमालु भममि रयणि।। 42।।

**43**

णामें हउँ पसिद्धु विज्जच्चरु धणु हरणच्छि आउ पुणु तउ घरु।
तुहु पुणु अप्पहि किं सहु सऊँ धणु भणु-भणु मायरि तं णिरु कारणु।
किं घर चडणोत्तरणु वियंभहि महु मण संसउ एहु णिसुंभहि।
हउँ परधणु भंडें अवहारमि दिण्णउँ धूलि-समाणु ण धारमि।
5 तं णिसुणेप्पिणु गग्गिर-वायइँ वुत्तउ जंबूसामिहु मायइ।
एक्कु पुत्तु महु वच्छ पियारउ सयलहु परिवारहु सुहयारउ।
सो णिव्विण-चित्तु संसारहु मणु णा रमइ इंदिय-वावारहु।
सो भंडें अज्ज जि परिणाविउ एक्कु अवहि दिणु भज्जहँ दाविउ।
सुप्पहाइँ तउ घोरु धरेसइ उव्वसु इहुँ मंदिरु जि करेसइ।
10 सुण्हहँ रूवि रत्तु हुउ णंदणु अह किं णउ मण णयणाणंदणु।
तं पुणु-पुणु जाएवि णियच्छमि चडणुंत्तरणु करंत णिअच्छमि।
इहु कारणु भो पुत्त वियाणहिं विणु सुवेण किं रयण णिहाणहिं।

---

घत्ता– यह सुनकर वह विद्याचर-तस्कर मधुर-वाणी में बोला– "हे माता, अपने मन में किसी भी प्रकार का भय मत करो। आपने अपने मन में ठीक ही सोचा है। आप विह्वल न हों। मैं 'कुसुमाल' हूँ, जो रात्रि में विचरण करता रहता हूँ"।। 42।।

**जम्बू की माता के स्नेहिल स्वभाव से विद्याचर-चोर का हृदय-परिवर्तन हो जाता है। वह माता-जिनमती की बड़ी प्रशंसा करता है।**

"मैं विद्याचर नामक का चोर हूँ। धन चुराने के निमित्त से मैं आपके घर आया हूँ। हे माता, यह बलाइये कि आप स्वयं ही अपना धन मुझे क्यों दे रही है? क्या घर में मेरे द्वारा प्रविष्ट होने पर आप विस्मित हैं? मेरा मन सन्देह से ग्रस्त हो गया है। अतः आप उसका निराकरण कर दीजिये। मैं तो पराये धन-धान्य का अपहरण करता हूँ। किन्तु जो अपना धन अपने आप मेरे लिये देता है, उसे मैं धूलि के समान समझता हूँ। अतः मैं उसे नहीं लेता।"

विद्याचर-चोर के इस कथन को जम्बू स्वामी की माता ने सुना, तो वह गद्गद् हो उठी और बोली– "हे वत्स, मेरा तो एक ही पुत्र है– जम्बू कमार, जो मेरे समस्त परिवार-जनों का प्यारा और सुख प्रदान करने वाला है। किन्तु वह संसार-सुखों से उदास है। इन्द्रिय-व्यापार (विषय-भोगों) में उसका मन नहीं रमता। आज ही उसका विवाह हुआ है और उसने केवल आज का दिन ही अपनी नव-परिणीताओं को दिया है। सामने पड़ा हुआ यह सब धन उसी के विवाह में मिला है।"

"कल सबेरा होते ही वह घोर तपस्या-व्रत धारण कर लेगा और इस घर को उदास-दुखी बना देगा। हमारी आँखों का तारा हमारा वह पुत्र जम्बू कुमार अपनी नव-विवाहिता पत्नियों के सौन्दर्य के प्रति भी क्यों विरक्त है? इसकी जानकारी के लिये भी बार-बार मैंने प्रयत्न किये हैं, किन्तु कारण समझ में नही आ रहा है। इसी कारण से हे वत्स, (विद्याचर), तुम यह जान लो कि बिना पुत्र के यह रत्न-निधानादि-सम्पत्ति मेरे किस काम की? पुत्र के वियोग से मेरा



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुवहु विओएँ चित्तु विसूरइ  महु मणि एक्कु वि आस ण पूरइ।
अंसु जलोल्लियाइँ इय वइयरु  णिसुणेप्पिणु भासइ विज्जाचरु।

15 घत्ता– करुणारसपूरिउ चित्ति विसूरिउ वट्टिउ पवरु जि णेहु मणि।
पडिवयण पालणि परदुह णासणि विरला पुरिसा जि एच्छु जणि।। 43।।

## 44

णिसुणि अंबि मा मोहें च्छिज्जहि  णियमणु थिरु एव्वहिं जि करेज्जहि।
तिहँ करेमि जिहँ तुज्झु जि णंदणु  णवि तउ गिण्हइ णयणाणंदणु।
जइ महु मायरि तच्छ पवेसहि  ता तहु वोहमि वयण-विसेसहि।
महु मइ-पसरु वि छज्जइ तेहउ  मुणि हूविवि भउ पयणइँ जेहउ।
5 थंभण-खोहण-मोहण जाणमि  णयणंजण-पमुहं वि बहु माणमि।
विहडावण-जोडण पुणु कम्मइँ  हउँ बहु बुज्झमि पविहियच्छम्मइँ।
तं णिसुणेप्पिवि कुमरहु मायरि  आसासिय मणम्मि णेहायरि।
तुहु महु आसालयलग्गणतरु  तुहुं चिंतामणि मण-चिंतिययरु।
तुहुं दुह-भूहर-विब्भारण-पवि  तुहुं महु कुलहर-उज्जोयण-रवि।
10 तच्छ पुत्त हउँ तुज्झु पवेसमि  तुअ साहसु पुणु वच्छ णिएसमि।

---

चित्त बड़ा दुखी है। अब इसके बिना मेरे मन की एक भी अभिलाषा पूर्ण नहीं हो पायेगी।" आसुँओं से डबडबाए नेत्रों वाली जम्बू की माता के मुख से यह वृत्तान्त सुनकर–

घत्ता– करुणरस से भरी हुई तथा अपनी वाणी से चित्त को गद्गद कर देने वाली उस माता का स्नेह से सना हुआ मन देखकर वह विद्याचर विचार करता है कि– "प्रतिज्ञा का पालन करने वाली तथा दूसरों के दुख को दूर करने में तत्पर रहने वाली यह माता सचमुच ही पुरुष-जाति में बिरली ही होगी"।। 43।।

**विद्याचर-चोर माता जिनमती को विविध प्रकार से आश्वासन देते हुए कहता है कि वह जम्बूकुमार को सांसारिक सुखभोगों के प्रति मोहित करने के प्रयत्न करेगा। किन्तु अपने उस कार्य में असफल हो जाने पर वह जम्बू के साथ ही मुनि-पद धारण कर लेने की प्रतिज्ञा भी कर लेता है।**

विद्याचर-चोर कहता है कि– "हे माता, मेरी सुनो। मोह के कारण छीजो मत। अपने मन को स्थिर करो और अब ऐसा करो कि मुझे कोई ऐसा उपाय बताओं, जिसे मैं करूँ, जिससे तुम्हारा नयनानन्दन तप-व्रत धारण न करे। हे माता, यदि मैं उस (जम्बू) के रतिकक्ष में प्रवेश कर सकूँ, तो विशेष वचनामृत देकर उसे समझाऊँ, जिससे कि मुनिपद धारण करने से वह भयभीत हो जाय। यदि उसे समझाने में मेरी बुद्धि छीज (असमर्थ हो) जाती है, तो फिर मुझे, स्तम्भन, क्षोभन, मोहन, नयनांजन, विघटन तथा संयोजन आदि अनेक प्रमुख विद्याएँ भी आती हैं, जिनके प्रभाव से मैं मनचाहा कार्य कर सकता हूँ।

विद्याचर के इस कथन को सुनकर जम्बू की माता बड़ी आश्वस्त हुई। अपने मन में वह उसके प्रति बड़ी नेहातुर हो उठी और बोली– "तुम मेरे आशा रूपी वृक्ष में लगी हुई लता के समान हो, तुम मेरे मन की चिन्ता को दूर करने के लिए चिन्तामणि-रत्न के समान हो, तुम मेरे दुखों के पहाड़ को नष्ट करने के लिये वज्र के समान हो और तुम्हीं मेरे कुलगृह को उद्योतित करने के लिये रवि के समान हो। अतः हे पुत्र (विद्याचर), मैं तुझे जम्बू के रतिकक्ष में प्रविष्ट



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ता विज्जाचरु विहसिवि जंपइ — जइ तिय वयण कमलि सो संपइ।
छप्पय तुल्लु ण रइ-सुहु माणइ — ता तउ गिण्हमि तेण समाणइ।

घत्ता– इय दिढ सुपइज्जा तुहु सुमणोज्जा पेच्छिवि गय जिणमइ जि तहिं।
वासहरु सुपुत्तहु गुणगणजुत्तहु पिहिउ किवाडहिं गंपि जहिं।। 44।।

## 45

सुण्ह णामु उच्चारिवि सेट्ठिणि — पेल्लिय करेण कवाड जि तक्खणि।
ता कुमरेण मुणिवि णिय मायरि — उग्घाडियइ आय णेहायरि।
पुच्छिय तेण णमंसिवि सा तहिं — एरिस अद्धरत्ति आया कहिं।
कारणु तं पि भासि मह अंबा — अक्खइ सा तहु पुणु अविलंबा।
5 जइया तुहुँ गब्भम्मि परिट्ठिउ — तइया महु भायरु णेहट्ठिउ।
गउ परएसि जाय बहु वच्छर — एव्वहिं तुव विवाह-दिणि कुच्छर।
आयउ हुवउ दिणेक्कु जि पच्छइँ — एव्वहिं तउ दंसणु सो इंच्छइ।
तुज्झु मामु वारंतरि थक्कुउ — अच्छइ सो सुव णेह-गुरुक्कुउ।
भणइ कुमारु अंबि बुल्लावहि — आवउ मामु विलंबु म लावहि।
10 पुत्ताणइ ताइं जि सो भायरु — वणिवर-वेसें खणि णेहायरु।

---

करा दूँगी, तुम साहस पूर्वक जाकर वहाँ बैठ जाना।"

तब वह विद्याचर हँसकर माता से बोला– "यदि वह जम्बू कुमार (मेरे द्वारा समझाये जाने पर भी) अपनी नवोढा प्रियतमाओं के मुख-कमल से मोहित होकर उन पर षट्पद (भ्रमर) के समान नहीं मड़राता और उनके साथ रति-सुख की उपेक्षा करता है, तो फिर हे माता, मैं भी उसी के साथ मुनि-दीक्षा लेकर तपस्या करने चला जाऊँगा।"

घत्ता– "हे विद्याचर, तेरी दृढ़प्रतिज्ञा सचमुच ही सुमनोज्ञ है।" यह कहकर माता जिनमती अपने गुणज्ञ पुत्र जम्बू कुमार के रतिकक्ष के पास पहुँची। उस समय तक उसके कपाट बन्द थे।। 44।।

**माता जिनमती की सहायता से विद्याचर-चोर जम्बू का मामा बनकर उसके रतिगृह में प्रवेश करता है। स्नेहातुर होकर दोनों गले लगकर एक ही आसन पर बैठ जाते हैं।**

सेठानी जिनमती ने पुत्रवधु का नाम लेकर तत्काल ही अपने हाथों से रतिगृह का किवाड़ ठेला। तब जम्बू ने समझ लिया कि उसकी स्नेहमयी माँ आई हुई है। अतः उसने आकर दरवाजा खोल दिया और प्रणाम कर उनसे पूछा कि– "हे माता जी, ऐसी आधी रात के समय आप यहाँ क्यों आईं? आप इसका कारण बतलाइये।"

तब माता ने भी अविलम्ब ही बताया कि– "जब तुम गर्भ में थे, तभी मेरा स्नेही भाई परदेश चला गया था। वहाँ वह कई वर्षों तक रह गया और अब तुम्हारे विवाह के अवसर पर यहाँ आया था। किन्तु दुर्भाग्य से वह एक दिन बाद यहाँ पहुँच पाया। अब वह इसी समय तुमसे भेंट करना चाहता है। यद्यपि तेरे स्नेहशील मामा ने मुझे अभी तुम्हें जगाने से बार-बार रोका था और प्रतीक्षा में वह अभी बाहर ही बैठा है।"

माता का कथन सुनकर कुमार ने कहा कि– "हे माताजी, आप मेरे मामा को अविलम्ब बुलवा लीजिये। पुत्र के कहते ही माता ने अपने भाई को बुलवा लिया और स्नेहशील वह विद्याचर भी अपना वणिक्-वेश बनाकर जम्बू के



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पेसिउ सुव आवासब्भंतरि बहिणि पुत्तु तें णेह णिरंतरि।
अवरुंडियउ दीह-भुयदंडहिं एक्कासणि थिय पुणु वि पयंडहिं।

घत्ता– पुणु माया मामें अतुलिय थामें कुसल पपुच्छिय तेण पुणु।
जिणमइयहिं तणुरुहु फेडिय मणरुहु बोल्लाविउ खणि पउरगुणु।। 45।।

**46**

तुहुं सवियट्ट-वियक्खणु णायरु तुहु बहु गुणगण-मणि-रयणायरु।
संसारम्मि विसय-सुहु दुल्लहु सव्वहँ मणम्मि अइबल्लहु।
तुहु लावण्ण-कला-संजुत्तउ करहि कुमार जं जि इह जुत्तउ।
मणइंच्छियउ सयलु पइँ पत्तउ एव्वहि भो करि सहिउ णिरुत्तउ।
5 तिहं किज्जइ जिह वंसु पवट्टइ तिहं करि जिह अवजसु ओहट्टइ।
तिह किज्जइ जिहं देहु णच्छिज्जइ विसय-सुक्खु णउ वच्छ चइज्जइ।
तं णिसुणेवि कुमारु पयंपइ माम तुहुं जि मइ लक्खिउ संपइ।
पइँ मेल्लेवि को णउ दच्छउ तुम्ह णेहु महु उप्परि अच्छउ।

घत्ता– जें पाविवि णरभउ वणि जाइंवि तउ ण करइ सो पुणु भवि भमइ।
10 बहु तणु गिण्हंतउ दुक्खसहंतउ विसयंधुजि अप्पउ दसइं।। 46।।

---

रतिगृह में प्रविष्ट हो गया और उसकी बहिन तथा भानजे (जम्बू) ने उसके प्रति स्नेह व्यक्त किया। मामा ने अपने भानजे को देखते ही अपने प्रचण्ड बाहुपाश में भर लिया और फिर दोनों एक ही आसन पर बैठ गये।

घत्ता– तत्पश्चात् अतुलित बुद्धि वाले उस मायावी मामा ने जम्बू से कुशल-क्षेम पूछी। फिर वह प्रवर गुण-सम्पन्न, विषयाभिलाषा को नष्ट कर देने वाले, जिनमती के पुत्र से बोला।। 45।।

**मायावी मामा विद्याचर कुमार जम्बू को संसार – भोगों में लिप्त रहकर वंशवृद्धि करते रहने का उपदेश देता है किन्तु जम्बू पर उसका कोई भी प्रभाव नहीं पड़ा।**

–"हे कुमार जम्बू, तुम सविकल्पक-निर्विकल्पक ज्ञान के धारी हो और गुण-गण रूपी मणियों के लिये रत्नाकर (समुद्र) के समान हो। इस संसार में विषय-सुख बड़े ही दुर्लभ हैं। सभी के लिये वे अत्यन्त प्रिय लगते हैं। तुम सौन्दर्य-कला के ज्ञान से भी समृद्ध हो और तुमने सभी प्रकार के इच्छित विषय-भोगों को प्राप्त भी किया है। अतः इस समय वही करो जो तुम जैसे संसारी के लिये हितकारी हो।"

"हे वत्स, ऐसा कार्य करो, जिससे कि तुम्हारे वंश की वृद्धि हो और वह करो जिससे कि इस लोक में तुम्हारा अपयश न हो। ऐसे-ऐसे कार्य करो, जिससे कि तुम्हारी (सुन्दर) देह छीजे नहीं (क्षीण न हो)। विषय-सुखों को तो तुम कभी उपेक्षित ही मत करो।"

मामा का उपदेश सुनकर कुमार जम्बू ने कहा– "हे मामा, आपने तो मुझे यहाँ प्रथम बार ही देखा है। आपको छोड़कर यहाँ कोई सुज्ञान-दक्ष भी नहीं है और आपका स्नेह भी मेरे ऊपर है।"

घत्ता– (मेरा तो यही मानना है कि–) जिसने भी यह दुर्लभ नरभव प्राप्त किया है, उसने वन में जाकर यदि तपस्या नहीं की, तो वह निरन्तर ही भव-भ्रमण करता रहता है और जो विषय-वासना का लोलुपी बना रहता है, वह अनेक प्रकार के भवों को धारण कर विविध दुखों को सहता रहता है।। 46।।



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



विसयवल्लि-तरु फलइ जि मिट्ठइँ चक्खंतहु अवसाणि अणिट्ठइँ।
माम-माम तुहुँ पुणु मा मुज्झहिं जिणवयणुल्लउ अइरें बुज्झहिं।
कहियइँ पुणु वि णियय-जम्मंतर तं आयण्णिवि मामु णिरंतर।
भासइ को गयभय इह जाणइँ सव्वु को वि सच्छम्मि वियाणइँ।
5 परगइ एच्छु जि कासु ण दीसइ णिसुणि कहाणउं एक्कु जि सीसइ।
कुंडु एक्कु कंडूयण राएँ पीडिउ णट्ठु ण भेसह जाएँ।
किं विज्जइ पुणु कज्जें चुक्कउ सामिएण सो अइ विहि मुक्कउ।
सच्छंद-चरणि हुउ सो मणिट्ठु मोक्खत्तउ छत्तउ कहमवि ते ण दिट्ठु।
भक्खियउ महुरु तिं मणि सरंतु किं चरउ करीरहु तणु भमंतु।
10 तहँ आसि भुत्तु जों सग्ग सुक्खु को महइ पुणु वि तं चित्ति मुक्खु।
ता कहइ कहाणउ तहु कुमारु कुवि वणिवरु होंतउ विणय-सारु।
बहु रयण लेवि वाणिज्जि साहु चल्लिउ इंछंतउ भूरि लाहु।
पहि जंतिं तिं सरवरहु तोउ पीयउ जो पय णइँ चित्ति मोउ।
ता गच्छंतिं सो तक्करेहि लुंचिउ अडविहिं असिवक्खरेहि।
15 पुणु मह तिसाइँ पीडियउ सुत्तु सर-जलु सिविणइँ पीयउ णिरुत्तु।

---

**विद्याचर के कथन के उत्तर में कुमार जम्बू सांसारिक सुख-भोगों को अनिष्टकर तथा परभव-विनाशक बतलाते हुए उसे एक व्यापारी का कथानक सुनाते हैं।**

जम्बू मामा विद्याचर को पुनः कहते हैं– "विषय रूपी विष-वेल के फल चखने में तो मीठे होते हैं किन्तु अन्त में वे अनिष्टकर ही सिद्ध होते है। हे मामा, आप मेरे मोह में न पड़ें और जिनेन्द्र के वचनों को गम्भीरता पूर्वक समझें। हे मामा, मैंने अपने जन्मान्तर कहे ही हैं। आप उन्हें सुनकर बतलाइये कि इस संसार में कोई भयमुक्त होकर भी क्या रह सकता है? सभी कोई प्रयत्न करने पर ही इस सांसारिक जाल को समझ सकते हैं।" "इस संसार में पर-भव किसी को भी दिखाई नहीं देता। किन्तु कथा-कथान्तरों को सुनकर इसका ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। खाज को खुजलाने में कितना आनन्द आता है? किन्तु बाद की पीड़ा कितनी दुखद होती है? उसका शमन तो केवल औषधि के सेवन से ही हो सकता है।" "क्या सिद्ध-विद्याओं से सांसारिक दुखों से छूट एवं मोक्ष-पद की प्राप्ति हो सकती है? स्वच्छन्द-विचरण (आचार-विहीन-चर्या) भले ही मन को अच्छा लगे, किन्तु उससे मोक्ष-महोत्सव तो किसी ने नहीं देखा। मधुर भोजन-पान का मन में स्मरण करते रहना, करीर के काँटों पर शरीर को घुमाने के समान ही दुखद होता है। मूर्ख-जन उसमें भले ही स्वर्ग के समान सुख का अनुभव करें, किन्तु अन्ततः तो वह दुख ही प्रदान करेगा।"

तत्पश्चात् विनयशील कुमार जम्बू अपने विचारों के समर्थन में विद्याचर को एक कथानक भी सुनाते हैं। उसके अनुसार – कहीं पर एक वणिक् निवास करता था। एक बार वह प्रचुर मात्रा में कीमती रत्न लेकर मन में अधिक लाभ प्राप्त करने की इच्छा से व्यापार के लिये चला।

मार्ग में चलते-चलते उसे बहुत जोर से प्यास लगी, अतः उसने एक सरोवर का जल पी लिया, उसके पीते ही उसका मन खराब हो गया। जब वह मार्ग में आगे बढ़ रहा था, तभी उस घने जंगल में एक चोर ने तलवार एवं छुरा दिखाकर उसका धन लूट लिया। उस व्यापारी को धन चोरी चले जाने का दुख तो था ही, ऊपर से उसे पुनः जोरों से प्यास लग आई। अतः थककर वह वहीं सो गया। उसी समय उसने स्वप्न में सरोवर का जल पीकर अपनी प्यास बुझाई।



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

घत्ता– किर जग्गिउ जामहिं तिसिउ वि तामहिं सो उट्ठेप्पिणु ओसजलु।
जीहइ विलिहइ खणि णउ तिप्पइ मणि ओहुल्लिउ तहु मुह-कमलु।। 47।।

**48**

ओसजलें तिसं किम ओहट्टइ तिहं विसयहं सुहि मणु ण पवट्टइ।
जो पुणु रसइ सग्ग-सुहु माणउं सो किंह सेवइ एहु सयाणउं।
तं णिसुणिवि चवेइ तहु तक्करु थेरु एक्कु होंतउ पुणु वणिवरु।
तहु तरुणि भज्ज लेप्पिणु णिहाणु भम्मट्ठि णाम चट्ठे समाणु
5 णीसरि घरहु सा खल अलज्ज णिय भत्तारहु दंसिय अकज्ज।
पहि वच्चंतइं गिरि-गहण-जालि विडु एक्कु मिलिउ पुणु अंतरालि।
पाखंड-भरिउ महि पयडु धुत्तु भम्मुट्ठि जंबू तेण जि पउत्तु।
भो णिसुणि सलक्खण चारु देहु तउ दंसणि मज्झु जि जाउ णेहु।
तुहुं बंधउ हइ भावज्ज मज्झु पयकमलइँ सेवमि हउँ जि तुज्झु।
10 इय माया-णेहें जडिउ मूढु सहु भज्जहि गच्छइ गय छूढु।
विडु परयारा चिंतंत्तु तु चित्ति गावइ कामोद्दीवणु सुझत्ति।
कलु पढइ-सुणइ सा चवल-भाव विडयण-आसत्ता जाय पाव।

---

घत्ता– जब वह जागा, तब उसने अपने को प्यासा ही पाया। वह वहाँ से उठा। तत्काल ही ओस-जल (कणों) को अपनी जीभ से चाँटा किन्तु उससे उसे तृप्ति नहीं मिली और उसका मुख-कमल मुरझाने लगा।। 47।।

**जम्बू कुमार भी अपने मायावी मामा (विद्याचर-चोर) के लिये एक ऐसे वृद्ध व्यापारी की कथा सुनाता है, जिसकी तरुणी स्वैरिणी भार्या अपने घर की समस्त सम्पत्ति लेकर भाग जाती है और धूर्तों के साथ रहकर सुख-भोग करती है।**

कुमार जम्बू मायावी मामा को पुनः कहता है– "ओस-कणों के जल से क्या कभी प्यास बुझ सकती है? अर्थात् कभी नहीं। इसी प्रकार सुधी-जनों का मन इन्द्रिय-विषयों में कभी भी प्रवर्तित नहीं होता। जो व्यक्ति उनमें स्वर्ग के सुखों की कल्पना करने लगता है, उस पर सयाने (विवेकी) जन हँसेंगे क्यों नही?"

जम्बू का यह कथन सुनकर वह तस्कर (मायावी मामा विद्याचर) उसे पुनः एक रोचक कथा सुनाते हुए कहता है– कहीं पर एक वृद्ध व्यापारी निवास करता था। उसकी तरुणी भार्या बड़ी विषयान्ध थी। अवसर पाकर निर्लज्ज वह दुष्टा भार्या घर की पूरी सम्पत्ति लेकर भ्रमणार्थ (भम्मुट्ठी) जाने को कहकर किसी एक कुख्यात भगोड़े के साथ भाग गई।

मार्ग में पर्वतों एवं गुफाओं के जाल को पार करते हुए उसे वहीं पर एक विट मिला। वह सर्वत्र एक पाखण्डी धूर्त्त के रूप में प्रसिद्ध था। उस भगेडू भार्या ने उससे कहा कि मैं बाहर जा रही हूँ। उसे देखकर वह दुष्टा भार्या उससे पुनः बोली कि– "सुन्दर देह सम्पन्न हे सुलक्षण-सज्जन, तुम्हे देखते ही मेरे में स्नेह उत्पन्न हो गया है। हे आर्य, तुम मेरे साथ स्नेह का बन्ध बाँध लो, मैं तुम्हारे चरण-कमलों की सेवा करती रहूँगी।" इस प्रकार मायावी स्नेह में जकड़ा गया वह मूर्ख विट (इस नई) पत्नी के साथ तत्काल ही अपने घर चला गया।

वह विट अपने मन में इस पर-दारा के विषय में विचार करने लगा कि "यह (पर-दारा) तो धाराप्रवाह कामोद्दीपक गीत गाती रहती है। पढ़ने, सुनने तथा चपल-भाव प्रदर्शित करने की कला भी इसे आती है। जब उसे किसी नये विट-



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तिं सहु संजोउ करेवि वासि ता गय सा गाम-तलार पासि।
हउँ दीह मग्ग खेएण संत पुर-बाहिर मढि सोवमि सकंत।
15 तुम्हहँ कहेवि आवास-वासु जं किज्जइ तं बहु सुह-पयासु।

घत्ता– इय भणिवि तलारहु दुरवर सारहु गय सा तहिं णिय णाह हुया।
सइरिणियण दुल्लह वंछिय वल्लह गय रवि पह णिसि जाम हुया।। 48।।

4877

## 49

भम्मुट्ठि सहिय मढ एक्क पासि सा सुत्ती विडु पुणु तहँ सयासि।
जग्गंति थक्क हूया अद्धरत्ति एत्तहिं तलवर-गणु पत्तु झत्ति।
वज्जंतिं खर-डिंडिम-णिणाउ आवंतु णियच्छिवि भड णिहाउ।
सोवंतु पमेल्लिवि भम्ममुट्ठि बिड-पासि जाइ खणि सुत्त दुट्ठि।
5 जा दिण्ण तलारहिं विसम हक्क ता उत्तरु भासइ सील मुक्क।
जेहिं जि वासरि पुणु कहिउ तुम्ह परियाणहु मणि ते सुत्त अम्ह।
णउ जाणहँ अण्णु जि तीउ को वि देवलयहि गवेसिवि लेहु सो वि।
णउ मुणहं कासु पुणु अम्ह वत्त तं णिसुणेप्पिणु तेहिं जि पउत्त।
जोइवि गिण्हिउ सो भम्ममुट्ठि बंधिवि वराउ आहणि विमुट्ठि।
10 सो णीउ तेहिं आहण्णमाणु विडु पुणु चल्लिउ ताइँ जि समाणु।

---

जन का परिचय हो जाता है, तब उसके साथ संयोग करके उसके साथ रहने लगती है।" एक बार वह अपने ग्राम के तलार (कोटपाल-आरक्षी) के पास गई और बोली कि– "मैं बहुत दूर से पैदल चलकर आई हूँ। थक गई हूँ। अतः क्या मैं इस नगर के बाहर एक मठ में अपने कान्त (पति) के साथ सो सकती हूँ। सुखद प्रवास के लिये जो भी मैं करूँगी, वह सब आवास में रहकर तुम्हें बता दूँगी।"

घत्ता– दुर्निवार तलार (कोटपाल) को यह कहकर वह दुष्टा स्वैरिणी भार्या अपने वांछित दुर्लभ नाथ-विट के पास सूर्यास्त के बाद जा पहुँची।। 48।।

**वृद्ध व्यापारी की वह भगेड़ू दुष्टा भार्या विट के साथ भाग जाती है। वह विट भी उसे धोखा देकर तथा उसके सभी वस्त्राभूषणादि लेकर और उसे नदी किनारे अकेला ही छोड़कर नदी पार भाग जाता है।**

कुमार जम्बू पुनः कहते हैं कि वृद्ध व्यापारी की वह भगोड़ी भार्या नगर के बाहिर के मठ में जब अपने प्रेमी-विट के साथ सो रही थी कि आधी रात के समय वह जाग उठी। संयोग से उसी समय वह तलवर भी सदल-बल वहाँ आ पहुँचा। उसी समय एक भट डिंडिम-नाद करता हुआ वहाँ आया। उसे आता हुआ देखकर वह दुष्टा पुनः विट के पास जाकर सो गई।

जब उस तलवर ने उसे जोर से डाँटा-फटकारा, तब उस दुश्चरित्रा ने उस (तलवर) से कहा– "उस दिन मैंने तुम्हें जो सूत्र-शैली (रहस्यमय संकेत) में कहा था, उसे कोई तीसरा व्यक्ति नहीं जानता है। अतः उसे देवालय में खोजकर पकड़ लो। इस बात का ध्यान रखना है कि मेरी यह बात कोई जाने नहीं।" उसका रहस्यपूर्ण कथन सुनकर उस तलवर ने वैसा ही किया और जाकर उस बेचारे भट को मन्दिर से पकड़कर बाँध लिया और उसे घूँसे मारता हुआ कोतवाली



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जंतउ-संतउ णइ-तीरि पत्तु भासइ पिएहुत्तरु जलु णिरुत्तु।
णिय ताहिं जि वच्छाहरण सव्व उत्तारिवि णइहिं पइट्ठु भव्व।
पर तीरि धरिवि एहउ मयच्छि पुणु तुज्झुत्तारमि एच्छु अच्छि।
इय भणिवि सय जुत्तु धुत्तु उत्तरिवि महासरि विसण-भुत्तु।

15 घत्ता– जंतउ विडु पेच्छिवि पुणु वि णियच्छिवि भणिउ ताइ भो सरिहिं-तडा।
महु मुइवि विवच्छ विसम अवच्छ मेल्लिवि कहिं रे जाहिं जडा।। 49।।

## 50

तं णिसुणिवि जंतिं पर-तीरिं करु उब्भिवि जंपिज्जइ वीरें।
लइ मयच्छि इह धीरी अच्छहिं सरि-जलयर कोओहलु पेच्छहि।
पइँ परिणिउ णिय-णाहु विमुक्कउ मारावि उ जारु वि णउ चुक्कउ।
मज्झु वि उहूं खल चाहहि भक्खिउ होउ-होउ मइँ तुव मणु लक्खिउ।
5 इय भणिवि गयउ सा थक्क जाम जंवु वउ एक्कु तहिं पत्तु ताम।
संगहिय मास-खंड जि तडम्मि उच्छलिउ मच्छु ताा णइ जलम्मि।
पलुच्छंडिवि धाविउ तासु कज्जि गउ मीणु जलंतरि खणि णिमज्जि।

---

ले आया।

और इधर, वह विट पुनः उस भगेडू दुष्टा स्त्री के साथ वहाँ से आगे बढ़ा। चलते-चलते वे एक नदी के किनारे पहुँचे और उस अपनी प्रिया से बोला कि– "पहले मैं नदी पार कर लेता हूँ। अतः हे मृगाक्षि, तुम अपने सभी वस्त्र एवं आभूषण आदि उतारकर मुझे दे दो, जिससे मैं नदी में उतर कर उन सभी वस्तुओं को उस पार रखकर पुनः लौट सकूँ और तुम्हें भी उस पार ले चल सकूँ। यह कहकर अत्यन्त कपटी वह विट उसके वस्त्राभूषणादि लेकर अकेला ही नदी के पार चला गया।

घत्ता– विट को नदी में जाते हुए देखकर बार-बार उसकी ओर घूरकर वह उससे बोली– "अरे-अरे, इस नदी के किनारे मुझे वस्त्रविहीन विषम अवस्था में अकेला ही छोड़कर, हे मूर्ख विट, उस पार क्यो भागा जा रहा है?।। 49।।

**भगेडू स्त्री विट के साथ रहते हुए एक निरपराध भट को कोटपाल द्वारा पकड़वाकर उसे पिटवा देती है और विट के साथ पुनः आगे भाग जाती हैं बाद में वह धूर्त विट भी धोखे से उसके वस्त्राभरण आदि लेकर तथा उसे नदी तट पर अकेला ही छोडकर नदी के उस पार भाग जाता है।**

नदी को पार कर दूसरे किनारे की ओर जाते हुए उस धूर्त विट ने उस दुष्टा से अपना हाथ उठाकर कहा– हे "मृगाक्षि, अभी धैर्यपूर्वक वहीं नदी-किनारे खड़ी रहो और जलचर प्राणी के कौतूहलों को देखती रहो। तुम यह स्पष्ट जान लो कि तुमने अपने प्रियतम (वृद्ध वणिक्) को (धोखे से) छोड दिया, फिर उस (बेचारे निरपराध) जार भट को देवालय से कोटपाल द्वारा बंधवाकर उसे पिटवाने से भी नहीं चूकी और अब हे दुष्टा, मुझे भी खा डालना चाह रही हो? तुम्हारी इस दुष्ट बुद्धि को मैंने खूब परख लिया है।" यह कहकर जब वह विट नदी के उस पार पहुँच गया, तभी इस दुष्टा के पास एक श्रृगाल अपने मुँह में माँस का एक टुकड़ा दबाए हुए आया और उसने नदी में उछलती हुई एक मछली को देखा। तब उसने माँस का टुकड़ा तो वहीं किनारे पर छोड़ दिया और तत्काल ही उसे पकड़ने



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

णिउ आमिसु से णेंता णहम्मि — हूउ उहय भट्ठु जंबुउ खणम्मि।
तं पेच्छिवि हँसियउ सइरिणीए — परपुरिसागमणहू हेरिणीए।
10 रे बुद्धि विहूणं जड-सियाल — मुहगासु चइवि किह णट्ठु वाल।
तं सुणिवि भणइ जंवुउ सदीणु — हउँ इह तिरियंचु वि बुद्धिहीणु।
कहिं तेरी मइ लब्भइ गरिट्ठ — पइ मुइवि जारु संगहिउ धिट्ठ।
सो तइं माराविउ विडहु कज्जि — बोलंति ण लज्जहि हे अलज्जि।

घत्ता– साहीणु चएप्पिणु वणि जाएप्पिणु बहु सुक्खच्छिउ तुहुं जि वओ।
15 धारेसहि पावण जइ सुह-भावण असइकहा ता होसि तओ।। 50।।

## 51

ता जि कुमारु कहंतरु साहइ — वणिवरु एक्कु परोहणु वाहइ।
गउ समुद्द-परतीरि अतुल्लउ — रयणु एक्कु करि चडिउ महल्लउ।
सो वि परोहण पडि आवंतिं — चिंतिउ तिं मणम्मि मइवंतिं।

---

के लिए नदी में कूद पडा किन्तु मछली के पानी में डूब जाने के कारण वह उसे पकड नहीं पाया। इस प्रकार माँस के लोलुपी श्रृगाल ने अपना माँस का टुकड़ा भी खो दिया और मछली को भी न पकड़ पाया। वह दोनों से ही हाथ धो बैठा (उसे न यही मिला और न वह)।

यह घटना देखकर वह श्रृगाल उस स्वैरिणी स्त्री पर व्यंग्यपूर्वक हँसने लगा और उसे धिक्कारने लगा कि– पर पुरुष के साथ रमण करने वाली हे विवेकविहीन मूर्खा कृतघ्नी स्त्री, अपने मुख का ग्रास (कौर) छोडकर तूने दूसरे पर झपट्टा मारा, किन्तु वह भी तू प्राप्त न कर सकी। मैं (श्रृगाल) तो तिर्यंच एक बुद्धिहीन प्राणी हूँ, अतः प्राप्त हुए को छोड़कर लालच वश अप्राप्त वस्तु को लेने के लिये झपट्टा मारा और उसे भी प्राप्त न कर सका, तो भी कोई बात नहीं, किन्तु तू तो दुर्लभ मनुष्य-गतिवाली है। तुझे तो विवेक-अविवेक का निर्णय करने वाली बुद्धि प्राप्त हुई है, फिर भी तूने अपने पति को छोड़ दिया और अब तू एक जार-धूर्त विट पुरुष के साथ धृष्टतापूर्वक क्यों रह रही है? और तूने उस विट के लिए ही उस बेचारे दूसरे निरपराध भट को देवालय से पकड़वाकर उसे क्यों मरवाया है? हे निर्लज्ज, बोल, दे अपनी इन करतूतों के उत्तर।"

घत्ता– (जम्बू, उस मायावी मामा को कह रहा है कि) "इसीलिए, रति-सुख-साधनों का त्याग कर और वन में जाकर व्रत ग्रहण कर शाश्वत सुखों को प्राप्त करने के लिये शुभ-भावना पूर्वक तप धारण करना चाहिए। असति, दुराचारिणी स्त्री के उस उदाहरण से सभी को शिक्षा ग्रहण करना चाहिए।। 50।।

**कुमार जम्बू पुनः अपनी कल्पनाओं में भविष्य के सुखों के स्वप्न संजोये हुए विदेशों से आयात-निर्यात का व्यापार करने वाले रत्नों के व्यापारी का रोचक कथानक सुनाते हुए उसे संसार के क्षणिक् सुखों से विराम लेने की सलाह देते हैं।**

अपनी नीति-प्रधान कथा-कथन के प्रसंग में कुमार जम्बू ने पुनः एक वणिक् की कथा उसे सुनाई। उसके अनुसार एक वणिक्-श्रेष्ठ (बड़ा व्यापारी) समुद्री जहाज द्वारा वस्तुओं के आयात-निर्यात का कार्य करता था।

एक बार उसने समुद्र पार से एक अत्यन्त मूल्यवान् रत्न खरीदा, जहाज पर सवार हुआ और लौटते हुए मन में



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वेलाउलु पाविवि विक्केसमि चाउरंगु बलु एयहु लेसमि।
5 णरवइ तुल्लु सगेहि पईसमि मणइंछिय सुहाइं भुंजेसमि।
इय चिंतंतहु रयणु समुद्दहु कर होंतउ णिवडियउ रउद्दहु।
धाहावइ हा-हा थरु रक्खहु वाहणाइँ महु रयणु णिरिक्खिहु।
अण्णहिं भणिउं उवहि जलि णट्ठउ कहिं लब्भइ भो रयणु गरिट्ठउ।

घत्ता– रयणुव्व णरत्तणु लहिवि हियत्तणु रइ-सुहु णिद्दा भुत्तु जणु।
10 जइ जणण समुद्दहिं दुक्ख रउद्दहिं पडइ लहइ ता किह सुगुणु।। 51।।

**52**

ता आहासइ कह विज्जाच्चरु भिल्लु भमइ वणि इक्कु धणुह-करु।
तिं सरेण करि एक्कु वियारिउ अहिणा दट्ठउ भिल्लु णिरारिउ।
सप्पु वि तिं खणि वाणें बिद्धउ णिवडिउ महि करि सप्पु धणुद्धउ।
तिण्णि वि पडिय सियालें दिट्ठइं चिंतइ मणि सो मण्णिवि इट्ठइं।
5 छम्मासहु करि मासेक्कहु णरु दिवसेक्कहु भोयणु महु विसहरु।

---

विचार करने लगा कि उपयुक्त समय आने पर अधिक मूल्य पर उसे बाजार में बेच डालूँगा तथा उस धन से चतुरंगिणी सेना को तैयार करुँगा एवं नरपति (राजा) के समान मैं गृह-प्रवेश करुँगा। इस प्रकार मन में संजोई हुई अपनी इच्छाओं के अनुसार सुख-भोग करुँगा।

जब वह व्यापारी इस प्रकार की कल्पनाओं में डूबा हुआ था, तभी उसके हाथ से छिटककर वह रत्न समुद्र में जा गिरा। तब उस बेचारे व्यापारी ने जहाज के संचालकों से हा-हा विनती कर जहाज को तत्काल रोकने के लिये कहा और उसने उन्हें बताया कि– समुद्र के इसी स्थल पर गिरे हुए मेरे रत्न को खोजा जाय। जहाज के संचालकों ने उससे कहा कि अरे भाई, समुद्र की लहरों भरे पानी में मूल्यवान् रत्न कहाँ गया होगा, इसका क्या ठिकाना? अब वह कैसे मिल पायेगा?

घत्ता– कुमार जम्बू इस कथा की समीक्षा के रूप में कहते हैं कि दुर्लभ रत्न के समान ही इस दुर्लभ नरभव की सफलता इसी में है कि मनुष्य रति-सुख, निद्रा-सुख एवं भोजन-सुखों को क्षणिक् समझकर उनके प्रति मोह का त्याग कर तपस्या करे और शाश्वत् सुख की प्राप्ति के लिए साधना करे। क्योंकि यदि वह घोर दुखों से व्याप्त संसार रूपी समुद्र में पड़ जाएगा तो फिर वह शाश्वत् सुख प्राप्त न कर संसार में ही भटकता फिरेगा।। 51।।

**विद्याचर-चोर द्वारा कथित श्रृगाल के कथानक के उत्तर में कुमार जम्बू भी स्वप्न में राज्य प्राप्त कर सुखानुभव करने वाले दरिद्र लकड़हारे का रोचक कथानक सुनाकर नरभव की दुर्लभता तथा उसे सफल बनाने की शिक्षा प्रदान करता है।**

कुमार जम्बू का कथानक सुनकर उसके उत्तर में उस मायावी मामा विद्याचर चोर ने उसे एक रोचक कथानक सुनाते हुए कहा– किसी एक वन में एक धनुर्धारी भील घूम रहा था। उसने सर्प द्वारा डँसे गये मृत एवं विदारित हाथी को देखा। सर्प द्वारा डँसे गये उस भील ने भी धनुषवाण से उस सर्प को वेध दिया, जो भील के साथ ही वहीं जमीन पर गिर पडा। उन तीनों को वहाँ गिरा मरा पड़ा देखकर वहाँ से जाते हुए एक श्रृगाल ने उन्हें अपने लिये



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

होसइ इय चिंतेविणु मुट्ठउ धणुहुं खाहु पढमउ पारद्धउ।
धणु को जिहु खणेण गुणु तट्टउ मुउ सियालु तिं तालु जि फुट्टउ।
जिंह मुणंतु सहिउ मुउ जंवुउ तिंह पुणु बहु सुह लुद्धउ तुहुं धुउ।
भणइ कुमारु एक्कु पुणु वणिवरु दालिद्दें भुत्तउ सो दुहयरु।
10 गउ अडविहिं कट्ठहु भरु सीसें आणंतिं उण्हाल विसेसें।
सेय-खिण्णु खर-किरणहिं तत्तउ मेल्लिवि भारु रुक्ख-तलि सुत्तउ।
सो राणउ जायउ सुइणंतरि मण्णइ कामिणि-कील णिरंतरि।
ता गिहाउ तहु तियच्छुह तत्ती कोहाउर-पिय-पासि पहुत्ती।
ताइँ सो वि उट्ठाविउ जामहिं सो आहासइ भज्जहिं तामहिं।
15 पइँ अंतरिउ रज्जा महु पाविणि जाहि-जाहि खलि दुह-सय-दायणि।
एम भणिवि पुणु ओढिवि सुत्तउ णउ पेच्छइ किं पि वि छुह-तत्तउ।

घत्ता– ता लक्कड-भारउ दुह-सययारउ सिरिहिं चडाविवि आउ घरि।
जइ सुविणइ णिवसिरि पाविय सुहयरि तिहं दुलहउ णरभउ सुहरि।। 52।।

---

इष्ट मानकर मन में विचार किया कि अब तो मेरे लिये छह माह के लिए हाथी, एक माह के लिये यह नर (भील) तथा एक दिन के लिये यह साँप भोजन के लिये मिल गया है। यह जानकर वह अपने मन में बड़ा मुदित हुआ।

उसने सर्वप्रथम उस धनुर्धारी शिकारी भील के शव को खाना प्रारम्भ किया। उसने जैसे ही उस (भील) को खाना चाहा, तैसे ही उसके धनुष का गुण (तागा) टूट गया और वाण उसके मुँह में घुसकर तालू को फोड़ता हुआ बाहर निकल आया। अतः वह श्रृगाल वहीं मर गया।

इस पर वह विद्याचर जम्बू को संबोधित करता हुआ कहता है कि– "जिस प्रकार बिना सोचे-विचारे कार्य करने से उस श्रृगाल की मृत्यु हो गई, उसी प्रकार भविष्य में अनेक प्रकार के सुखों को प्राप्त करने के लिए (हे जम्बू) तुम भी लोभी बने जा रहे हो।

विद्याचर का यह कथानक सुनकर कुमार जम्बू ने भी उसके उत्तर में पुनः एक कथानक सुनाते हुए कहा– कहीं पर अपनी दरिद्रता का दुख भोगता हुआ एक बनिया रहता था। एक दिन वह अटवी में गया और लकडियाँ काटकर उसका गट्ठर सिर पर ढोकर ला रहा था। ग्रीष्म ऋतु का समय था। गर्मी के कारण सूर्य की तेज किरणों से वह विह्वल हो गया। पसीने से तर-बतर शिथिल पड गया। अतः उस बोझे को एक किनारे रखकर वह एक वृक्ष की छाया में सो गया। उसी समय उसने स्वप्न में देखा कि वह राजा बन गया है। अनेक कामिनियाँ उसके साथ क्रीडाएँ कर रही हैं। उसी समय अपने घर से भूख से व्याकुल क्रोधातुर पत्नी उसके पास जा पहुँची और उसे जगाकर जब उठा दिया, तो उसने अपनी पत्नी को डाँटते हुए कहा– हे पापिनी, तुम्हारे यहाँ आने के पहिले स्वप्न में मुझे यहाँ का राज्य मिला हुआ था। चल हट, यहाँ से, तू दुखदायिनी बडी भारी दुष्टा है, जो मुझे असमय में और मेरा राज्य-सुख समाप्त कर दिया। यह कहकर वह चादर ओढ़कर भूखा ही पुनः सो गया किन्तु फिर उसने वैसा सुखद स्वप्न नहीं देखा।

घत्ता– तत्पश्चात् जागकर वह दुखदायी लकड़ियों के उस भार को सिर पर रखकर अपने घर आया। जिस प्रकार स्वप्न में प्राप्त राज्यपद एवं संपदा सुखकारी होने पर भी, जागने पर वह दुर्लभ होती है, उसी प्रकार यह नरभव भी दुर्लभ ही है।। 52।।



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



भणइ मामु णड पडउ महियलि सुहयर-पुरिहिं आउ पुणु पविमलि।
णच्चहु गउ पुणु सों णिव-पासहि रक्खणु एक्कु णिहिवि आवासहि।
अइव विद्धु वोडु जि णामालउ आरामासण्णउं जि गुणालउ।
ता कवि तिय-आहरणहिं लंछिय गेहहु सासुयाइं णिब्भंछिय।
5 तहिं आइय सा मरणोक्कंट्ठिय कंठि पास घल्लिवि तरु संट्ठिय।
वोडुएण ता चिंतिउ चित्तें कंचण-लाहु मुणेविणु झत्तें।
मरणोवाउ अस्स दंसावमि जिहं आहरण असेसइँ पावमि।
ताइं भणिउ भायर उवएसहि सुलह-मरणि महु जमउरि पेसहि।
ता णडेण पुणु सिग्घु कहिज्जइ तुरउ भद्दिं चलण-तलि दिज्जइ।
10 कंठि पास पुणु इम घालिज्जइ एम तुरउ चलणहि टालिज्जइ।
एम ताहिं खणि दिक्खालंतहु टलियउ मंदलु तहु चलणहु।
णिवडिय गोठ पासि तहु गावहि चडफडंतु सो मुक्कउ जीवहिं।
पेच्छेविणु सो णडु जि मरंतउ भय पणट्ठ गय गेंहि तुरंतउ।
इय अणसिद्धु कज्ज जो वंछइ सो पुणु एच्छ लोइ खइ गच्छइ।

15 घत्ता– जा जिणवइ णंदणु दुरिय णिकंदणु बोल्लइ माम सुणेहिं णिरु।
इह पुरि वाणारसि किय अरियण वसि लोयवालु णिउ तहिं सुथिरु।। 53।।

---

**विद्याचर जम्बू को वृद्ध वोडु नामक नट की रोमांचक कथा सुनाता है, जिसके उत्तर में जम्बू कुमार भी उसे वाराणसी के राजा लोकपाल की कथा सुनाना चाहते हैं।**

जम्बू कुमार का कथानक सुनकर मायावी मामा विद्याचर ने कहा– वह (पूर्वोक्त) नट जब भूमि पर पड़ा हुआ था, तभी नगर से उसके सहचर आ गये। उसी समय वे नर्तक-गण राजा के पास जा पहुँचे और प्रार्थना की कि कम से कम एक नर्तक को रहने के लिए आवास दे दीजिए। वोडु नाम का एक अत्यन्त वृद्ध नर्तक है, जो बडा ही गुणवान् है। वह ससुराल में कभी अपनी पत्नी के आभरण की चोरी करने के कारण लांक्षित हुआ था और घर में उसकी सासु ने उसकी बडी भर्त्सना की थी। वही सास उसके पास मरने की कामना से आई है और गले में फाँस लगाकर वृक्ष पर स्थित है। तब उस वृद्ध वोडु ने मन में तत्काल विचार किया कि उससे स्वर्ण-प्राप्ति का लाभ तो हो ही सकता है। क्यों न इसके लिये मरने का उपाय बतला दूँ, जिससे उसके स्वर्णादि के समस्त आभूषण मुझे प्राप्त हो जावें।

उस सासु ने भी उससे कहा कि– "भाई, मुझे यमपुरि भेजने के लिए कुछ उपदेश दो, जिससे मुझे सहज-मृत्यु प्राप्त हो सके। तब उस नट ने तत्काल कहा कि हे भद्रे, तुम अपने पैरों के नीचे कोई आधार-स्तम्भ (तूरउ) रख लेना। फिर अपनी गर्दन में रस्सी की फाँस लगाना और अपने पैरों से ही आधार-स्तम्भ को बाहर की ओर ठेल देना। उसने भी वैसा ही किया और वह समीपवर्त्ती गोठ के पास जा गिरी और तड़फकर मृत्यु को प्राप्त हो गई।"

उस नट ने जब उसे मरा हुआ देखा, तो उसका भय मिट गया और तत्काल ही उसके घर जा पहुँचा। इस प्रकार का जो अनसिद्ध अर्थात् बिना सिद्ध किया हुआ कार्य करता है, वह निश्चय ही इस संसार में क्षय को प्राप्त होता है।

घत्ता– यह कथा सुनकर निष्पाप कुमार जम्बू ने कहा– हे मामा, मेरी सुनो, यहीं पर वाराणसी नाम की नगरी में शत्रु-जनों का विजेता लोकपाल नाम का राजा राज्य करता है।। 53।।



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



सो गउ विग्गहि सत्तुहु उप्परि गय पंच जि वरिसइँ एच्छंतरि।
तासु महिसि पुणु रूव गुरुक्की तरुणहँ दंसणि मयण-झुलुक्की।
घरसिहरहु चडेवि मण डोल्लिय जर धाइहिं अग्गइँ सा बोल्लिय।
किं महु वयणु सुसिउ णालोयहि किं महु तणु चेट्ठा णउ जोवहि।
5 किं महु अंतु णियच्छहि मायरि आणिहु वाणु को वि लहु रइहरि।
तं णिसुणेप्पिणु धाइए बुत्तउ मा जंपहि सुव एहु अजुत्तउ।
इय अण्णोणु पयंपहिं जामहिं रच्छा-जंतउ राणिए तामहिं।
सुण्णारहु सुउ चंगु जि दिट्ठउ मयण-समाणु मणम्मि पइट्ठउ।
एहुहु वाणु मज्झु आणावहि मयणि-सिहा जलंति उल्हावहि।
10 गय दूई सुणेवि पुणु तेत्तहिं चंगउ गच्छंतउ वहि जेत्तहिं।
किउ संकेउ गिहंतरि आणिउं जा छुडु राणि सिज्जाहि ठांणिउं।
तक्खणि वइरि जिणिवि पहु पत्तउ संधिउ मग्गु वले णरुत्तउ।

घत्ता– ता पुणु णिवपत्तिए मयणासत्तिए जाणिवि रायागमणु मणि।
चंगु वि अइचंगउ बेविर अंगउ पच्छाहरि घल्लियउ खणि।। 54।।

---

**राजा लोकपाल के समर-भूमि में जाने के बाद उसकी तरुणी महारानी एक सुवर्णकार युवक पर आकर्षित होकर उसे अपने रतिगृह में बुलवाती है। उसी समय राजा भी घर में आ जाता है। अतः भयभीत होकर वह उस युवक को अपने भवन के पीछे छिपा देती है।**

उस राजा लोकपाल को एक शत्रु से युद्ध करने के लिये अपने राज्य के बाहर जाना पड़ा और उसमें उसे पाँच वर्ष लग गये। उसकी तरुणी पटरानी अत्यन्त सुन्दरी थी। उसके अंग-प्रत्यंग से कामावस्था की झलक स्पष्ट दिखलाई पड़ती थी। एक दिन उसका मन पति के विरह में डोलने लगा। वह अपने राजमहल की अट्टालिका पर गई और अपनी वृद्धा धाय से बोली कि– "धाय माता, क्या तुम मेरे मुरझाए हुए मुख को नहीं देख रही हो? क्या मेरे शरीर के अंग-प्रत्यंगों की चेष्टाएँ नहीं देख रही हो? क्या मेरे अर्न्तद्वन्द्वों को नहीं जान रही हो? क्या मुझे मरा हुआ देखना चाहती हो? यदि नहीं, तो मेरे रतिगृह में किसी (तरुण) वाण (युवक) को शीघ्र ही लाकर उपस्थित करो।"

पटरानी का कथन सुनकर उस धाय-माता ने कहा– "हे पुत्री– महारानी, ऐसी अशोभनीय बातें मत करो।" वे दोनों जब इस प्रकार का परस्पर में वार्तालाप कर रहीं थी कि तभी महारानी ने गली में जाते हुए एक सुन्दर सुगठित एवं कामदेव के समान स्वर्णकार-युवक-पुत्र को देखा। वह उसके मन में बैठ गया। उसे देखकर काम शिखा की ज्वाला में जलने वाली उस महारानी ने धाय-माता से उस ज्वलन्त (सुवर्णकार पुत्र रूपी) वाण को बुला लाने को कहा। उसका आदेश पाते ही वह धाय-माता उसकी ओर से दूती बनकर गली में जाते हुए उस चंगे हट्टे-कट्टे युवक के पास पहुँची और संकेत में सब कुछ समझाकर उसे राजमहल के भीतर ले आई और उस चुलबुली महारानी के रतिगृह में शैया पर उसे बैठा दिया। संयोग से उसी समय बैरी को जीतकर वह राजा लोकपाल भी प्रियतमा से मिलने की उमंग के साथ घर आ पहुँचा।

घत्ता– कामासक्त होने के कारण काँपते-अंगों वाली उस महारानी ने प्रियतम को आया हुआ जानकर सुन्दरों में भी श्रेष्ठ सुन्दर चंगे युवक को तत्काल ही अपने भवन के पीछे ले जाकर छिपा दिया।। 54।।



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



चंगु वि पुरीस कूवम्मि खित्तु सा असणु पपेसइ तहु णिमित्तु।
गय तहिं वसंत-छम्मास जाम पच्छाहरु कम्मयरेंहि ताम।
बहु णीरें सोहिज्जंतु संतु विच्छण्ण दारि चंगु वि तुरंतु।
जलपूरें सहु णिग्गउ णिरुत्तु पवहंतउ सुरसरि-जलहिं पत्तु।
5 तहिं तडि संट्ठिउ लोएहिं दिट्ठु अइदुग्गंधु जि पंडुरु अणिट्ठु
जणविंदहि पुच्छिउ तुहु जि चंगु किं होसि ण होसि जि भणु अभंगु।
सो भणइं णीउ अच्छराहिं रूवासत्तियहिं जु कच्छराहिं।
बहु दिवसहिं जा मइं सरिउ गेहु ता तेहिं वियाणिवि मज्झु देहु।
विवरीउ करिवि दुग्गंध हुत्तु ईसावसेण एच्छु जि णिहित्तु।
10 इय भणिवि गयउ णिय घरि वराउ पुणु सुरहि सदव्वहि चंगु जाउ।
पुणु बहु दिवसहि अरि उवरि राउ गउ जा ता रयणिहिं हुउ पमाउ।
पुणु ते णिएविं कोक्कियउ चंगु सो जंपइ चिर-दुह-कंपियंगु।
सुह अणुहवियउ मइँ आसि जं जि देहहु फिट्टइ अज्ज वि ण तं जि।
जइ एय बार हउँ कहव घुट्ठ ता पुणु किह गच्छमि गय मरट्ठ।

---

**कामासक्त महारानी के जाल में फँसकर चंगा स्वर्णकार युवक आगे चलकर विविध प्रकार के कष्टों को सहता है।**

राजभवन के पिछवाडे में छिपा-छिपा वह चंगा स्वर्णकार युवक अपने मल-पुरीषादि कुएं में फेंकता रहता है। वह महारानी उसे प्रतिदिन भोजन-पानादि छिप-छिपकर भेजती रहती थी। इस प्रकार छह माह बीत गये और जब वसन्त ऋतु आ गई, तब उस समय तक भवन के पिछवाड़े में वर्षा का जल बहुत अधिक भर चुका था। अतः भवन के कर्मचारी जब उसे साफ करने के लिये पहुँचे, तभी वह स्वर्णकार युवक वर्षाजल से टूटे हुए दरवाजे से खिसक गया और जल-प्रवाह के साथ बहता-बहता वह नदी किनारे पहुँच गया। नदी के किनारे बैठे हुए उस चंगे युवक को वहाँ के लोगों ने देखा। घोर कष्ट सहन करने के कारण वह पीला पड गया था और शरीर से बहुत ही दुर्गन्ध आ रही थी। तब लोगों ने उससे पूछा कि तुम्हारे साथ क्या-क्या हुआ, और क्या नहीं, यह सच-सच बतलाओ। तब उत्तर देते हुए उस (अभागे) युवक ने कहा–

"वाराणसी के राजा लोकपाल की अप्सरा के समान सुन्दरी महारानी मेरे युवकोचित सौन्दर्य पर मोहित हो गई थी और कुकर्म करने के लिए उसने मुझे अपने राजभवन में बुलवाया था। मैं उसके साथ उसके भवन में कई दिनों तक रहा। किन्तु बाद में वहाँ के कर्मचारियों को जब इस रहस्य की जानकारी मिली, तब क्रुद्ध होकर मुझे कष्ट देकर उठाकर गन्दगी में फेंक दिया। इस प्रकार अपनी व्यथा-कथा कहकर वह बेचारा अपने घर चला गया और वहाँ जाकर सुरभित तथा औषधि-पूर्ण द्रव्यों के सेवन से चंगा हो गया।

कुछ दिनों के बाद उस राजा लोकपाल को किसी एक शत्रु के ऊपर चढ़ाई करने के लिए पुनः जाना पड़ा। तब रात्रि के समय जब सारा जग नींद में डूबा हुआ था, तभी उस महारानी ने कहीं जाते हुए उस चंगे युवक (अर्थात् मुझे) को पुनः बुलवाया। उसने जाकर दीर्घकाल तक कष्ट सहने की कँपा देने वाली करुण-कथा महारानी को सुनाई और कहा कि– 'महारानी, मैंने आपके साथ जितने भी सुखों का अनुभव किया था, उन्हीं के कुफल स्वरूप मेरी देह आज भी फटी जा रही है। यदि अब की बार मैं पुनः किसी प्रकार आपके साथ सुख-भोग कर लूँ, तो फिर मेरी क्या दुर्गति होगी? मैं तो मृत्यु को ही प्राप्त हो जाऊँगा।



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

15 घत्ता– इय रहसुह लद्धउ जीउ विमुद्धउ मरिवि णरयगइ दुहु सहइ।
णिग्गमिवि कहव पुणु होवि बहु गुणु पुणु को तंपि चित्तिमहइ।। 55।।

## 56

इय कुमर-वयण णिसुणिएण संसार-सरूव-विरत्तएण।
लहु विसय-कसाय समंतएण पसरिय मणम्मि रोमंचएण।
गयउर-रायहु पायड सुवेण पोमाइउ सो विज्जुच्चरेण।
भो भव्वु-भव्वु गुणरयण-वास पइं सच्चें फेडिय विसय-आस।
5 तुहुँ सामियं मइ-सुइ णाणवंतु तुहुं एक्कु सयल-तिजयहु महंतु।
इय थुणिवि कहिउ णिय-चरिउ तेण जिहं आसि वित्तु राइय मणेण।
हउँ विज्जुच्चरु णामेण चोरु मइँ कियउ देव बहु कम्मु घोरु।
महु भवसमुद्दि मज्जंतउहु पइँ हच्छालंवण दिण्णु सहु।

घत्ता– ता रइ धारंति चित्ति तुरंति जंबुकुमारे भणिउ पुणु।
10 कुंथहु जिणणाहहु केवलवाहहु आराहहि भो माम गुणु।। 56।।

---

घत्ता– इस प्रकार रति-सुख को प्राप्त कर तथा उसमें विमोहित होकर यह जीव निश्चय ही नरक गति में पड़कर वहाँ के दुखों को सहता है। वहाँ से यदि वह जिस किसी प्रकार निकल भी आया तो फिर कौन सा विवकेशील गुणज्ञ व्यक्ति उस (रति-सुख) का विचार अपने मन में लाएगा ?।। 55।।

**संसार के क्षणिक् सुखों का अनुभव कर विद्याचर-चोर का हृदय-परिवर्तन हो जाता है और जम्बू कुमार को अपना परिचय देकर वह अपने कुकृत्यों का प्रायश्चित कर सन्मार्ग की ओर बढ़ता है।**

कुमार जम्बू के कामासक्ति से विरत होने संबंधी विचारों को सुनकर, संसार के स्वरूप को जानकर तथा विषय-कषाय का दुखद अनुभव कर गजपुर-नरेश की रानी पद्मावती का पुत्र विद्याचर मन में बडा रोमांचित हो उठा और जम्बू कुमार से बोला– "सद्गुणों के भण्डार स्वरूप हे भव्य जम्बू कुमार, आपने सचमुच ही विषयाभिलाषाओं का त्याग कर उत्तम कार्य किया है। हे स्वामिन्, आप मति एवं श्रुतज्ञान के धारी हैं। इस संसार में आप सर्वश्रेष्ठ महापुरुष हैं।"

जम्बू की इस प्रकार स्तुति कर उस विद्याचर ने उससे कहा– "राजपुत्र होते हुए भी मेरे मन में वित्त-संग्रह के प्रति राग-भाव जाग गया था, अतः मैं चोरी करने लगा और मैं विद्याचर-चोर के नाम से प्रसिद्ध हो गया। हे देव, मैंने बहुत ही बुरे-बुरे कार्य किये हैं। उनके कारण मैं भव समुद्र में डूब रहा हूं। अतः अब आप ही मुझे अपना हस्तावलम्बन दीजिए।"

घत्ता– इस प्रकार अपने चित्त में वैराग्य का भाव रखने वाले उस विद्याचर चोर के लिए जम्बू कुमार ने पुनः कहा– हे मेरे गुणज्ञ मामा (विद्याचर), अब तुम तीर्थंकर कुन्थुनाथ जैसे केवलज्ञानी जिनेन्द्र की आराधना कर अपना कल्याण करो।। 56।।



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



उइयम्मि दिवायरु गयण तम भरु सयलु वि हट्टियओ।
सुत्तउ उट्ठेप्पिणु पुरहु जणु णिय-णिय-कज्जि पवट्टियओ।। छ।।

सुविहाण तूर वज्जिय घरम्मि सहु तक्करेण कुमरु जि खणम्मि।
आवासहु उत्तरियउ सुवीरु दिक्खा-कारणि चल्लियउ धीरु।
5 जणणी-जणणहिं पुरयणहिं जुत्तु णंदणवणि जंबू-सामि पत्तु।
ति-पयाहिंण देप्पिणु णाणधारि वंदिउ सोहम्मु मुणीसरारि।
कर-मउलिवि तें विण्णत्तु साहु उवसमिउ जिण भव-जलण-दाहु।
महु किज्जउ मुणि-दिक्खा पसाउ इय भणिवि परिट्ठिउ सुद्ध-भाउ।
दिण्णी दिक्खा भवहरिय तासु भव णिव्वण्णहु जिणमई सुवासु।
10 मेल्लिय सीसहु तिं कुसुममाल उप्पाडिय पंच जि मुट्ठि बाल।
कंकण-कुंडल-केओंर-हार वरवच्छइँ देहहु सुक्खयार।
उत्तारिवि सयलइँ मुक्कियाइ णं मयणहु वाणइँ लुक्कियाइँ।
बज्झब्भंतर तव-ताव भुत्तु अब्भसइ जंबु मुणि जिणहु सुत्तु।

घत्ता– मुणि-पय पणविवि विज्जच्चरेण धारिउ तउ दुद्धरु जि पुणु।
15 वणिवरेण अरुहयासेण तहा वउ विण्णउ तहिं पउर गुणु।। 57।।

---

**कुमार जम्बू ने सुधर्म मुनिराज से दीक्षा ग्रहण कर बाह्यभ्यन्तर – तपस्या प्रारम्भ कर दी।**
**विद्याचर-तस्कर तथा जम्बू के पिता सेठ अर्हद्दास ने भी दीक्षा ग्रहण कर ली।**

आकाश में सूर्योदय हुआ। समस्त अंधकार हट गया। नगर के निवासी जन सोते से उठ गये और अपने-अपने कार्यों में संलग्न हो गए।। छ।।

सेठ अर्हद्दास के भवन में प्रभातोदय सूचक तूर्य वाद्य बजने लगे। उस विद्याचर तस्कर के साथ धीर-वीर वे कुमार जम्बू तत्काल ही अपने आवास से नीचे उतरे और दीक्षा ग्रहण करने हेतु चल पड़े। अपने माता-पिता एवं पुरवासियों के साथ चलकर वे (जम्बू) राजगृही के नन्दनवन में पहुँचे और वहाँ विराजमान सुज्ञानी सौधर्म मुनीश्वर की तीन प्रदक्षिणाएँ देकर उनकी वन्दना की और भक्ति भरित भाव से दोनों हाथ जोड़कर उनसे विनती की कि– 'हे साधुवर, मुझे भवाग्नि की दाह से, बचाने वाली मुनि-दीक्षा देने की कृपा कीजिये।' यह कहकर वे वहीं बैठ गए।

सुधर्मा मुनिराज ने भी जिनमती माता के सांसारिक कष्टों से भयभीत हुए उस सुपुत्र जम्बू को भवदुखापहारिणी दीक्षा देने की स्वीकृति प्रदान कर दी।

दीक्षा-काल में ही जम्बू ने अपनी पुष्पमालाएँ उतार दी, पाँच मुट्ठियों में सिर के केशों का लुंचन कर दिया, कंकण, कुण्डल, केयूर, हार तथा शरीर को सुख प्रदान करने वाले समस्त मूल्यवान् वस्त्रों को इस प्रकार उतारकर फेंक दिये, मानों कामदेव के हाथ से उसके वाण को झपटकर ही फेंक दिया हो। उसके बाद वे मुनिपदधारी जम्बूस्वामी बाह्याभ्यन्तर तपों का अभ्यास करने लगे।

घत्ता– उस विद्याचर ने भी मुनिराज जम्बूस्वामी के चरणों में प्रणाम कर दीक्षित होकर दुर्धर तपस्या प्रारम्भ कर दी। उस वणिक् श्रेष्ठ अर्हदास ने भी उनसे विनय पूर्वक प्रवरगुणी दीक्षा धारण कर ली।। 57।।



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



जिणवइ सुप्पह-अज्जियहि पासि दिक्खिय जिणवय-धरि महुर-भासि।
पउमसिरि पमुहं चारि वि दिणीय तविस दियाइँ महि वण्णणीय।
मह उग्ग दित्त तवठाव खीण हुय सयलि जिणायमि ते पवीण।
सोहम्म-मुणिंदहु जय-पहाणु उप्पण्णउं केवलु विमलु णाणु।
5 तहु सह मंडवि संट्ठिउ सुठामि आयरइ महातउ जंबु-सामि।
वर दंसण-णाण-समाहि-जुत्तु मण-वयण-काय तेहि गुत्तु तिगुत्तु।
गुरु काय-किलेसहिं सोसियंगु उम्मूलइ सहुं राएँ अणंगु।
बावीस-परीसह खमु णिरीहु काओसग्गें अच्छइ णिसीहु।
जा चरणु चरइ तहि जंबु सामि ता महि विहरेप्पिणु परम गामि।
10 अट्ठारह-वरिसइँ पुणु वि पत्तु विउलइ रिसिहरि मल-दोस-चत्तु।
माहहु सत्तमि सोहम्म साहु णिव्वाणि गयउ होइवि अबाहु।

घत्ता– तच्छेव दिवसि जिणमइ सुवहु घाइ-कम्मु पुणु णट्टओ।
णं सुक्क-झाण सिहिणीसरविगउ खणेण ठंतट्ठओ।। 58।।

---

**जम्बू के साथ ही उसके माता-पिता एवं पत्नियों तथा विद्याचर-चोर ने सुधर्म मुनिराज से दीक्षा ले ली। सुधर्म मुनिराज को निर्वाण-प्राप्ति तथा उसी दिन जम्बू को कैवल्य-प्राप्ति हुई।**

मधुर वाणी बोलने वाली जिनमती (जम्बू की माता) भी आर्यिका सुप्रभा से दीक्षा लेकर जैन-व्रतों का पालन करने लगी। पदमश्री (कमलश्री) आदि जम्बू की उन सुप्रसिद्ध चारों भार्याओं ने भी तपव्रत धारण कर लिये और उन सभी ने एक ओर महान् उग्र तपस्या कर शरीर को कृश कर लिया, तो दूसरी ओर वे सभी जिनागमों में भी प्रवीण हो गई।

जग-प्रधान आचार्य सुधर्म मुनीन्द्र को निर्दोष केवलज्ञान उत्पन्न हो गया। इस कारण उनके लिये वहीं पर एक सभा-मण्डप बनाकर उपदेशों के प्रसार के लिये उन्हें विराजमान किया गया।

उसी समय वहाँ दर्शन, ज्ञान एवं सुसमाधि के धारी, मन, वचन एवं काय रूप तीन गुप्तियों के धारी, काय-क्लेश-व्रत से शुष्क देह वाले, राग-द्वेष का जड़मूल से उन्मूलन कर देने वाले, अनंग, बाईस परीषहों के पालक, क्षमाशील, निरीह, कायोत्सर्ग-मुद्रा से तपस्या करने वाले, एवं तद्भव मोक्षगामी जम्बू स्वामी भी विचरण करते हुए वहाँ पधारे।

अठारह वर्षों की घोर तपस्या कर उन सुधर्म मुनिवर ने माघ मास की सप्तमी के दिन राजगृही के विपुलगिरी के निर्मल शिखर से निर्वाण की प्राप्ति की।

घत्ता– और, उसी दिन माता जिनमती के सुपुत्र जम्बू ने घातिया-कर्मों को नष्ट कर कैवल्य की प्राप्ति की, वे ऐसे प्रतीत हो रहे थे मानों शुक्ल-ध्यान रूपी अग्नि शिखा से निखर कर एक नये सूर्य का ही उदय हुआ हो।। 58।।



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



केवलणाणु तासु उप्पणउ लोयालोउ सयलु पडिछिण्णउ।
दव्वसरूउ असेसु वियाणिउ देवागमणु जाउ सविमाणिउ।
इंद-णरिंदहिं वंदिउ केवलि महि विहरेप्पिणु णासिय भव-कलि।
धम्म-मग्गु भवहँ सुपयाविवि मिच्छा-पडलु दूरि णिण्णासिवि।
5 अट्ठारह-वरिसइँ पुणु तहिं गिरि जाएप्पिणु अंतिम-केवलि-सिरि।
जंबुसामि णिव्वाणहि पतउ हूवउ सिद्ध वसुगुण-संजुत्तउ।
जणणी-जणणु वि गय बंभोत्तरि सण्णासें मरेवि एच्छंतरि।
इंद-फणिंद बे वि संजाया अट्ठ-गुणट्ठ वि उव्वण काया।
तहं बहुयउ चयारि तवहुत्तइँ वासुपुज्ज चेईहरि पत्तइँ।
10 मासु एक्कु सण्णासु करेप्पिणु हूव अमराहिव तच्छ भरेप्पिणु।

घत्ता– विज्जाच्चरु मुणिवर संघहुओ उग्गतवेण विराईयओ।
जइवरु एयारह अंगधरु पुरिमतालि संपाइयओ।। 59।।

---

**कठोर तपस्या के फलस्वरूप जम्बू स्वामी को निर्वाण पद की प्राप्ति हुई तथा वह विद्याचर-तस्कर कठोर तपस्या के फलस्वरूप ग्यारह अंग का धारी होकर ससंघ विहार करता हुआ पुरिमताल पहुँचा।**

उन जम्बू स्वामी को वह केवलज्ञान उत्पन्न हो गया, जिसमें लोकालोक के समस्त पदार्थ प्रतिबिम्बित होने लगते हैं। उन्होंने समस्त षड्द्रव्यों के स्वरूप को जान लिया। देवगण अपने-अपने विमानों से वहाँ उपस्थित होने लगे। इन्द्र-नरेन्द्रों ने वहाँ आकर उन केवलज्ञानी (जम्बू) की वन्दना की। भवों का नाश करने वाले वे अन्तिम केवली जम्बू स्वामी पृथिवी तल पर भव्यजनों के लिए धर्म का प्रशस्त-मार्ग बतलाते हुए, मिथ्यात्व रूपी अन्धकार को नष्ट करते हुए और अठारह वर्षों तक विहार करते हुए वे उस गिरि-शिखर पर पहुँचे और अष्टगुणों से संयुक्त होकर परिनिर्वाण को प्राप्त हुए।

और इधर, जम्बू के माता-पिता भी दीक्षितावस्था में मरे और ब्रह्मोत्तर-स्वर्ग में वे दोनों ही इन्द्र-फणीन्द्र के रूप में उत्पन्न हुए, जिन्हें अष्टगुण समन्वित वैक्रियक शरीर प्राप्त हुआ। (जम्बूकी) चारों पत्नियाँ भी वासुपूज्य के चैत्यालय (चम्पापुरी) पहुँची। वहाँ उन्होंने एक मास तक संन्यास का पालन किया और मरकर वे सभी अमराधिपति हुई।

घत्ता– वे यतिप्रवर विद्याचर-मुनि भी अपने संघ के साथ उग्र तपस्या करते हुए सुशोभित हुए और ग्यारह अंगधारी बनकर विहार करते हुए वे पुरिमताल पधारे।। 59।।

**जंबू-सामि-चरिउ-समत्तं**
**(जम्बू स्वामी चरित समाप्त)**

---

4877



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



अपभ्रंश का अद्यावधि अप्रकाशित एक दुर्लभ-ग्रन्थ–

# तिसट्ठिमहापुराणपुरिसआयारगुणालंकारु

(प्रस्तुत रचना– जंबू-सामि-चरिउ का मूल स्रोत)

मनुष्यायु-कर्म से जो प्राणी मनुष्य-पर्याय धारण करता है तथा भौतिक-जगत् में अपने शौर्य, वीर्य एवं पराक्रमों का प्रदर्शन करता हुआ काल-क्रम से कषायों, वासनाओं एवं विकारों का विजेता बनकर आत्म-विकास के क्षेत्र में वर्धमान रहता है, उस तेजस्वी, मनस्वी एवं पुण्यशाली पुरुष को महापुरुषों की कोटि में गिना जाता है। श्रमण-परम्परा में ऐसे महापुरुष को 'शलाका-महापुरुष' की संज्ञा प्रदान कर उनकी कुल संख्या 63 मानी गई है, जिनमें 24 तीर्थंकर, 12 चक्रवर्ती, 9 बलदेव, 9 वासुदेव एवं 9 प्रतिवासुदेव सम्मिलित हैं।

उक्त 63 शलाका महापुरुषों में से किसी एक अथवा एकाधिक के चरित को आधार मानकर संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश एवं कन्नड़ आदि के कवियों ने समय-समय पर अनेक रससिद्ध काव्य-ग्रन्थों की रचनाएँ की हैं। किन्तु उक्त सभी "शलाका-महापुरुषों" के चरित का एक ही साथ विस्तार पूर्वक ग्रथन करने वाले तीन ग्रंथ अद्यावधि उपलब्ध एवं प्रकाशित है :– आचार्य जिनसेन कृत महापुराण अथवा त्रिषष्ठिशलाकामहापुरुष चरित (9वीं सदी) महाकवि पुष्पदंत कृत महापुराणु अथवा तिसट्ठिमहापुराण-पुरिसआयार-गुणालंकारु (10वीं सदी) तथा आचार्य हेमचंद्र कृत त्रिषष्ठिशलाकापुरुष-चरित्र (13वीं सदी)। इनमें से प्रथम एवं अंतिम ग्रन्थ संस्कृत-भाषा निबद्ध हैं तथा दूसरा ग्रंथ अपभ्रंश-निबद्ध।

त्रेसठ-शलाका-महापुरुष संबंधी एक चतुर्थ अपभ्रंश-रचना भी अभी हाल में मुझे उपलब्ध हुई है, जिसका नाम "तिसट्ठिमहापुराणपुरिसआयारगुणालंकारु" अपरनाम "महापुराणु" है। इस रचना के प्रणेता महाकवि रइधू (15वीं सदी) हैं। सन् 1959 में इन पंक्तियों के लेखक ने जब रइधू-साहित्य पर अपना शोधकार्य प्रारंभ किया था तथा उसी निमित्त से रइधू की रचनाओं की खोजकर उनकी प्रशस्तियों में उक्त तिसट्ठि-महापुराण का जब नामोल्लेख देखा तभी से उसकी खोज में वह लगभग 15 वर्षों तक व्यग्रता पूर्वक प्रयत्नशील बना रहा, किन्तु सारा परिश्रम व्यर्थ चला गया और अंततः जब निराश होकर उसे लुप्त-विलुप्त मान बैठा था तभी संयोग से उसकी एक प्रति मुझे अपने पूज्य गुरुवर सिद्धान्ताचार्य पंडित कैलाशचंद्र जी शास्त्री (वाराणसी) द्वारा प्राप्त हुई। उसे उन्होंने प्रतिलिपि कर चुकने के बाद तुरंत वापिस कर देने का आदेश दिया, जिसका पालन किया गया। यह रचना अत्यंत विशाल है, अतः इसे संपूर्ण अध्ययन के लिए दीर्घावधि अपेक्षित है, किंतु अपने कुछ गुरुजनों एवं मित्रों के आग्रह से उसका संक्षिप्त सामान्य-परिचय तैयार किया है, जिसे यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है :–

**प्रति-परिचय** :— "तिसट्ठिमहापुराणपुरिसआयारगुणालंकारु" की प्रस्तुत प्रतिलिपि वि.सं. 1499 आषाढ़ सुदी 5 बुधवार की है। इसका प्रतिलिपि-स्थल गोपाचल-दुर्ग है। साधु नत्थु के पुत्र रूपचंद्र ने इसकी प्रतिलिपि गोपाचल के तोमरवंशी राजा डूंगरसिंह, जिनका समय वि.सं. 1481 से 1510 है, के शासनकाल में की थी, जैसा कि उसकी अन्त्य-पुष्पिका से विदित होता है :– 'अथ संवत्सरेऽस्मिन् श्री विक्रमादित्य-गताब्द संवत् 1499 वर्षे आषाढ़ सुदि 5 बुद्धवासरे श्री गोपगिरी महाराजाधिराज श्री डूंगरसिंह राजा वर्तमाने साधु नत्तू पुत्र रूपचंद्र लिखितम्।'

उक्त प्रतिलिपिकार रूपचंद्र वही हैं जिन्होंने महाकवि रइधू के "पासणाहचरिउ" की वि.सं. 1498 में प्रतिलिपि की थी। वह प्रति सचित्र है तथा दिल्ली के एक प्राचीन जैन शास्त्र भंडार में सुरक्षित है। उक्त तिसट्ठि-महापुराणु एवं उक्त पासणाहचरिउ के प्रतिलिपि-कालों से यह स्पष्ट है कि प्रतिलिपिकार, अपभ्रंश-भाषा के जानकार, विद्वान्, साहित्य-रसिक एवं जिनवाणी-भक्त थे। यह प्रतीत होता है कि वे संभवतः चित्रकार भी थे और उक्त "पासणाहचरिउ" के चित्र संभवतः उन्हीं के द्वारा निर्मित थे। इस विषय में विशेष शोध-खोज की आवश्यकता है।



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पासणाहचरिउ (सचित्र) की प्रतिलिपिकार-प्रशस्ति में उन्हें अग्रोतक-वंशोत्पन्न साधु नत्थू एवं करमा का पुत्र कहा है।

तिसट्ठि (महापुराण) की प्रस्तुत प्रति में कुल 465 × 2 पृष्ठ हैं। प्रत्येक पृष्ठ की लंबाई और चौड़ाई 11.10" × 5.5" है। दायाँ और बायाँ हाशिया 1.6" तथा 1.6" तथा ऊपरी एवं निचला हाशिया 0.5" तथा 0.5" है। प्रत्येक पृष्ठ में कुल पंक्तियाँ 13-13 तथा प्रत्येक पंक्ति में वर्ण संख्या 38 से 44 के मध्य है। पृष्ठ संख्या 284 ख से लेकर 344 तक के पृष्ठों को छोड़कर बाकी के समस्त पृष्ठों का कागज मोटा एवं उनका रंग मटमैला है। मौसमी प्रभाव एवं प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों की सुरक्षा संबंधी असावधानी से उसकी लिखावट कहीं-कहीं धुंधली तथा बरसाती नमी के कारण पृष्ठों के परस्पर में चिपक जाने से भी उनकी लिखावट कहीं-कहीं क्षतिग्रस्त हो गई है। अंतिम पृष्ठ की लिखावट तो इतनी धुंधली हो गई है कि उसे पढ़ना असंभव जैसा हो गया है।

पृष्ठ संख्या 284 ख से 344 तक के पृष्ठ अपेक्षाकृत सफेद एवं पतले हैं। उनकी लिखावट भी भिन्न है। उनमें प्रत्येक पृष्ठ में 15-15 पंक्तियाँ हैं और हॉशिये भी अपेक्षाकृत छोटे हैं। इनमें 'घत्ता' शब्द एवं घत्तों की संख्या के स्थान रिक्त हैं। प्रतीत होता है कि प्रतिलिपिकार ने प्रतिलिपि कर चुकने के बाद लाल स्याही से उन्हें लिख देने के विचार से छोड़ दिया होगा किंतु बाद में किसी कारण-विशेष से वह वैसा नहीं कर पाया होगा। इन पृष्ठों में काली स्याही का प्रयोग किया गया है, किंतु मूल पृष्ठों की काली स्याही से वह भिन्न है। मूल पृष्ठों में 'घत्ता' शब्द, घत्तों की संख्या एवं पुष्पिकाएँ लाल स्याही में अंकित हैं तथा मूल कथा भाग गहरी काली स्याही में है। यह कहना कठिन है कि उक्त पृष्ठ मूल पृष्ठों के अत्यंत जीर्ण-शीर्ण हो जाने के कारण उन्हीं की प्रतिलिपि हैं अथवा उनके नष्ट हो जाने पर किसी अन्य प्रति की प्रतिलिपि?

मूल प्राचीन ग्रंथों के बीचोंबीच सर्वत्र छोटा-चौकोर स्थान रिक्त छोड़ा गया है। उसके बीच में एक बड़ा शून्य लाल स्याही से भरा गया हैं इसी प्रकार हॉशिए भी समानान्तर काली रेखाओं के बीच लाल स्याही से भरे गए हैं।

प्रस्तुत तिसट्ठि (महापुराण) की भाषा अपभ्रंश है। प्रत्येक संधि के अंत में आशीर्वचन के रूप में विविध छंद वाले संस्कृत श्लोक भी अंकित है। उसमें कुल 50 संधियाँ एवं 1357 कड़वक हैं, किंतु कवि ने स्वयं ही इसका विस्तार 1500 प्रमाण बतलाया है। प्रतीत होता है कि इसमें उसने प्रत्येक संधि के अंत में लिखित आशीर्वादात्मक संस्कृत श्लोक, प्रत्येक सन्धि के अंत में लिखित पुष्पिकाएँ तथा प्रत्येक संधि के प्रारंभ में लिखित विशेष घत्तों को लेकर ही उसने अपनी गणना-पद्धति से उसकी संख्या 1500 बतलाई है।

**मूल प्रेरक एवं आश्रयदाता** :— उक्त तिसट्ठि. (महापुराण) के प्रणयन के मूल-प्रेरक एवं आश्रयदाता साहू कुन्थुदास हैं। कवि ने आद्य-प्रशस्ति में लिखा है कि– "जब मैं गोपाचल-दुर्ग में (1/2/5) निवास कर रहा था, उसी समय पंडित महणसिंह तथा उनकी पत्नी मौल्ली के सुपुत्र कुन्थुदास ने आकर मुझसे निवेदन किया कि मैं उन्हें स्वाध्याय हेतु एक "तिसट्ठि. (महापुराण)" की रचना कर दूँ", (1/2/5-12) रइधू ने उक्त विषयक गंभीरता का अनुभव कर पहले तो उसके प्रणयन में असमर्थता व्यक्त की किंतु साहू कुन्थुदास के बार-बार प्रार्थना करने पर कवि ने उसका प्रणयन करना स्वीकार कर लिया। (1/4/7) ये आश्रयदाता कुन्थुदास वही हैं जिन्होंने रइधू के लिए पूर्व में भी 'जिमंधर-चरिउ' एवं 'कोमुहकहपबंधु' नाम की रचनाओं के प्रणयन में प्रेरणा देकर आश्रयदान दिया था। (1/4) तिसट्ठि. (महापुराण) की प्रशस्ति से विदित होता है कि वे ऐसे श्रीमंत थे, जिन्होंने राजकीय विविध सम्मानित पदों पर रहकर तथा अपने पुरुषार्थ से लक्षपति बनकर भी कभी अहंकार नहीं किया। वे निरंतर ही साहित्य एवं साहित्यकारों का सम्मान करते रहे। उन्हें इस बात का बड़ा दुःख था कि उनके पास प्रचुर मात्रा में ऐश्वर्य-लक्ष्मी तो है किंतु विद्या-लक्ष्मी नहीं। अतः उन्होंने इसके लिए महाकवि रइधू से याचना की। (50/44) रइधू ने उन्हें 'मित्र' कहकर भी संबोधित किया है। इससे प्रतीत होता है कि वे सम-वय (1/2/13) वाले रहे होंगे। रइधू ने कुन्थुदास को श्रीमान्, धीमान्, दयालु, साहित्य-रसिक आदि के रूप में स्मरण किया है। यथा–



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

**सत्पात्रदानेषु विभूति यस्य सच्छास्त्र अर्थेषु मन प्रसन्नः।**
**जिनाद्रि पद्मेषु नताङ्गवृत्तिः स कुन्थुदासो जयतात्सदात्र।।** संधि-11
**यः सर्वसत्त्वेषु दयानुभावो जैन-श्रुतानां श्रवणानुरागः।**
**परोपकारेषु रतो मनीषी स कुन्थुदासो जयतासदात्र।।** संधि-15

तिसट्ठि. (महापुराण) की अन्त्य प्रशस्ति में कुन्थुदास की 10 पीढ़ियों का परिचय दिया गया है जिसके अनुसार उनके पितामह रतनसाहू अच्छे पंडित थे। कवि ने उन्हें मित्तल गोत्रीय अग्रवाल कहा है। (50/43)

रइधू ने अपनी जिमंधर-चरिउ की आद्य-प्रशस्ति में लिखा है कि "साहू कुन्थुदास ने अपने (1/4) बाएँ कान में स्वर्णकुंडल न पहिनकर 'कौमुदीकथाप्रबंध' रूपी कुंडल तथा माथे पर महापुराण रूपी मुकुट धारण किया था और जब दायाँ कान रिक्त रह गया तब उसमें 'जिमंधर-चरिउ' रूपी कुंडल धारण कर अपना जीवन कृतार्थ किया था।" इस उल्लेख से यह स्पष्ट है कि कुन्थुदास ने रइधू को प्रेरित कर उनसे कोमुइकहापबंधु, तिसट्ठि. (महापुराण) एवं जिमंधर-चरिउ इन तीन रचनाओं का प्रणयन कराया था। इनमें से अंतिम दो रचनाएँ तो उपलब्ध हो गई हैं किंतु प्रथम रचना 'कोमुइकहापबंधु' की खोज जारी है।

**पूर्वकालीन एवं समकालीन भट्टारकों के उल्लेख** :— रइधू ने साहू कुन्थुदास का परिचय देते हुए उनके कुलगुरु के रूप में भट्टारक हेमकीर्त्ति मुनि का स्मरण किया है तथा उन्हें 'गच्छ का नायक' कहा है। भट्टारक हेमकीर्त्ति के साथ कवि ने उनके पूर्ववर्त्ती भट्टारक विजयसेन, नयनसेन, अश्वसेन, अनन्तकीर्ति एवं खेमकीर्ति के उल्लेख भी किए हैं। कवि ने इन सभी को माथुरसंघी भट्टारक बताया है। 'प्रवचनसार' की एक प्रतिलिपिकार-प्रशस्ति में उक्त भट्टारकों की परंपरा काष्ठासंघ, माथुरगचछ एवं पुष्करगण-शाखा के अंतर्गत उपलब्ध होती है। उसमें उक्त हेमकीर्ति भट्टारक का समय वि.सं. 1469 दिया गया है। यथा :—

**विक्रमादित्य राज्येऽस्मिंश्चतुर्दश परे शते।**
**नवषष्ट्या युते किं नु गोपाद्रौ देवपत्तने।।** —दे. भट्टारक संप्रदाय, पृष्ठ 226

भट्टारक हेमकीर्ति के पूर्व के भट्टारकों के समय को ज्ञात करने के लिए हमारे पास वर्तमान में साधन-सामग्री का अभाव है, किंतु यह निश्चय है कि वे वि.सं. 1400 से वि.सं. 1469 के मध्य हुए हैं।

**कविगुरु-पाल्हब्रह्म** :— महाकवि ने तिसट्ठि. महापुराणु में अपने गुरु के रूप में भट्टारक पाल्हब्रह्म का उल्लेख किया है और कहा है कि— 'प्रस्तुत रचना पाल्हब्रह्म के शिष्य मैंने (अर्थात् रइधू ने) की है। कवि ने उक्त पाल्ह-ब्रह्म (50/44/16) का उल्लेख अपनी "सम्मइजिणचरिउ" (10/28/9-10) तथा बलहद्दचरिउ (1/4/7-8) में भी किया है। "सम्मइजिणचरिउ" में कवि ने उन्हें काष्ठासंघ, माथुरगच्छ एवं पुष्करगण के प्रमुख भट्टारक यशकीर्ति के तीन शिष्यों में से प्रधान-शिष्य कहा है तथा "बलहद्दचरिउ" में उन्हें अपने गुरु के रूप में स्मरण किया है। रइधू ने उनहें 'आयरिय' (आचार्य) विशेषण से सम्बोधित किया है किंतु उनका विशेष परिचय नहीं दिया है। अपभ्रंश-साहित्य में रइधू को छोड़कर इनका उल्लेख अन्यत्र कहीं भी देखने को नहीं मिल सका, यह महान आश्चर्य का विषय है। पाल्ह-ब्रह्म के गुरु भट्टारक यशःकीर्ति का समय वि.सं. 1486 से 1510 निश्चित है। अतः पाल्ह-ब्रह्म का समय उसी से निश्चित हो जाता है।

**प्रस्तुत रचना के संशोधक एवं सहायक श्री बोहित्थ** :— तिसट्ठि. महापुराणु की अन्त्य प्रशस्ति (50/41/3) में महाकवि रइधू ने लिखा है कि— "हेमकीर्ति" मुनि के शिष्य श्री बोहित्थ ने प्रस्तुत महापुराणु रूपी श्रेष्ठ स्वर्ण को अपनी बुद्धि रूपी कसौटी पर निष्कपट-भाव से कसकर उसे ऐसे चित्रलेखों से सुशोभित किया है कि जिससे उस ग्रंथ ने गुणीजनों के चित्त को भी मोह लिया। यथा :—

हेमकित्ति मुणि णाहह सीसें — जो बुहविंदहिं पणविउ सीसें।।
बंभव्वय धारएण गरीसें — संसारोवहि णिवडण भीसें।।



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सिरि बोहित्थ णाम सुपहाणें गयतंदेण विज्ज-गुण-ठाणें।
तेण महापुराणवरकंचणु मई कसवट्टिहिं कविवि अवंचुणु।
चित्तलेह लाएप्पिणु सोहिउ गुणियण-विंदु सयलु खणि मोहिउ।
चहुविह-भेय सुवण्णहि घडियउ अच्छ-पसच्छ रयण-गण-जडियउ।।
कुंथयास-साहुहु सिर-सेहरु हुउ परिपुण्णु सवण-मण-सुहयरु।। –तिसट्ठि. 50/40/1.7

**प्रस्तुत तिसट्ठि. महापुराणु क्या सचित्र था?** :— उक्त कथन से यह स्पष्ट है कि श्री बोहित्थ ऐसे धुरन्धर विद्वान् एवं कवि थे जिन्होंने उक्त महापुराणु की भाषा-शैली को सजाया संवारा था। इतना ही नहीं, कवि के संकेत के अनुसार श्री बोहित्थ ने उसके चित्र भी तैयार किए थे, जिनके सौन्दर्य ने गुणी-जनों के चित्त को भी मोह लिया था। इससे यह प्रतीत होता है कि उक्त तिसट्ठि. महापुराणु की कोई सचित्र प्रति भी तैयार की गई थी, जो इस समय लुप्त-विलुप्त है अथवा कहीं छिपी पड़ी है। उक्त तिसट्ठि. महापुराणु का सचित्र होना बहुत अधिक संभव भी है क्योंकि जिनसेन कृत महापुराणु के चित्र उस समय तक बन चुके थे। उसकी सचित्र प्रति संभवतः ग्वालियर में भी रही हो और वही रइधू के तिसट्ठि. महापुराणु को भी सचित्र बनाने में प्रेरक रही हो तो कोई आश्चर्य नहीं। इस विषय में विशेष शोध-खोज की आवश्यकता है।

कवि ने अपनी उक्त सचित्र प्रति के विषय में आगे लिखा है कि– "चार प्रकार के वर्णों (रंगों) से उन चित्रों को घटित किया गया तथा रत्नगणों से उन्हें जड़ा गया। इस प्रकार वह ग्रन्थराज साहू कुन्थुदास के सिर का 'सेहरा' सिद्ध हुआ।" रइधू का यह कथन उस मध्यकाल का है, जब पोथियों को स्वर्णाक्षरों में लिखे जाने तथा उनके चित्रों अथवा पृष्ठों में हीरे-मोती जड़े जाने की प्रथा थी। फिरदौस कृत शाहनामां तथा अन्य कई उसी प्रकार के ग्रन्थ आजकल भी उपलब्ध हैं। साहू कुन्थुदास लक्षाधिपति तो थे ही, अतः उनके सचित्र महापुराणु की कोई प्रति स्वर्णाक्षरों में तथा रत्नजटित रही हो तो कोई असम्भव नहीं।"

**महाकवि रइधू की स्वरचित रचनाएँ** :— साहू कुन्थुदास ने महाकवि रइधू से तिसट्ठि महापुराणु के प्रणयन की प्रार्थना करते समय कहा है कि– 'आपने इसके पूर्व अनेक ग्रन्थों की रचना की है।' इससे यह अनुमान होता है कि रइधू प्रस्तुत महापुराणु के प्रणयन के पूर्व अनेक ग्रन्थ लिख चुके थे किन्तु उल्लेख से यह पता नहीं चलता कि कवि के वे ग्रन्थ कौन-कौन से थे, जो तिसट्ठि. महापुराणु के पूर्व लिखे जा चुके थें (1/2/9) रइधू ने अपने 'सुकोसलचरिउ' एवं 'सम्मत्तगुणणिहाणकव्व' को छोड़कर अपने किसी भी ग्रन्थ में उनका रचनाकाल अंकित नहीं किया। अतः यह जानकारी प्राप्त करने में कठिनाइयाँ हैं कि कौन सा ग्रन्थ किस ग्रन्थ के बाद लिखा गया। महाकवि ने यद्यपि अपने कुछ ग्रन्थों में अपनी पूर्वरचित रचनाओं के नामोल्लेख किए हैं किन्तु उन उल्लेखों में भी कुछ ऐसी विसंगतियाँ हैं कि उनसे रचनाक्रम का निर्धारण संभव नहीं हो पाया है। हाँ, रइधू कृत सम्मइजिणचरिउ, णेमिणाहचरिउ, सावयचरिउ एवं जिमंधरचरिउ में कवि की पूर्व रचित रचनाओं में तिसट्ठि. महापुराणु का उल्लेख है, अतः यह निश्चय है कि उन चारों रचनाओं के पूर्व तिसट्ठि. महापुराण की रचना हो चुकी थी, किन्तु उक्त चारों रचनाओं में उक्त तिसट्ठि. महापुराणु के साथ-साथ रइधू के पासणाहचरिउ, मेहेसरचरिउ, सिरिवालचरिउ, बलहद्दचरिउ, सुदंसणचरिउ, धण्णकुमारचरिउ, जसहरचरिउ, वित्तसारु, जिमंधरचरिउ, कोमुइकहपबंधु, सिद्धंतत्थसारु, पुण्णासवकहा, सोलहकारणभावणा नामक तेरह ग्रन्थों के भी उल्लेख हैं। इन उल्लेखों से ज्ञात होता है कि तिसट्ठि. महापुराण की रचना पूर्वोक्त चार रचनाओं से पूर्व तथा उनमें उल्लिखित तेरह रचनाओं में से आगे पीछे कभी हुई होगी।

**पूर्ववर्त्ती साहित्यकार** :— रइधू ने अपने पूर्ववर्त्ती दो कवियों के नामोल्लेख बड़े ही आदरपूर्वक किए हैं– आचार्य जिनसेन एवं महाकवि कव्वपिसल्ल। कव्वपिसल्ल अपभ्रंश-महाकवि पुष्पदंत ही हैं, जिनकी 'अभिमानमेरु' एवं 'काव्यपिशाच' ये दो उपाधियाँ प्रसिद्ध रही है। ऐसा प्रतीत होता है कि रइधू के समय में पुष्पदन्त 'कव्वपिसल्ल' के



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नाम से ही अधिक प्रसिद्ध रहे होंगे। इन महाकवियों के महापुराण ही प्रस्तुत तिसट्ठि. महापुराणु के मूल-स्रोत रहे हैं, और दोनों महापुराणों की सचित्र पाण्डुलिपियाँ भी तैयार हो चुकी थीं, जो संभवतः रइधू-साहित्य के प्रतिलिपिकारों एवं चित्रकारों के सम्मुख रही होंगी।

**कवि का आत्म-परिचय** :— आत्म-परिचय देते हुए महाकवि रइधू ने तिसट्ठि. महापुराणु में अपने को संघवइ देवराज तथा उनकी भार्या चंदउरी का पौत्र, हरिसिंह एवं उनकी भार्या विजयश्री का पुत्र तथा उदयराज का पिता कहा है। कवि ने अपने भाई, भाभी तथा भतीजे के नामोल्लेख भी किए हैं। ज्येष्ठ भाई एवं भाभी का नाम क्रमशः वाहोड एवं नयनश्री था, जिनसे मोलिक्य नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। मंझले भाई एवं भाभी का नाम क्रमशः माहणसिंह एवं लवंगश्री था। इनकी संतान का उल्लेख नहीं है। इनमें से रइधू सबसे छोटे भाई थे। उनकी पत्नी का नाम लक्षणश्री था। कवि ने अपनी एक अन्य रचना मेहेसरचरिउ में अपनी पत्नी का नाम सावित्री कहा है। इन दो पृथक् नामों से यह कहना कठिन है कि उनकी दो पत्नियाँ थीं अथवा एक के मृत होने पर उन्होंने दूसरा विवाह किया था। कवि का यह पारिवारिक परिचय यद्यपि अत्यन्त संक्षिप्त एवं नामावली मात्र है, फिर भी, वह उसकी अन्य रचनाओं में उपलब्ध परिचय की अपेक्षा अधिक स्पष्ट एवं विस्तारपूर्वक है क्योंकि इसमें उसके परिवार का प्रायः पूर्ण विवरण मिल जाता है। किन्तु विश्वास है कि उसकी अद्यावधि अनुपलब्ध करंकंडचरिउ, कोमुइकहपबंधु, जिणदत्तचरिउ, भविसयत्तचरिउ एवं पज्जुण्णचरिउ नामक रचनाएँ जब उपलब्ध होंगी तब संभवतः कवि का परिचय अपनी अन्य कुछ विशेष विशेषताओं के साथ उपलब्ध हो सके। उसके लिए प्रतीक्षा आवश्यक है।

महाकवि रइधू के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर पर्याप्त चर्चाएँ अन्यत्र कर चुका हूँ, अतः यहाँ संक्षेप में इतना जान लेना ही पर्याप्त होगा कि उनका जीवन एवं रचनाकाल वि.सं. 1471 से वि.सं. 1536 के मध्य रहा है। इस काल में उन्होंने अनेक ग्रन्थों की रचनाएँ की जिनमें से 22 ग्रन्थ उपलब्ध हो चुके हैं तथा अन्य ग्रन्थ ज्ञात किन्तु अभी तक अप्राप्त हैं।

## प्रस्तुत ग्रन्थ का विषयक्रम :

| सन्धि | कडवक सं. | | विषयक्रम |
|---|---|---|---|
| 1. | 14 | — | महावल तणु विमोयणं ललियंग-देवोप्पत्ति। |
| 2. | 30 | — | वज्जणाभि चक्कवट्टि तित्थयर-गोत्त-बंध सव्वत्थ-सिद्धि गमणं। |
| 3. | 32 | — | रिसहेसर-णिक्कमण-कल्लाण वण्णणो णमि-विणमि वेयड्ढलंभो। |
| 4. | 31 | — | भरह-छक्खंड-पसाहणं। |
| 5. | 40 | — | भरह-मेहेसर-सुलोयणा भवंतर-वण्णणं। |
| 6. | 36 | — | सिरिवाल-कहंतर पयासण रिसहेसर-भरह-णिव्वाण-गमणं। |
| 7. | 17 | — | अजियणाह सगर चक्कवट्टि कहंतरं वण्णणं। |
| 8. | 31 | — | सुपासणाह-णिव्वाण गमणं। |
| 9. | 17 | — | ससिपह-जिण-णिव्वाण-गमणं। |
| 10. | 42 | — | अस्सगीव तिविट्ठ कहा। |
| 11. | 25 | — | संजयंत मंदरमर कहा। |
| 12. | 24 | — | सणंकुमार णिव्वाण गमणं। |
| 13. | 32 | — | संतिजिण भवंतरं। |
| 14. | 19 | — | अरणाह णिव्वाण गमणं। |
| 15. | 25 | — | मल्लिणाह पमुह चक्कि महापउम हरि कहंतरं। |



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

| | | | |
|---|---|---|---|
| 16. | 16 | – | मुणिसुव्वय हरिसेण णिव्वाण गमणं। |
| 17. | 37 | – | रावणवंस णिद्देस वण्णणं। |
| 18. | 35 | – | राम-लखण-वणवास हिंडणं देसकुलभूषण उपसग्ग विहंडणं। |
| 19. | 38 | – | राम विहीसण मेलाव वण्णणं। |
| 20. | 38 | – | रामविजय वण्णं सीयालाह अजुज्झा गमणं। |
| 21. | 22 | – | रामचंद केवलि वंदण तह विहीसण भवतंर पच्छाकरणं। |
| 22. | 17 | – | लक्खणपुत्त हणुवंत तव संगहणं। |
| 23. | 13 | – | दासरहि णिव्वाण गमणं लक्खण-रावण हरि-पडिहरि कहंतर वण्णणं। |
| 24. | 10 | – | णमि-णिव्वाण गमणं जयसेन कहंतर वण्णणं। |
| 25. | 23 | – | दस दसार भवावलि वण्णणं। |
| 26. | 24 | – | णारायण उप्पत्ति गोउल गमणं। |
| 27. | 25 | – | जायवकुल णिगगमण वारवइलंभो। |
| 28. | 31 | – | पज्जुण्ण-उप्पत्ति, विभग विज्जालाह दारवई आगमण वण्णणं। |
| 29. | 35 | – | पंडव लक्खाहर पवेस दोवइ पाणिगगहण णियदेसागमणं। |
| 30. | 22 | – | पंडव वइराड पवेष वण्णणं। |
| 31. | 38 | – | गंगेय अहिमण समरि पडणं तहेव सण्णासमरणं। |
| 32. | 44 | – | दुज्जोहण जरसिंध वहणं णारायण रज्जकरणं दोवइ चीर हरणु वण्णणं, पंडव दाहिण मदुरा गमणं। |
| 33. | 21 | – | अणिरुद्धचरिय वण्णणं णेमि जिण संखाई पूरणं। |
| 34. | 47 | – | वारवइ विणास हरि विपत्ति णेमिणाह णिव्वाण गमणं। |
| 35. | 25 | – | पासणाह णिव्वाण गमण। |
| 36. | 21 | – | णंदराय भवावलि, पुप्फोत्तर-विमाण गमणं। |
| 37. | 19 | – | वड्माण केवल णाणोप्पत्ति, गौतम गणधर भवांतरं। |
| 38. | 21 | – | सेणिय णिव भवावलि पिच्छाकारणं। |
| 39. | 47 | – | सेणिय णिव णिय अतीदागामि भवावलि वण्णणं। |
| 40. | 12 | – | वारिसेण कहंतरं। |
| 41. | 36 | – | धणयत्त कहंतरं। |
| 42. | 15 | – | सुदंसण जम्म विवाहोच्छव वण्णणं। |
| 43. | 14 | – | सेट्ठि तणुसग्ग वण्णणो। |
| 44. | 14 | – | सुदंसण सील पवाह वण्णणे। |
| 45. | 31 | – | सुदंसण णिव्वाण गमणं। |
| 46. | 26 | – | वड्ढमाण जिण णिव्वाण गमणं। |
| 47. | 28 | – | जंबूसामि वेरग्ग वण्णणो तहेव पाणिग्गहण करणो। |
| 48. | 28 | – | सोडस कहंतर वण्णणो विज्जुच्चरण पडिवोहणं। |
| 49. | 25 | – | सम्मण्णाण कहा। |
| 50. | 44 | – | छहकाल णिद्देस वण्णणं। |



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

**काव्य-तत्व : दुर्जन वर्णन** :— तिसट्ठि. महापुराणु एक धार्मिक आख्यानात्मक ग्रंथ होने पर भी वह काव्य गुणों से भरपूर है। प्रस्तुत ग्रंथ में कविने अलंकारों की यथास्थान योजना की है और प्रसंगवश सन्दर्भों को सरस बनाया है। वस्तु-वर्णनों की योजनाएँ भी सर्वत्र उपलब्ध होती है। अपभ्रंश काव्य-शैली के अनुसार ग्रन्थ का प्रारम्भ "सज्जन-दुर्जन" वर्णन से हुआ है। यों तो इस ग्रन्थ में अन्य ग्रन्थों के समान ही 'सज्जन-दुर्जन' का वर्णन अंकित है पर यहाँ कवि की भंगि-भणिति विशेष रूप से आकर्षक है। कवि कहता है..... "दुर्जन गण दूसरों के गुणों को सदोष बना देने में तन्द्रारहित तथा सज्जनों के यश को सहन करने में अमन्द होते हैं। प्रणाम करने पर वे खल उसी प्रकार क्रोधित हो जाते हैं जिस प्रकार दुग्धपान करके भी सर्प विष ही अर्पित करता है। यदि कोई नीम के वृक्ष को अमृत से सींचे तो भी क्या वह अपना कड़ुआपन छोड़ देगा?"

महाकवि रइधू ने उक्त दुर्जन-वर्णन में दुर्जन के स्वभाव का वर्णन करते हुए उसे काले साँप का उपमान दिया है। जिस प्रकार साँप दुग्धपान करने पर विष-वमन ही करता है, उसी प्रकार दुर्जन व्यक्ति भी दूसरों के श्रेष्ठ गुणों का श्रवण-मनन करने पर भी उनकी निन्दा ही प्रस्तुत करता है। रसपूर्ण काव्य सहृदय साहित्य-रसिकों का हृदयावर्जक होता है, पर वही दुर्जनों के लिए निन्दनीय बन जाता है। दुर्जन स्वभावतः ही दुष्ट होते हैं और वे दूसरों के दोषों को ही ग्रहण करते हैं, किन्तु इस पंचम काल के प्रभाव से दुर्जनों में पर-दोष ग्रहण करने की क्षमता और भी बढ़ गई है।

**वस्तु-वर्णन-योजना** :— वस्तु-वर्णन योजना का चमत्कार कवि के जम्बूद्वीप, भरतक्षेत्र एवं राजगृह-वर्णन में देखा जा सकता है। उत्प्रेक्षा, उपमा एवं अतिशयोक्ति अलंकारों के माध्यम से कवि ने देखिए, कितना सुंदर वर्णन किया है। वह कहता है– "इसी मध्यलोक में प्रधान, जम्बूवृक्ष के चिन्ह से समृद्ध, एक लाख योजन-प्रमाण सुप्रसिद्ध जम्बू नाम का द्वीप कहा गया है, जिसके मध्य में कनकाचल (सुमेरु पर्वत) संस्थित है, जो एक लाख योजन प्रमाण ऊँचा प्रतिष्ठित है। वह ऐसा प्रतीत होता है, मानों उस (जम्बू-द्वीप) ने ग्रह-मण्डल रूपी कंकण से युक्त अपने हाथ को ही निर्भीकतापूर्वक ऊँचा कर दिया हो अथवा मानों, तारारूपी मणि-समूहों से वह जड़ा हुआ हो, अथवा मानों मेघों के शब्दों के माध्यम से वह (पर्वत) गरज-गरज कर कह रहा हो कि 'कोई भी द्वीप मेरे सामने अब गर्व न करे। मेरी सम्पत्ति से कोई भी तुलना न करे। मेरी कसौटी पर कौन खरा उतर सकता है? जयश्री का पट्ट मेरे सिर पर बँधा है। यदि कोई द्वीप मुझसे भी महान् हो, तब वह सारभूत कनकाचल को अपने हाथ में धारण कर देखे।"

उसी भूधर (सुमेरु) के दक्षिण प्रदेश में भरत क्षेत्र है जहाँ के लोग प्रसन्नचित्त कहे जाते हैं। उस भरतक्षेत्र के मध्य में अनेक सुखों का निवास-स्थल, सकल लोगों के सुख का प्रकाशक, धन-कण से परिपूर्ण, देवों के निवास के समान अथवा पुण्य के प्रकाश के समान मगध नाम का एक देश है। बुद्धिमानों का समूह जिस प्रकार गोरस (दूध, दही-घी) से परिपूर्ण है, जिस प्रकार जम्बू स्थान (जम्बूद्वीप) सुशोभित है, जिस प्रकार श्रीकृष्ण के बन्धु हलायुध (बलभद्र या सीरपाणि) नाम से सुशोभित है, उसी प्रकार हाथों में हल धारण किए हुए वहाँ (मगध) के कृषक सुशोभित रहते हैं जिस प्रकार सुकवि का प्रबन्ध (काव्य) जनमानस के लिए सुखकारी होता है, उसी प्रकार यह देश भी जन-जन के लिए सुखकारी है। उसी मगध देश में शत्रुओं को भगा देने वाला एवं अचल राजगृह नाम का एक पट्टन है, जिसकी चारों दिशाओं में चार गोपुर हैं और जो गोकुलों से परिपूर्ण है। ऐसा प्रतीत होता है, मानों ब्रह्मा ने ही उस धवल (निर्दोष) पट्टन को स्थापित किया है।"

**रस-संयोजन** :— रस-योजना की दृष्टि से तिसट्ठि. महापुराणु में प्रसंगवश अन्य रसों के साथ श्रृंगार, वीर एवं शांत रसों का भी सुंदर परिपाक हुआहै। गणिकाओं के वर्णन-संदर्भ में कवि ने श्रृंगार, हाव-भाव एवं चेष्टाओं का सजीव वर्णन किया है। संयोग-श्रृंगार के (46/34) विभाव-अनुभाव भी उपस्थित किए गए हैं। हम उद्धरणों को प्रस्तुत कर निबंध का कलेवर बढ़ाना नहीं चाहते, पर इतना सत्य है कि कवि ने संयोग के पूर्व उत्पन्न होने वाले मानसिक द्वंद्वों का स्पष्ट अंकन किया है। मनोज्ञ नायिका के दर्शन के पश्चात् नायक के मन में उत्पन्न होने वाली विभिन्न



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मनोभावनाएँ, मनोवैज्ञानिक विश्लेषण की दृष्टि से जितनी महत्त्वपूर्ण है, उतनी ही सरसता की दृष्टि से भी।

श्रृंगार का पोषक वीर-रस है। प्रस्तुत तिसट्ठि. महापुराण में वीर-रस के अनेक संदर्भ अनेक स्थलों पर आये हैं। लव-कुश और राम-लक्ष्मण के युद्ध में कवि ने दर्पोक्तियों के साथ वीर-रस का नियोजन किया है। इस संदर्भ में वीर-रस की तुलना हम पृथ्वीराजरासो के संयोगिता-स्वयंवर से कर सकते हैं। दोनों ही संदर्भों में वीरों की भावनाओं का चित्रण प्रायः समान रूप से हुआ हैं जब लव, राम एवं लक्ष्मण को युद्ध भूमि में आवेष्टित कर लेते हैं, तब दोनों ओर से ही पराक्रमी वीर योद्धा अपनी-अपनी वीरता का प्रदर्शन करते हैं, पर लव ओर कुश की वीरता के समक्ष राम-लक्ष्मण को हतप्रभ हो जाना पड़ता है। परिस्थिति की विकटता को समझकर सीता उपस्थित होती हैं और वीरता का दृश्य तत्काल ही शांति में परिणत हो जाता है। इस नाटकीय पट-परिवर्तन के साथ वातावरण भी एक नया रूप ग्रहण कर लेता है और अग्नि-परीक्षा के बाद सीता चिरन्तन-शान्ति के हेतु वन की ओर चली जाती हैं। इस प्रकार कवि रइधू ने वीर-रस एवं शान्तरस की योजना एक ही संदर्भ में नियोजित कर काव्य-चमत्कार का सृजन किया है।

**भाषा** :— तिसट्ठि. महापुराणु का काव्य, इतिहास एवं संस्कृति की दृष्टि से जितना महत्त्व है, उससे कहीं अधिक महत्त्व उसकी भाषा की दृष्टि से है। प्रस्तुत ग्रन्थ में 15वीं-16वीं सदी के मध्य प्रयुक्त होने वाली जनपदीय भाषाओं के अनेक शब्द उपलब्ध होते हैं। उनमें से कुछ शब्द इस प्रकार हैं– दुव्व (बुंदेली-दूब) = दुर्वादल (1/10/1), ढुक्की (ढूँकना) = झाँकना (1/7/7), डोल्ल (बुंदेली-डोलना = हिलना अथवा व्यर्थ घूमना) = डोलना (1/10/1), लक्कड़ (बुंदेली एवं व्रज) = बड़ी मोटी लकड़ी (2/5/8), चंप्पिवि = चॉपकर (2/17/7), मट्टि (बुंदेली) = मिट्टी (2/26/2), ईंट (2/26/2/6)] लड्डू (2/26/4), पित्तलि = पीतल (46/9/8), फेंणी = फेनी नामक मिठाई (2/26/4), चइत (भोजपुरी) = चैत्रमास (3/10/10)] चोजु (बुंदेली) = आश्चर्य (3/14/4), कल्ल = काल (46/17/7), वक्खाण (बुंदेली–बखान) = व्याख्यान (1/14/6) आदि।

**आचार एवं सिद्धान्त** :— पौराणिक-काव्य में नायक के उदात्त चरित्र के साथ-साथ आचार, दर्शन एवं सिद्धांत तथा पौराणिक भूगोल एवं खगोल संबंधी मान्यताओं का रहना आवश्यक माना गया है। महाकवि रइधू ने प्रस्तुत तिसट्ठि महापुराणु में जैनागम का सार गागर में सागर की तरह भर दिया है। इसमें क्रमशः चौबीसों तीर्थंकरों की देशना वर्णित है। उसमें प्रसंगानुकूल गृहस्थाचार एवं मुनि-आचार का विस्तृत वर्णन किया गया है। प्रसंगवश ही भोगभूमि, कर्मभूमि, स्वर्ग-नरक, द्वीप, समुद्र, भरतैरावत आदि क्षेत्र, हिमवन्, महाहिमवन् आदि षट्कुलाचल, गंगा, सिन्धु आदि नदियों का विभाजन एवं पद्म, महापद्म आदि सरोवरों का सुंदर निरूपण किया गया है। भौगोलिक तथ्यों के निरूपण की यह पद्धति जिनसेन कृत महापुराण के समान ही है।

सिद्धांत संबंधी वर्णनों में रत्नत्रय, पंचाणुव्रत, तीन गुणव्रत, चार शिक्षाव्रत, अष्टमूलगुण, षट्द्रव्य एवं मुनि आचार में पाँच समिति, तीन गुप्ति, दस धर्म, द्वादशानुप्रेक्षाएँ, बाइस परीषह एवं षडावश्यकों आदि का बड़ी ही मार्मिक-शैली में प्रतिपादन किया गया है। इन वर्णनों की दृष्टि से इस ग्रन्थ को ज्ञानकोष भी कहा जा सकता है।

इस प्रकार संक्षेप में तिसट्ठि. महापुराणु का सामान्य परिचय प्रस्तुत किया गया है। वस्तुतः यह ग्रन्थ मध्यकालीन साहित्य की एक महत्त्वपूर्ण कृति है। अपभ्रंश-भाषा, इतिहास एवं संस्कृति तथा भाषा-विज्ञान की दृष्टि से तो यह महत्त्वपूर्ण है ही, कवि के संकेतानुसार यदि इसकी सचित्र प्रतिलिपि भी उपलब्ध हो गई, तो वह मध्यकालीन चित्रकला की दृष्टि से भी अनुपम सिद्ध होगी।

विश्व के प्राच्य शास्त्र-भण्डारों में ज्ञात एवं उपलब्ध एक मात्र यह पाण्डुलिपि दुर्भाग्य से अद्यावधि अप्रकाशित ही है। अतः इसके तत्काल प्रकाशन की व्यवस्था यदि नहीं की गई तो मौसमी दुष्प्रभावों या कीटों द्वारा काल-कलवित हो जाने की संभावना है।

---



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

# शब्दानुक्रमणिका

(ध्यातव्य – प्रस्तुत शब्दानुक्रमणिका में प्रयुक्त दो प्रकार के अंकों में से प्रथम अंक कड़वक संख्या का तथा दूसरा अंक उसकी पंक्ति संख्या का है।)


**अइरावइ** – ऐरावत हाथी - 7/13
**अइरें** – तत्काल - 7/6
**अउव्व** – अपूर्व - 40/4
**अंगरुह** – पुत्र - 41/1
**अंतु** – अन्तर्मन - 54/5
**अंथमणु** – सूर्यास्त काल - 39/2
**अंबा** – माता - 45/4
**अंसुजल्लोलिया** – आँसुओं से डबडबाये नेत्र - 43/4
**अंग्गुलंगल** – तीक्ष्ण धातु-फाल लगा हुआ हल– - 33/6
**अखुहिय** – निर्भीकता पूर्वक - 5/10
**अचग्गलु** – आश्चर्य पूर्वक - 27/2
**अच्छर** – अप्सरा - 30/8
**अच्छाणि** – आस्थान, बैठक - 9/6
**अच्छिण्णउ** – अखण्ड, अछिण्ण -17/13
**अडवि** – घना जंगल -47/14
**अणसिद्ध** – बिना सिद्ध किया हुआ - 53/4
**अणिमिस** – पलक झपकते ही - 25/4
**अणुणइ** – अनुनय-विनय -31/11
**अणुमण्णेप्पिणु** – मानकर, स्वीकार कर -16/13
**अणेक्क** – अनेक - 3/2
**अण्णहिदिणि** – अन्य किसी एक दिन -16/13
**अतुलिय** – अतुलित, अतुल्य - 45/3
**अप्पुणु** – अपना, स्वयं - 19/9
**अबुद्ध** – मूर्ख -31/10
**अभग्गउ** – अगणित, अखण्ड - 31/1
**अम्हहं** – हमारा - 4/11
**अम्मि** – माता - 24/1
**अरुहयास** – अर्हद्दास (जंबू कुमार का पिता) - 1/3
**अलज्जि** – निर्लज्ज -51/13
**अल्लहि** – दे दीजिये - 22/9
**अवगण्णिउ** – उपेक्षा करना, महत्त्व न देना - 35/9
**अवच्छ** – अवस्था - 49/6
**अवठं** – अवस्थित, अवरुद्ध -23/13
**अवरुंडिवि** – गले से गले लगकर - 45/4
**अवसणि** – अन्त में - 47/1
**अवाहहु** – आजानबाहु - 2/1
**अविलंबा** – जल्दी, तत्काल - 45/4
**असज्झ** – असाध्य, निन्द्य - 32/9
**अहयरु** – अधिकतर - 34/2
**अहि** – सर्प - 39/3
**अहिजीहा** – सर्प की जीभ - 23/6
**आउ** – आयु - 5/4
**आणत्त** – आज्ञा देना - 12/4
**आणावहि** – ले आओ - 54/9
**आभिट्टइ** – जा भिड़ा - 14/6
**आरण्णि** – अरण्य वन - 39/2
**आरोप्पिय** – आरोपित कर - 7/16
**आलत्तिया** – आलाप, वार्त्तालाप - 30/2
**आलोयणि-विज्जा** – अवलोकिनी-विद्या - 6/6
**आवय** – आपत्ति काल - 15/4
**आसणु** – आसन - 9/4
**आसाऊरिय** – आशा पूर्ण होना - 16/7
**आसासिय** – आश्वस्त -44/10
**आहण्णमाणु** – आहत करते हुए -49/10
**आहासइ** – बोला - 6/4
**ओढिवि** – ओढ़कर -52/16
**ओसु-जलु** – ओस कण - 37/6
**ओहुल्लिय** – मुरझा गया - 47/6
**इंदुगइ** – गगनगति-विद्याधर - 13/5
**इमय** – इस प्रकार, यह -29/16
**ईसावस** – ईर्ष्यावश - 8/8
**उक्कंठिय** – उत्कण्ठित - 5/2
**उग्घाडिय** – उघाड़े - 45/2




Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

**उच्छलिउ** – उछली - 50/6
**उच्छाविवि** – उठवाकर -14/11
**उण्हाल** – ग्रीष्मकाल -52/10
**उप्पायउ** – उत्पन्न -17/17
**उप्फलेवि** – उछल-कूदकर - 17/3
**उववणु** – उपवन - 5/5
**उवहिचंदु** – सागरचन्द्र सेठ -20/10
**उवहिदत्तु** – उदधिदत, सागरदत्त सेठ - 3/4
**उव्वसु** – उदास - 43/9
**उहय** – दोनों -40/18
**उहयभट्ट** – दोनों ओर से भृष्ट - 50/8
**उहूँ** – उसी प्रकार - 50/4
**ए** – यह - 54/6
**एक्कु** – एक - 47/6
**एयउ** – यह - 3/12
**एरिसु** – ऐसा - 2/5
**कइ** – कपि, बन्दर - 35/5
**कइलास** – कैलास पर्वत - 35/1
**कंडूयण** – खुजलाना - 47/6
**कंक्खो** – आकांक्षा - 7/4
**कज्ज** – कार्य - 5/2, 6/7, 11/5
**कडुवा** – कटुता - 5/14
**कणयमाल** – कनकमाला (कुबेरदत्त सेठ की पत्नी) - 3/6
**कणयसिरी** – कनकश्री (सेठ कुबेरदत्त की पुत्री) - 3/7
**कण्णा** – कन्या - 3/5
**कद्दम** – कीचड़ -36/16
**कमलणिवासु** – कमल पुष्पों से युक्त - 1/6
**कमलब्भंतरि** – कमल पुष्प के भीतर - 39/2
**कमलसिरि** – कमलश्री (जम्बू की पत्नी) - 30/2
**कम्माइं** – कर्मों को - 2/3
**कयायरु** – कृतकार्य - 6/4
**करंतउ** – कर रहा था - 5/8
**कर** – उब्भिवि - दोनों हाथ जोड़कर - 50/1
**करिसुंडोवम** – हाथी की सूँड के समान - 9/12
**कवड** – कपट - 49/1
**कवाड** – कपाट - 45/1
**कवाडिय** – लकड़हारा - 37/6
**कव्वाडिय** – लकडहारा - 38/2
**काणणु** – कानन, जंगल - 12/2, 35/8
**कायकुण्ड** – शरीर रूपी कुण्ड -29/15
**कालसप्पु** – कालसर्प-नेवला - 39/5
**किंकर करिवि** – कर्त्तव्य कार्य करके - 19/8
**कील** – क्रीड़ा - 5/7
**कुंडल** – कुडल - 35/4
**कुंडू** – खुजली, खाज - 47/6
**कुंदु** – खाज - 47/6
**कुंभच्छलि** – कुंभस्थल - 5/13
**कुच्छर** – दुर्भाग्य - 45/6
**कुडी** – कुटी, घोंसला -39/10
**कुढिलग्गउ** – कुटिलगति -36/13
**कुबेरदत्तु** – कुबेरदत्त - 3/6
**कुसुममालु** – विद्याचर-चोर -42/12
**केरलउरु** – केरलपुर - 6/11, 8/5
**कोओहलु** – कौतुहल - 50/1
**खइ** – क्षय, नाश - 53/4
**खंचहि** – खींचना - 8/15
**खंधारु** – स्कन्धावार - 8/13,15
**खंधि** – कन्धा - 5/15
**खडहडियउ (ध्वन्यात्मक)** – खड़खड़ाना - 14/8
**खणि** – क्षण - 42/6
**खणिउ** – खोदा - 38/4
**खमु** – सक्षम, समर्थ - 32/8
**खयरे** – खेचर - 6/10
**खरवयणहि** – कर्कश वचनों से - 7/4
**खरहु** – खारा (पानी) - 43/3
**खल** – दुष्ट - 5/1
**खारिउ** – डाँटा, फटकारा - 17/4
**खेड** – खेत - 31/2
**खेडु** – खेद - 31/4
**खोहण** – क्षोभन-विद्या - 44/5
**खोहू** – क्षोभ - 13/6



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गंजोल्लिउ – खिसकने लगा, सरकने लगा -40/14
गंपि – गई, जाकर -44/14
गग्गिर – गद्गद् हो जाना - 43/5
गड्डिय – गाड़ी में - 38/8
गणेस – गणेश, गणधर (गौतम) -24/12
गयउलु – गज-समूह - 12/2
गयणगई – गगनगति विद्याधर - 12/9
गयभय – भय-विहीन - 47/4
गव – गय, गज - 8/9
गासु – ग्रास (कौर) -50/10
गाहु – कलह - 10/6
गिज्जइ – गाये जा रहे थे - 5/3
गिरिवरु – पर्वत - 6/4
गुज्झु – गुह्य, गोपनीय रहस्य - 25/5
गुह – गुफा - 39/8
गोठ – गायों के रहने का स्थान -53/12
घडइ – रचा ले - 27/1
घय – घृत, घी - 5/5
घल्लिवि – डालकर, फँसाकर - 37/13, 53/5
घिउ – घी - 5/5
चइत – चैत्र-मास - 2/10
चइवि – छोड़कर - 2/8
चंद – चन्द्रमा - 7/4
चंदगइ – मृगांक राजा - 11/6
चक्खं – चखा, स्वाद लेना - 47/1
णच्चर – टिमटिमाना - 23/6
चडणु – चढ़कर -43/11
चडफडंतु – फड़फड़ाना -53/12
चड्डणोत्तरणु – आगे वाली छत से चढ़कर पीछे की ओर से आंगन में उतर जाना– - 43/3
चंरतई – विचरण करना -39/12
चलण – चरण (र के स्थान पर ल का प्रयोग पैशाची प्राकृत का है।) - 21/11, 53/19
चवल – चपल - 23/6
चाउरंगु-वलु – चतुरंगिणी सेना - 8/2, 51/4
चयारि – चार (पुत्र–वधुएँ) - 59/9
चिक्कार – चीत्कार - 5/13
चुक्क – चूकना - 47/7, 50/3
चुक्कुउ – उचक्का - 16/8
चुडु – चुलबुली (महारानी) -53/11
चुया – चयकर, भरकर– - 20/8
चूरिय – चूर-चूर कर देना - 16/7
चोइय – घुमाना - 17/2
च्छण्णवणु – वन में छिप-छिपकर - 36/6
छप्पय – षट्पद, भ्रमर -44/12
छिज्ज – छीजना - 44/1
छुरिय – छुरि - 12/8
छूढु – छूटते ही -48/10
जंबु – जम्बू कुमार - 48/7
जंबूकुमार – जम्बू कुमार - 17/8, 19/13
जंबूतरु – जम्बू वृक्ष - 1/5
जंबूसामि – जम्बू स्वामी - 2/13, 5/10, 6/1, 5/15, 16/1, 42/3, 43/5
जण – जन, मनुष्य - 5/8
जणावहि – बतला दो - 9/5
जमणयर – यमराज का नगर (मृत्युलोक) -16/14
जयसरु – जय-जय करते हुए - 16/5
जलयर – जलचर-जीव - 50/2
जलहरु – मेघ - 5/8
जामहि – जिस समय, जब - 5/4
जारु – जार (धूर्त) -50/12
जिणमइ – जिनमती (जम्बू की माता) - 1/3, 5/6, 53/15
जिणहरि – जिनमन्दिर - 1/8
जिणिवि – जीतकर -54/12
जिप्पइ – जीतता है - 16/2
जूहवए – यूथपति (सरदार) - 36/2
जोडण – संयोगिनी विद्या - 34/6
जोत्तिय – जोते गए - 8/4
झत्ति – शीघ्र, जल्दी - 6/7
टालिज्जहि – टालना, हटाना -53/10



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ठविउ – स्थापित - 5/1
ठेल्लइ – ढेल दिया -31/11
डहेसइ – दहन करना - 2/3
णं तो – नहीं तो - 11/8
णंदिणि – पुत्री - 3/11
णक्खत्त – नक्षत्र - 2/11
णच्चइ – नृत्य करना - 17/7
णट्ठइ – नष्ट होना - 5/9
णम्मयसिरि – नर्मदा नदी - 34/7
णयणंजणु – नयनांजन विद्या - 34/5
णरत्तणु – नरभव -51/19
णवल्लउ – नवोढ़ा -33/14
णहगह – गगनगति विद्याधर - 16/2
णायसिरि – नागश्री (जम्बू की पत्नी) - 37/1
णिक्कारणि – निष्कारण -16/11
णिज्झयमणु – बुझे बुझे मन से -10/11
णिद्धमू – निर्धूम - 1/5
णियंतउ – नियन्त्रित - 6/11
णियडि – निकट - 6/8
णियमंदिरि – अपने घर - 2/7
णिरारिउ – निश्चय ही - 16/8
णिवहरि – राजसिंहासन -18/11
णिसिय – तेज धार वाला - 33/6
णिहाण – निधान, सम्पत्ति - 38/7
णिहेलणि – आतुर व्याकुल - 22/2
णेय पयत्तें – स्नेह पूर्वक - 22/1
तउ – तप -20/10
तंबोलु – पान -24/11
तक्कर – तस्कर, चोर - 42/11, 47/14
तज्जइ – तर्जना, आँखे तरेरना - 9/13
तट्ठउ – त्रस्त - 5/9
तडयडइ – तडक्कइ (ध्वन्यात्मक) तडतडाना- 39/6
तडिमाली – विद्युन्माली - 21/7
तणुरुहु – पुत्र -45/14
तरट्टि – तड़क भड़क वाली - 31/6
तरेसइ – पार करना - 2/5
तलवर – कोटवाल - 49/2
तलारहु – तलवर, कोतवाल -48/16
तामह – उस समय - 5/4
ताह – ताई, माता -45/10
तिच्छु – तीर्थ - 38/1
तिणसमाणु – तृण के समान - 5/12
तिप्पई – तृप्त - 47/7
तिरयंचु – तिर्यंच प्राणी (कुत्ता) -50/13
तुम्हहं – तुम्हारा - 4/11
तूरइ – वाद्य - 25/7
तूरह-पुरु – तूरों के निनाद - 5/3
थंभण – स्तम्भन विद्या - 44/5
थिउ – स्थित - 5/14
थेरु – वृद्ध - 48/3
दइयंवरिय-दिक्खा – दिगम्बरी-दीक्षा - 22/9
दच्छउ – दक्ष, निपुण - 46/6
दट्ठाहर – ओठों को डसना, काटना - 12/5
दट्ठोट्ठें – दाँत एवं ओठ - 5/11
दिक्खालमि – दिखला दूँगा (चुनौति) -16/14
दिढ – दृढ़ -44/11
दिणेक्कु – एक दिन - 45/7
दिव्वविमाणु – दिव्य-विमान - 6/2
दीह – दीर्घ -46/12
दुण्णिरीक्ख – दुर्निरीक्ष्य - 9/10
दुण्णिवि – दोनों ही - 17/1
दुद्धरु – दुर्धर - 5/8
दुरवर – दुर्निवार, कठोर - 35/6
दुलहउ – दुर्लभ -52/18
दुव्वयण – दुर्वचन - 12/5
दूउ – दूत - 9/5
दूवत्तणु – दूत का कार्य - 9/13
दूव-मिसें – दूत के बहाने -17/11
देवलह – देवालय में - 49/7
देवाविउ – दिलवाया - 9/14
दोहिं – दोनों - 17/2
धणदत्तु – धणदत्त - 3/10



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धणहडु – धनदत्त - 31/2
धिट्ठ – धृष्ट - 16/6
धुउ – ध्रुव, अटल - 2/4
पइत्ती – प्रतिज्ञा करना -16/12
पइमि – प्रतिज्ञा करना -16/12
पइसी – प्रतिज्ञा करना -16/12
पइसिवि – प्रवेश कर - 9/6, 14/5
पउत्तहु – बोला - 1/17
पउमसिरि – पद्मश्री (जम्बू–पत्नी) - 3/15
पउर – पौरजन -17/15
पउर – प्रवर - 21/1
पउरहि – पौरजनों से - 7/5
पउरु – प्रवर, श्रेष्ठ - 21/1
पंचऊ – मार दूँगा -10/15
पंचत्त – मृत्यु - 29/3
पंचमिहि – पंचमी के दिन - 2/10
पंचमु गणहर – सुधर्म स्वामी भ. महावीर के पाँचवें गणधर -19/14
पंचाणण – सिंह - 11/9
पंडरु – पीला - 2/9
पक्खिक्किल्लु – पक्ष में अकेला - 14/1
पच्चारिउ – ललकारा - 16/6
पच्चूसिहि – प्रभात - 2/11
पडिबिंब – प्रतिबिम्ब -36/15
पयडं – प्रचण्ड -45/12
पयरणु – प्रारम्भिक तैयारी - 5/1
पयरणु – फेरा, परिक्रमा -28/11
पयासु – प्रकाश - 23/7
परएसी – प्रदेशी, परदेशी - 45/6
परिमिउ – परिमित, परिभ्रमण - 3/2
परियाणिय – परिचय जाना - 19/6
परोहणु वाहइ – मालवाहक जहाज - 5/11
पलयहुँ – प्रलयकालीन, पल भर में - 8/5
पल्लंक – पलंग - 29/1
पल्लाणिय – पलानों से युक्त - 8/4
पव्वज्जा – प्रवृज्या, दीक्षा - 23/8
पसुया – प्रसूता, जन्म लिया - 36/5
पह-दित्तउ – प्रभा से दीप्तिमान - 1/5
पहिजंतु – मार्ग में जाते समय -11/11
पाखंड – छल-कपटी, मायावी - 48/7
पामरि – बेचारा, डरपोक - 32/7
पारक्कूउदलु – शत्रु-सेना - 13/6
पारद्धउ – शिकारी - 52/6
पावज्जिहिं – प्रवृज्या में - 26/8
पासि – पास में - 15/5
पाहणु – पाषाण, पत्थर - 41/2
पीयउ – पी लिया - 47/3
पुच्छुमकरणउ – पूँछ से लेकर कान तक - 41/9
पुरीस – पाखाना - 55/1
पेल्लिय – पेलकर, ठेलकर - 45/1
पेसणयारहि – सुरक्षा कर्मियों के साथ - 3/2
पोढत्तणु – प्रौढ़ावस्था में - 36/6
फणामणि – सर्पमणि - 7/11
फणि – फण - 7/11
फुट्टउ – फूट गया - 52/7
फेड – नष्ट करना - 6/14
बइरि – बैरी - 20/5
बंधिवि – बन्धक-बनाकर - 16/9
बज्जयंत-राउ – बज्रदन्त-राजा - 20/9
बहुगुण – अनेक गुणों वाला -14/11
बाहुडि-बाहुडि – भुजा से भुजा लड़ाकर -16/10
बिरइ – करके - 17/3
बूउ – बूड गया, डूब गया -34/13
भओ – भव, जन्मान्तर -21/11
भंगावत्तु – मान-मर्दन करना - 7/3
भंड – सामग्री - 43/8
भग्ग – भग्न - 17/9
भज्जा – भाग गई - 48/4
भड – भट - 30/3
भणु – कहो - 43/2
भमाडि – फहरा दिया - 16/2
भम्मुट्ठि – भगेडू - 8/4,7



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

**भरु** – भार, बोझ -52/10
**भिडिउ** – भिड जाना - 13/1
**भिण्णु** – छिन्न-भिन्न करना, विदीर्ण करना - 15/2
**भित्ति** – दीवाल - 42/3
**भिल्ल** – भील - 52/1
**भुयंगु** – भुजंग, सर्प -40/14
**भुयादंडहि** – भुजा-दंड - 7/8
**भूगोयरि** – भूगोचर - 7/11
**मडफ्फडु** – मदोन्मत्तता - 17/9
**मउड** – मुकुट - 35/4
**मंदिरि** – घर, आवास - 2/7
**मगह** – मगध-राज्य - 7/3
**मगहेसर** – मगधेश्वर (राजा) - 34/7
**मगहेसें** – मगधेश्वर -45/11
**मढ़** – मठ - 49/1
**मढ़ि** – मढिया, मठ -48/14
**मणरुह** – कामदेव -45/14
**मणि** – मन में, मानों - 31/9
**मणिचूल** – रयणचूल-विद्याधर - 10/1
**मणुवलोय** – मनुष्यलोक - 2/7
**मयणाहु** – कामदेव - 26/
**मलयगिरि** – मलयगिरि पर्वत - 6/7
**मलयलया** – मलयलता (मयंक राजा की पत्नी) - 6/9
**महण्णवि** – महार्णव, महासागर -12/13
**महपउमराउ** – महापद्म राजा - 20/9
**महल्लउ** – महान् श्रेष्ठ - 2/6
**मागहदेस** – मगध-देश - 1/1
**माम** – मामा - 14/5, 17/13
**मियंकु** – मृगांक राजा - 6/8, 7/8, 9/7, 19/4
**मीण** – मछली - 50/7
**मुज्झ** – मोह करना - 47/2
**मुवंतु** – मरना - 5/13
**मुवउ** – मरा - 35/7
**मोइय** – प्रमुदित - 45/2
**मोडेप्पिणु** – मोड़कर - 17/5
**मोहण** – सम्मोहिनी-विद्या - 44/5

**रइहर** – रतिगृह - 42/3
**रच्छा** – गली - 31/2
**रत्ताणणु** – ललमुहा (बन्दर) - 35/8, 52/10
**रयणचूल** – रत्नचूल विद्याधर - 8/7, 9/6, 10/1, 12/17
**रयणजटी** – रत्नचूल विद्याधर - 8/6
**रयणणिवासउ** – रत्नों का निवास, रत्नत्रय - 2/4
**रयणायरु** – रत्नाकर (समुद्र) - 1/6
**रसिल्लउ** – रसिक - 2/6
**रहुवइ** – रघुपति (राम) - 11/5
**रायग्गिहि** – राजगृही नगर - 1/1
**रायहिं** – राग भाव -41/18
**रावण** – रावण -11/15
**रावल** – राजा - 9/3
**रित्तउ** – रीता कर, खाली कर -30/12
**रुट्ठ** – रुष्ट - 5/11
**रुसं-पत्तउ** – रूठने लगा - 9/3
**रुवसिरि** – रूपश्री (जम्बू की चौथी पत्नी) - 39/5
**रूवलच्छी** – रूपलक्ष्मी (सेठ धनदत्त की पुत्री) - 3/11
**रे चुक्कउ** – अरे उचक्के (रइधूकालीन गाली) - 16/8
**लंकराउ** – लंका का राजा - 10/7
**लंपडु** – लम्पट, कामान्ध - 32/4
**लंवियकरु** – आजानबाहु - 20/6
**लक्खिउ** – परख लेना - 7/1
**लग्ग** – लगकर - 42/3
**लावण्ण** – लावण्य - 36/3
**लुंटिव्वा** – लूट कर -37/12
**लुंविउ** – लोंच लिया -47/14
**लुणमि** – लोंचना, उखाड़ना - 4/19
**लोयवालु** – वाराणसी का राजा लोकपाल -53/16
**वइराउ** – वैराग्य - 27/4
**वइरि** – बैरी -12/12
**वइवस** – यमराज - 5/8
**वइसवणु** – वैश्रवण (वणिक् सेठ) - 3/8
**वइवसुव्व** – यमराज के समान - 5/8
**वइसइ** – बैठना -19/13
**वओ** – व्रत -50/14



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वंभोत्तर-सग्गि – ब्रह्मोत्तर स्वर्ग -20/11
वच्चंतइ – जाते हुए - 48/6
वच्छर – वर्ष - 45/6
वज्जयंत-राउ – बज्रदन्त-राजा - 20/9
वज्जहया – वज्राहत - 25/6
वट्टमाणंकिया – वर्द्धमान नाम से प्रसिद्ध - 20/5
वणिणाह – वणिक्नाथ - 2/14
वणीसहु – वणिक्श्रेष्ठ - 1/2
वद्धावण – बधाई सम्बन्धी - 2/12
वयण-विसेस – विशेष वचनामृत - 44/3
वरंग – सुन्दर अंग-प्रत्यंग वाली - 30/3
वल्लि – लता - 47/1
ववमि – बोऊँगा - 33/9
वहिणी – बहिन - 45/8
वहिणी-पुत्त – भानजा - 45/8
वाणारसि – वाराणसी नगरी -53/16
वाणु – कामावस्था को शान्त करने वाला वाण अर्थात् सुन्दर युवक - 54/5
वानर – बन्दर - 35/2
वायस – कौआ - 34/6
वारंतउ – रोके जाने पर - 35/6
वारंतरि – रोकना - 45/3
वारि – द्वार - 9/3
वावार – व्यापार - 43/7
वासुपुज्ज – वासुपूज्य (चैत्यालय) - 59/9
वाहुडिया – वापिस लौटाना - 16/4
विउलाइरि – विपुलाचल शिखर -58/10
विंझायल – विन्ध्याचल पर्वत - 8/6
विग्गह – शरीर, युद्ध - 9/12
विज्जाचरु – विद्याचर-चोर - 42/2
विडु – धूर्त - 48/6, 49/1
विणयमई – विनयमती (धनदत्त सेठ की पत्नी) - 3/10
विणयमाल – विनयमाल (सेठी वैश्रवण की पत्नी) - 3/8
विणयसिरि – विनयश्री - 3/7, 37/1
विण्णाणें – विज्ञान - 5/15
विद्धंसिय – विध्वंस - 12/2
विब्भारण – तोड़-फोड़, नष्ट करना - 44/9
वियक्ख – विकल्पक ज्ञान - 46/1
वियच्चरु – विद्याचर-चोर - 8/11
विलासमई – विलासवति (राजा मृगांक की पुत्री एवं राजा श्रेणिक की रानी) - 6/4
विवच्छ – वस्त्रविहीन -49/16
विसइ – विषय अर्थात् देश में - 20/5
विसूरइ – घूर-घूर कर देखना -43/13
विहडावण – विघटन करा देने वाली विद्या - 44/6
विहाणि – भ्याने, आगामी कल -32/13
वीडइं – पान का वीडा - 8/4
वीर जिणेसहु – वीर जिनेन्द्र -19/14
वुत्तउ – कहा गया है - 2/14
वेणाणई – वेण्णा-नदी - 8/6
वेयड्ढ – वैताढ्य-पर्वत - 6/4
सइरियण – स्वैरिणी, अपनी इच्छानुसार कर्त्तव्याकर्त्तव्य के विचार किये बिना ही घूमने वाली महिला -48/17
संट्ठिय – बैठना, संस्थित - 5/2
संठाणें – स्थान - 5/5
संपत्ता – पहुँचा - 15/5
सकंत – प्रियतम के साथ -48/14
सग्ग – स्वर्ग - 2/8
सग्गि – स्वर्ग में - 20/8
सज्जिउ – तैयार किया - 26/3
सण्ण – इशारा - 30/1
सत्तम – सातवें दिन - 2/8
समइ – समय - 5/6
समच्छु – समस्त - 32/1
सयरें – शीघ्र -21/13
सयवत्त – शतदल कमल पुष्प - 39/3
सरजलु – सरोवर का जल -47/15
सरढउ – छछूंदर - 40/1
सरवरु – सरोवर - 1/6
सरवरेण – तालाब से - 2/4



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

**सरिउ** – घर की ओर खिसक गया - 55/8
**सरु** – स्वर - 16/2
**सवियट्ट** – सविकल्पक-ज्ञान - 46/1
**सविलक्ख** – व्यंग्य, कटाक्ष भरी हँसी - 30/1
**ससिवत्तहिं** – चन्द्रमुखी - 2/11
**सहयर** – सहचर - 5/6
**सहलें** – सफल - 2/2
**सहहिं** – कहा - 6/1
**सही** – सखी - 30/3
**सहोयर** – सहोदर -14/10
**साडणि** – निवारण करने वाली -43/16
**सायरेण** – सागर से - 2/5
**सालस** – आलस्य सहित - 2/9
**सालि** – धान्य का खेत - 1/6
**सालि** – धान - 2/4
**सावत्ती** – श्रावस्ती नगर - 31/1
**सावय-वय** – श्रावक व्रत - 3/4
**साहिउ** – कहा, सुनाया - 19/3
**साहू** – व्यापारी -47/12
**सिउ** – शिव, मोक्ष - 35/6
**सियाल** – श्रृगाल, सियार - 41/1, 52/4
**सिर-धुणिउ** – सिर को धुना - 35/9
**सिरिवासउ** – लक्ष्मी का निवास - 2/4
**सिवकुमारु** – जम्बू के पूर्व-भव का स्वामी -20/10
**सिविणय** – स्वप्न - 2/13
**सुउ** – पुत्र - 2/12
**सुण्ह** – नव विवाहिता -43/10
**सुत्त** – संक्षेप में - 30/6
**सुत्ति** – सूतना, सोना - 33/4
**सुत्तु** – सो गया -47/15
**सुथिर दिट्ठि** – सुस्थिर दृष्टि- 9/11
**सुपइज्जा** – दृढ़ प्रतिज्ञ -44/13
**सुमणोज्जा** – सुमनोज्ञ -44/13
**सुरवइ** – सुरपति - 9/10
**सुरवइ-करि-कर** – ऐरावत हाथी की सूँड - 14/1
**सुवस्सवास** – लड़के का निवास (रति-कक्ष) - 42/6
**सेट्ठि** – सेठ - 1/8
**सेट्ठिणि** – सेठानी - 2/5
**सेणिउ** – श्रेणिक राजा - 46/7
**सेणिएण** – श्रेणिक ने - 42/2
**सेणियराय** – श्रेणिक राजा - 10/5
**सेणें** – श्वान ने, कुत्ते ने - 49/8
**सेय** – श्वेद, पसीना -52/11
**सोवमि** – सो जाऊँगा -48/14
**सोहग्गें** – स्वभाव से - 31/6
**हंसदीव** – हंसद्वीप, श्रीलंका - 6/10
**हक्कउ** – हाँकना -45/10
**हच्छें** – हाथ - 9/4
**हरिणुव** – हरिण के समान - 17/3
**हलि** – अरे (अंग्रेजी का हेलो), संबोधन -30/12
**हलि** – अभी हाल में -30/12
**हल्लिया** – सम्बोधन -37/11
**हारहि** – भार - 2/9
**हुया** – हुआ - 20/8
**हुयासु** – अग्नि - 1/5
**हुवउ** – हुआ, होना - 2/10
**हुववहेण** – निर्धूम अग्नि से - 2/3
**हेरिएण** – हेरकर, देखकर -19/15
**होसइ** – होगा - 2/5

पुस्तक सं. 4877



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi